फिलेदिलफियायी कलीसियायी काल

जैफरसनविले इन्डियाना, यू. एस. ए.
१० दिसम्बर, १९६०

1 ...भाई गया, और मेरे लिए एक बहुत बड़ी गरमा-गरम चैरी पाई लेकर आया। मैं आपको बताता हूँ, कि यह किसी बात की ओर संकेत देती है। यह है....भाई नेविल, यह किसके विषय में संकेत देती है? वह भाई यहाँ है! समझे? देखिए, ऐसा लगता है, कि चैरी पाई मुझे बहुत प्रिय है। यह सचमुच में अच्छी होती है। ठीक जैसाकि मैं उस बात के विषय में कहता हूँ जब मैं चैरी पाई खाता हूँ; अब कभी -कभार आपके दांत उसके बीज से टकरा जाते हैं। अब देखिएं, मैं ऐसा नहीं करता हूँ.....मैं पाई को दूर नहीं फेंक देता हूँ, मैं तो बस बीज को ही दूर फेंक देता हूँ, और चैरी पाई खाता रहता हूँ। इसी प्रकार से ही मैं आपसे चाहता हूँ, कि आप इन संदेशों के विषय में करें। जब आप आगे बढ़ते जाते हैं.....आप जब मेरे साथ साथ आगे बढ़ते जाते। हैं, और जब आप किसी ऐसी बात पर पहुँचते हैं —जिसे आप नहीं कर सकते हैं.....जिसे आप पचा नहीं सकते हैं, तो क्यों, ठीक है; आप सम्पूर्ण बात को ही न बाहर फेंके —आप बस उस भाग को...उस बीज को ही बाहर फेंकें , और बस उस चैरी पाई को खाते रहें। क्यों, यह तो इसी प्रकार से ही होता है। समझे?

जब आप.....क्या आपको तला हुआ चिकन पसन्द है? लगभग सभी इसे पसन्द करते हैं। ठीक है, तो जब आप चिकन खाते हैं, और आपके दांतों तले हड्डी आ जाती है, तो आप चिकन को बाहर नहीं फेंक देते हैं, आप तो बस हड्डी को ही बाहर फेंक देते हैं। पैट, क्या यह सही बात नहीं है? आप बस हड्डी को ही दूर फेंक देते हैं, और चिकन खाते रहते हैं।

खैर, हम आनन्दित हैं, क्योंकि हम एक ऐसा भोजन खा सकते हैं, जिसमें न तो कोई हड्डी है और ना ही उसमें कोई गुठली है। वे वेफर -वे रोटी जो स्वर्ग से आती है वह मन्ना कहलाती है; वे स्वर्ग की मिठास से चारों ओर से ढ़की हुई है।

2 आप जानते हैं, कि मेरा यह मानना है, कि यह दाऊद था जिसने एक बार यह कहा था, "यह—इसका स्वाद चट्टान में पाये जाने वाले मधु के जैसा है।" मैं सोचता हूँ, कवि ने कहा था, "यह चट्टान में मधु था।" ओह, मेरे भाई, क्या आपने उसका स्वाद लिया है.....देखिए, यह बस ऐसा है.....यह तो चट्टान में पाये जाने वाले मधु के जैसा स्वाद देता है। "मेरे भाई,यह तो चट्टान में पाये जाने वाला मधु है।" यह इसी प्रकार का ही है। अब, आप जानते हैं, कि एक बार को मुझे...मुझे इसके विषय में हैरानी होती थी, कि इसका अर्थात्, "चट्टान में पाया जाने वाला मधु" का क्या अर्थ होता है। और मैंने सोचा था, "अच्छा, हो सकता है, कि शायद उन्हें एक बार को चट्टान में मधुमक्खी का छत्ता मिल गया हो।" परन्तु जब मैं इस पर अध्ययन करता चला गया, तो इस पर मुझे एक छोटी सी प्रेरणा मिली; मैं ....जब मैं इसकी खोजबीन कर रहा था, उस समय तो ऐसा नहीं हुआ था, मगर बाद में मैंने यह पाया था, कि उनमें से प्रत्येक गडेरिये जिनके पास भेड़ होती थी....

आप जानते हैं, कि इसके बारे में कोई बात है, हमारी देह पृथ्वी की मिट्टी से बनी हैं। हर एक—एक जीवित वस्तु भूमि में से ही उत्पन्न होकर आती है। और वहाँ पर ये चरवाहे थे जिनका मानना था, कि जब भेड़ को कोई तकलीफ हो जाती है, आप जानते हैं, वह बीमार हो जाता है, या उसे कुछ हो जाती है, या उसे कोई परेशानी हो जाती है, तो चूना उसकी सहायता करता है।वे चाहते थे, कि वह उस चट्टान को चाटे। आप ने भेड़ को ऐसा करते हुए देखा, कि वह जाकर चट्टान चाटती है। और जिससे भेड़ उस चट्टान को चाटे, वे उस चट्टान पर थोड़ा सा मधु डाल देते थे। उसके बाद भेड़ जाकर उस शहद को चाटने लगती, और इसके बाद वह चट्टान को भी चाटने लगती, जब कि —जबकि वह उस मधु को चाट रही होती थी।.

3 खैर, हमारे पास यहाँ पर एक बैग है जो पूरा का पूरा ही मधु युक्त लेखों से भरा हुआ है। हम उसे चट्टान पर रखेंगे, हम उसे किसी कलीसिया पर नहीं,वरन उस चट्टान पर रखेंगे जो कि मसीह यीशु है। और आप जो भेड़े हैं इस समय उसे चाटने जा रहे हैं....और आप....आप अब...सुनिश्चित हैं, कि आप भले चंगे हो जायेंगे। जब आप उस चट्टान को चाटते हैं, तो आपकी पाप सम्बन्धी सारी समस्याएं दूर हो जाती हैं; आप को तो बस यही सब करना होता है। उस चट्टान के विषय में कोई बात है जिसमें चंगाई पायी जाती है...जिसपर चंगाई होती है।

पूर्व कालीन दिनों में.....इससे पहले कि उनके पास रैबीज़ का निदान (इन्जैक्शन) होता—उनके पास वह हुआ करता था जिसे वे "पागल पत्थर" कहते थे। जब किसी व्यक्ति को पागल कुत्ते के द्वारा काट लिया जाता था, तो वे उसे इसी पागल-पत्थर पर बैठा देते थे। और अब देखिए, यदि वह पागल-पत्थर....यदि वह उस पागल-पत्थर पर पहुँच जाता था, तो वह भला-चंगा हो जाता था; और यदि वह उस तक नहीं पहुँच पाता था, तो रोगी की हालत इतनी अधिक बिगड़ जाती थी, कि वह...वह मर ही जाता था।

ठीक उसी प्रकार से यह आज होता है। वह सबसे भंयकर "काट" (Bite) जो मैं जानता हूँ, एक पागल कुत्ते का नहीं है, वरन शैतान का ही है। और हमारे पास उसके लिए एक चट्टान है और वह चट्टान एक युगानुयुगी चट्टान है। आप बस उस पर टिके रहें। जब तक आप उस पर टिके रहते हैं, आप भले चंगे रहेंगे। आप उस पर से अपनी पकड़ ढीली न करें और वापस न फिरें, आप उस पर बस अटल बने रहें। उससे चिपके रहें.....और..और आप हो जायेंगे.....आप बिलकुल ठीक हो जायेंगे।

4 अब इससे पहले कि हम आज रात्रि के अपने अध्याय में चलें; और....और हम एक क्षण भर के लिए खड़े हो जाना चाहते हैं; क्या हम एक क्षण के लिए प्रार्थना के शब्द के लिए खड़े हो सकते हैं। क्या आप रोबर्ट डॉरटी की बहन नहीं हैं, क्या आप यहाँ पर हैं? उसने मुझे कल फोन करके बताया था; मेरा यकीन है कि ऐसी ही बात थी; और वह इस विषय में कह रही थी, कि उसे प्रार्थना की आवश्यकता थी। और मैं —मैं—नहीं जानता हूँ, आप कुछ कुछ उसके जैसी ही दिख पड़ती हैं। मैं नहीं जानता हूँ, कि आप वही थीं, या नहीं; मैंने आपको गत रात्रि यहाँ पर देखा था।

5 अब यहाँ पर कितने ऐसे लोग हैं जो यह चाहते हैं, कि उन्हें परमेश्वर के सम्मुख स्मरण किया जाये, या बल्कि यह चाहते हैं, कि परमेश्वर आपकी सुधि ले? आप बस....

हमारे स्वर्गीय पिता, जैसाकि —जैसाकि गीतों में हमारी अगुवाई करने वाला हमारा अगुवा शिकागो में गाया करता है, "जब आँसू बह रहे हों, मेरी सुधि लेना!" प्रभु, अब आप मेरी सुधि लें। प्रभु, मृत्यु की घड़ी में ...में....जीवन के हर पल छिन में हम यह चाहते हैं, कि आप हमारी सुधि रखें। हमें पापियों के रूप में स्मरण न करना.....जैसाकि हम हैं, परन्तु हम यह चाहते हैं, कि आप हमारी सुधि पापों का अंगीकार किये हुए मसीहियों के रूप में लें, कि हम आपके पुत्र और हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह को अपने...अपने पापों के प्रायश्चित के लिए ग्रहण कर चुके हैं। यही है जो हम जानते हैं, कि हमारे पास उद्धार के लिए यही एक मात्र-एक मात्र अवसर; एक मात्र रास्ता...एक मात्र माध्यम है। यह किसी कलीसिया के द्वारा नहीं होता है, या यह किन्ही दूसरे मशीनी साधनों के द्वारा, या किसी संस्था के द्वारा नहीं होता है; यह तो यीशु मसीह के द्वारा और केवल उसी के द्वारा ही होता है।

अतः आज रात्रि हम उसी के नाम में आपके पास आकर यह मांग रहे हैं, कि आप हमें आशीष दें, जैसाकि हम आपके वचन का अध्ययन करने के लिए।

और यह जानने के लिए कि आपने आज रात्रि हमारे लिए क्या संग्रह कस्के रखा है, एक साथ मिलकर एकत्रित हुए हैं, ताकि हम अपनी-अपनी आत्मिक देहों को एक जीवित कलीसिया के रूप में, एक ऐसी कलीसिया के रूप में निर्मित करें जहाँ आप वास कर सकते हैं और जिसमें होकर आप चल फिर सकते हैं; और आरामदेह महसूस कर सकते हैं; और आप अपने लोगों के मध्य में चल फिर रहे। हो सकते हैं, और हमें यह बता रहे हो सकते हैं, कि हमें क्या करना है; और आप यह जान रहे हो सकते हैं, कि हम उसे बिलकुल ठीक वैसा ही करेंगे।

और पिता, हम आप से प्रेम करते हैं, परन्तु हम यह जानते हैं, कि हम अभी भी उस स्थिति में नहीं हैं, कि आप हम में से होकर ठीक वैसे ही बातें करें जैसा आप करना चाहते हैं। अतः हम प्रार्थना करते हैं, कि आप हमारा खतना करेंगेः ऐसा है, कि आप हमारी इस सारी मूर्खता को, हमारे इस सारे शारीरिक फालतू भाग को आज रात्रि ही हम से काट कर अलग करें, ताकि हम पूरी तरह से आपको ऐसे समर्पित हो जायें, कि आप हमारा किसी भी समय उपयोग कर सकें।

पिता, और हम प्रार्थना करते हैं, कि वह समय ठीक आज रात्रि ही हो, कि आप हमारा उपयोग बाइबिल में से सोने के इन डलों को बाहर निकालकर लाने के लिए और उन पर पॉलिश करने के लिए करें; और होने पाये, कि लोग इस महान कलीसियायी काल में मसीह का प्रतिबिम्ब देखें। हम यह यीशु के नाम में मांगते हैं। आमीन!

6 अब, हमने इस समय तक कलीसियायी कालों का अध्ययन किया है; जब तक कि हम आज रात्रि छठवें कलीसियायी काल पर नहीं आ गये हैं। हम कल रात तक कलीसियायी कालों का समापन कर रहे हैं; हम सोमवार से लेकर रविवार तक प्रत्येक रात्रि को एक—एक कलीसियायी काल को लेकर अध्ययन करते चले हैं.....और आज रात्रि जो हमने कलीसियायी काल लिया है वह फिलेदिलफियायी कलीसियायी काल कहलाता है। और ..और हम अपने सम्पूर्ण ह्रदय से पुनीत रीति से यह यकीन करते हैं, कि इस काल का तारा, या सुसमाचारदूत....संदेशवाहकदूत जॉन वैसली था। .

इस कलीसियायी काल का आरम्भ सन् 1750 ईसवीं में तब हुआ जब लूथरन कलीसियायी काल का समापन हो गया था; और वैसली वाला यह कलीसियायी काल सन् 1900 के आसपास—लगभग सन् 1906 ईसवीं के आसपास तक रहा था। और तत्पश्चात् वहीं से लौदीकियायी काल का आरम्भ होता है।

और अब देखिए, यह काल —यह क्लीसियायी काल....भाईचारे की प्रीति का महान मिशनरी युग वाला और खुले द्वार वाला काल था। और प्रतिफल एक-एक खम्भा बनाया जाना; और तीन नामों का प्रकाशनः अर्थात् परमेश्वर का नाम; परमेश्वर के नगर का नाम; परमेश्वर के नये नाम का प्रकाशन दिया जाना—यही वह प्रकाशन है जो इस कलीसिया को—इस काल को दिया गया था। और अब देखिए, इस कलीसिया का.....इस काल का आरम्भ प्रकाशितवाक्य 3:7 से होता है और यह 13वें पद तक चलता है; और इसमें 13वाँ पद भी शामिल है; यह प्रकाशितवाक्य 3:7 से 13 तक पाया जाता है।

7 अब हम इस रात के समय में इन्हें फिर से थोड़ा सा दोहरा कर तरोताज़ा कर रहे हैं; हम थोड़ा सा पीछे जा रहे हैं, और जो पहला कलीसियायी काल था वह इफिसुस कलीसियायी काल था। क्या कोई तुरन्त ही यह बता सकता है, कि उस काल का दूत या उजियाला या सेवक कौन था? पौलुस! इफिसुस कलीसियायी काल की समयावधि सन् 55 ईसवीं से सन् 170 ईसवीं तक थी। वह कारण जो मैंने सन् 55 ईसवीं से लिया है, इसमें यह बात है, कि यही है वह जब उसने अपनी प्रचारकार्य वाली सेवकाई की यात्रा आरम्भ की थी और यही वह समय था जब उसने इफिसुस की कलीसिया की स्थापना की थी तथा...तथा उसके साथ साथ वहाँ पर और दूसरी विभिन्न कलीसियाओं की स्थापना की थी।

यह बिलकुल ठीक है, कि दूसरा कलीसियायी काल स्मुरना था। क्या किसी को.....सभा में से क्या किसी को यह स्मरण है, कि इस कलीसियायी काल का दूत कौन था? इरेनियस; यह सही बात है। यह बिलकुल ठीक बात है, कि इसकी समयावधि सन् 170 से सन् 312 ईसवीं तक थी।

और तीसरा कलीसियायी काल पिरगुमन कलीसियायी काल था। क्या सभा में से किसी को यह स्मरण है, कि उस काल का संत कौन था? —संत मार्टिन। यह सच है। इसकी समयावधि 312 ईसवीं सन् 606 ईसवीं तक थी।

और उसके बाद उससे अगला कलीसियायी काल थुआतीरा था। क्या कोई उस काल के संत को और सुसमाचारदूत, संदेशवाहक को स्मरण कर सकता है? कोलम्बा! यह सच है। और इसकी समयावधि सन् 606 ईसवीं से सन् 1520 ईसवीं तक थी। इससे अगला कलीसियायी काल सरदीस कलीसियायी काल था, जिसका हमने गत रात्रि अध्ययन किया था। और क्या कोई....वास्तव में आप जानते हैं, कि उस कलीसियायी काल का सुसमाचारदूत कौन था? क्या आपको स्मरण है? मार्टिन लूथर! और इसके बाद यह बात है, कि इसकी समयावधि सन् 1520 से सन् 1750 ईसवीं तक थी।

और आज रात्रि हम फिलेदिलफियायी कलीसियायी काल पर हैं; और इस काल का सुसमाचारदूत जॉन वैसली है; और इसकी समयावधि सन् 1750 ईसवीं से 1906 ईसवीं तक है; और यह काल भाईचारे की प्रीति का काल है।

अब, हमने यह मालूम किया है, कि इन कलीसियाओं में से.....इन कलीसियायी कालों में से प्रत्येक ने उस कलीसिया के गुण-चरित्रों का प्रतिचित्रण किया था। इसने बताया था, कि वह कलीसिया क्या थी और उस कलीसिया के गुण क्या थे; बल्कि उस कलीसिया के गुण-चरित्र क्या थे।

8 अब देखिए, गत रात्रि हमने मार्टिन लूथर को देखा था।

मैं...इन में, मैंने.....वह कारण जो मैं इसे ले रहा हूँ, और लड़के इसे टेप कर रहे हैं.....मैं सारे दिन भर अध्ययन करता रहा हूँ। और आप कहते हैं, "क्या सारे दिन भर अध्ययन कस्के भी आप यहाँ पर बस थोड़ा सा ही इतिहास बता रहे हैं?" जी नहीं, ऐतिहासिक तथ्यों का उल्लेख तो पुस्तक में किया जाएगा। समझे? यहाँ पर तो मैं यह...वह कारण जो इसे यहाँ पर ले रहा हूँ यह है; कि इन बातों को आप लोगों के सामने प्रेरणा के द्वारा बाहर निकालकर लाया जाये.....जहाँ हम एक साथ एकत्र हुए हैं। ताकि इसके प्रेरणा से भरे हुए भाग को लें।

मैं पुस्तक से इतिहास तो पढ़ सकता हूँ, लेकिन यह वह है जहाँ मैं प्रेरणा के लिए बाट जोह रहा हूँ; इसके बाद हम इसे टेप पर से उतारते हैं। इसके बाद हमें मिलता है.....हमें मिलता है....इसके बाद हमें पुस्तक में इसके ऐतिहासिक आंकड़े और पवित्र आत्मा की प्रेरणा के द्वारा वे तथ्ये मिलते हैं जो वह हमें तब देता है जबकि हम मसीह यीशु में एक साथ मिलकर यहाँ पर स्वर्गीय स्थानों में बैठे हुए हैं। और मेरा मानना है, कि इसे इन कलीसियायी कालों पर एक छोटी सी प्रभावकारी टीका-टिप्पणी वाला लेखांश बनना चाहिए। और खुदावंद ही इस पर अपनी आशीषं प्रदान करे।

9 अब ...गत रात्रि हमने जो कलीसियायी काल लिया था वह चूँकि सरदीस कलीसियायी काल था, अतः सचमुच में उसे ग्रीक में "बचकर बाहर निकल आया हुआ" कहा गया था; परन्तु मेरा मानना है, कि अंग्रेजी भाषा में इसका अनुवाद मरा हुआ है। अब देखिए, यह मरी हुई कलीसिया और बचकर बाहर निकल आयी हुई दोनों ही थी; क्योंकि यह वह कलीसिया थी जो वहाँ पर सन् 1500 या 1520 ईसवीं में पोप-आधीन साम्राज्य के अंतर्गत मरी हुई थी; और इस पोप आधीन बड़े साम्राज्य को हम अंधेरे काल कहते हैं-यही है वह जहाँ पर मसीहियत कभी सबसे अधिक अवनति(गिरी हुई) स्थिति में रही है.....या ऐसी ही वह फिर से लौदीकियायी कलीसियायी काल में रहेगी।

10 अब, हालांकि विस्मय करनेवाली बातों में से यह एक ऐसी बात है जिसे आपको अपने मस्तिष्क में संजोय रखना है; कि ये कलीसियाऐं आरम्भ होती हैं; और जो कुछ भी उस एक कलीसियायी काल में था वह हर एक कलीसियायी काल में से होकर आगे बढ़ता चला जाता है; और प्रत्येक कलीसियायी काल एक दूसरे पर अध्यारोपित होता चला जाता है। यदि आप इसका पुस्तक लेकर इतिहास के साथ बारीकी से अध्ययन करेंगे, तो आपको यह मालूम हो जायेगा। यह इस प्रकार से अध्यारोपित होता है, कि ये एक दूसरे के ऊपर रखे हुए पाये जाते हैं। और एक कलीसियायी काल जो समाप्त हो रहा होता है उसका सुसमाचारदूत वहाँ पर बीच में आता है, ताकि उस कलीसिया को उस विश्वास की ओर फेरे जो एक बार को खो दिया गया था। हमेशा ऐसा ही रहा है।

आप यहूदा की पुस्तक पर जो कि बाइबिल के अंत में पाये जाने वाली पुस्तक है दृष्टि डालकर देखिएगा, वह वहाँ पर प्रकाशितवाक्य को स्पर्श करती है। समझे? यहूदा ने कहा था, "मैं लिखता हूँ....मैं तुम्हें यह लिखता हूँ, कि तुम उस विश्वास के लिए पूरा यत्न करो जो पवित्र लोगों को एक बार ही सौंपा गया था। यह प्रेरितों और प्रकाशितवाक्य के आगमन के मध्य में अध्यारोपित होता है, क्योंकि तब तक बहुत से प्रेरित मर चुके थे...जा चुके थे। समझे? उस समय पर केवल एक ही जीवित रहा था जो कि यूहन्ना दिव्य था-जो कि प्रकाशितवाक्य को कलमबद्ध करनेवाला या लेखक है, जिसे प्रभु के दूत से प्रकाशन मिला, ताकि वह प्रकाशितवाक्य की पुस्तक को लिखे।।

11 अब देखिए, वे एक दूसरे के ऊपर अध्यारोपित होते हैं। जिससे अब आप.....मेरा अन्दाज़ा है, कि आपने इस पर ध्यान दिया है और इसे लिखकर उतार लिया है जैसाकि मैं इसका वर्णन करता चला जा रहा हूँ। ठीक वैसा ही यहाँ तक है कि यहाँ इस सरदीस काल में, जो कि वैवाहिक काल था, भी होता है । सच तो यह है, कि कलीसिया थुआतीरा के आने तक कभी भी पूर्ण अस्तित्व में नहीं आयी थी; परन्त इसने सरदीस में विवाह कर लिया था। और सरदीस का अर्थ होता है...एक...एक विवाह.....वैवाहित होना।

अब, अब देखिए, यदि आप इस पर ध्यान दें, तो आप देखते हैं, कि इसने यहाँ पर विवाह किया और इसके बाद वह उस काल में आगे बढ़ती चली गयी। और कल रात आपने लूथर पर ध्यान दिया है, कि वह एक मरे हुए नाम के साथ.....मरे हुए नाम के साथ बाहर निकलकर आया और उसके बाद बचकर बाहर निकलकर आये हुए दिख पड़ते हैं। देखिए, उसके पास यहाँ पीछे से ही एक मृत कलीसिया थी, और यहाँ पर बचकर बाहर निकल आये हुए वे बाकी लोग थे जिन्हें इस काल में यहाँ पर बाहर लाया गया था।

और आज रात्रि जैसाकि हम फिलेदिलफियायी काल का समापन कर रहे हैं, यह लौदीकियायी काल का आरम्भ लेकर आ रहा है।

12 और इसके बाद कल रात्रि को जब इसका अध्ययन करते हुए आगे बढ़ते हुए अंत तक चले जाते हैं, तो.....आप ठीक इसकी समाप्ति पर ध्यान देंगे, कि एक दूत ठीक अंत के समय पर दृष्टिगोचर होता है, और वह बस ठीक अंत समय पर दृष्टिगोचर होता है, ताकि कलीसिया को उसका पहला सा प्रेम खोने के लिए और इसके लिए, कि वह किस प्रकार से उन कालों से होती हुई परमेश्वर से दूर चली गयी, लताड़े। और उस समय पर कलीसिया को घर पहुँचाने के लिए "स्वर्ग पर उठाया जाना" होता है; कलीसिया बस उस संदेश के समय पर ऊपर चली जाती है। और अतःअब हम.....हम इस समय उस काल के अति निकट हैं। क्या आप उसे समझ गये थे? यह बिलकुल ठीक बात है। समझे? यह बिलकुल ठीक बात है।

देखिए, ठीक उस समय पर कलीसिया का दूत -वह सुसमाचारदूत आता है, ताकि उन्हें उनके पहले से प्रेम को खोने के लिए लताड़े और उन्हें फेर कर लाये.....वह उन्हें वापस फेरकर लाने का प्रयास कर रहा होता है.... ठीक यही काम यह सुसमाचारदूत आज रात्रि करता है; सुसमाचारदूत उन्हें उसके लिए जो उन्होंने किया है लताड़कर वापस लाने के लिए आता है; प्रत्येक काल में ऐसा ही होता है। अतः इस प्रकार से प्रत्येक कलीसियायी कालों में एक अध्यारोपण होता चला जाता है; ये एक दूसरे के ऊपर ठीक वैसे ही चढ़े हुए पाये जाते हैं जैसे एक सीढ़ी दूसरी सीढ़ी के ऊपर चढ़ी हुई सी होती है; ये इस प्रकार से अध्यारोपण में मौजूद होते हैं...ये इसी प्रकार से आगे बढ़ते हुए होते हैं।

13 अब आज रात्रि के सुसमाचारदूत पर.....जॉन वैसली पर मेरे पास यहाँ पर इतिहास का एक छोटा सा खंड़ है। जॉन वैसली इस काल का सितारा था। और उसका जन्म 17 जून सन् 1703 ईसवीं को इंग्लैंड़ में एपवोर्थ, रेक्टरी में हुआ था। जोन और सुसन्ना उसके माता-पिता थे, और वह उनकी उन्नीस संतानों में से पन्द्रहवीं संतान था। उसका पिता एक प्रचारक था; माँ प्रभु को समर्पित एक पवित्र जन थी;

यद्यपि उसके पास देखभाल करने के लिए उन्नीस बच्चे थे; फिर भी उसे अपने व्यस्त दिन में इतना अधिक समय तो मिल ही जाता था, कि वह अपने बच्चों को बाइबिल के पाठों की शिक्षा दे और उन्हें बाइबिल की कहानियाँ सुनाएँ; और उनके लिए प्रार्थना करे। यही है वह जिसने उन लड़कों को वह बनाया जो कि वे थे। यह उसका ही भाई चार्ल्स था जो एक महान गीतकार था, जिसने संसार को कुछ ऐसे सर्वाधिक प्रेरणा से भरे हुए गीत दिये जो कि कभी हमारे पास हुए....

14 जॉर्ज व्हाइटफील्ड़ का जॉन एक सहयोगी था...जॉन—जॉन वैसली और जॉर्ज...जॉर्ज व्हाइटफील्ड़ ही सचमुच में इस मैथोडिस्ट के या..पवित्रीकरण के प्रथम संस्थापक थे।

जॉन हर रोज़ प्रातः भोर को ही उठ जाता था; वह साठ वर्षों तक हर सुबह भोर को चार बजे ही उठ जाता था। यह एक ऐसी बात है जिससे सच्ची कलीसिया गिर चुकी है। वह प्रतिदिन सुबह चार बजे उठ जाता था, और सुबह पाँच बजे से ही प्रचार करता था; और उसने ऐसा लगातार पच्चास वर्षों तक किया। और कभी कभी तो वह दिन में दो से चार बार प्रचार किया करता था।

इंग्लैंड़ के लोगों के द्वारा यह कहा गया है, कि वह हर वर्ष सुसमाचार का प्रचार करने के लिए। पैंतालीस सौ इंग्लिश मील दूर घोड़ा दौड़ाया करता था। ये इंग्लिश मील हैं;(आप जानते हैं कि ये हमारे वाले से लम्बे होते हैं) वह पैंतालीस सौ मील घुड़सवारी किया करता था, ताकि सुसमाचार का प्रचार करे .....

15 उसके दिनों में अनेकों पुस्तकें उसके .....निन्दकों ने उसके विषय में— उसकी निन्दा-आलोचना करने के लिए, उसका उपहास उड़ाने के लिए लिखीं। परन्तु अब बहुत पहले ही उन्हें भुलाया जा चुका है; वैसे ही उनके लेखकों को भी भुलाया जा चुका है। आप परमेश्वर की संतान के विरूद्ध कुछ भी नहीं कर सकते हैं और उस पर प्रबल नहीं हो सकते हैं; आप.....आप तो बस हवा से ही लड़ रहे होते हैं। यह तो परमेश्वर ही है जो कैसे भी हो उन्हें सफल बनाते हुए आगे बढ़ाये चलाए जाता है।

वह अपने कामों को करने के तौर-तरीकों के कारण ही एक मैथोडिस्ट..(तौरतरीके से काम करनेवाला) कहलाया था। यह कहा जाता है, कि उसने अपने जीवन काल में चालीस हजार से भी अधिक उपदेशों का प्रचार किया था। इसके बारे में सोचिऐः चालीस हजार उपदेश! ज्यों ही वह सन् 1791 ईसवीं में चल बसा, तो उसके तुरन्त बाद ही मैथोडिस्ट नामधारी कलीसिया की जड़े संसार में पनपने लगीं, और उन्होंने मैथोडिस्ट नामधारी कलीसिया की स्थापना कर डाली। वास्तव में तब उस समय में एसबरी तथा अनेकों बहुतेरे लोग थे।

16 अब, जैसा कि हम सातवें पद को पढ़ने जा रहे हैं; यदि आप इस कलीसिया के अभिवादन पर....जो कि फिलेदिलफिया के सुसमाचारदूत को दिया गया था ध्यान दें, तो यह सच्ची कलीसिया थी....दिखावा करनेवाली कलीसिया में एक सच्ची कलीसिया थी....यह सच्ची कलीसिया थी जो दिखावा करनेवाली कलीसिया के अंदर थी।

....फिलेदिलफिया की कलीसिया के दूत को यह लिख.....

अब, मैंने आपका ध्यान उस अध्यारोपण की ओर आकर्षित किया है जहाँ ये प्रत्येक एक दूसरे पर अध्यारोपित होते हैं। अब, आप यहाँ पर देखेंगे, कि वह दूत....यदि आप देखेंगे तो आप पायेंगे, कि जिस कार्य-पद्धति को वह इस मैथोडिस्ट काल में लेकर आया वही आगे बढ़ती हुई...थोड़ा सा फिलेदिलफियायी काल में या लौदीकियायी काल में, पिन्तेकोस्तल काल में बढ़ती चली जाती है। इसके बाद हम कल रात्रि देखेंगे, कि पिन्तेकोस्तल सुसमाचारदूत उन्हें उन बातों से गिर जाने के कारण ठीक वैसे ही लताड़ने के लिए वापस आता है जैसे इस काल का सुसमाचारदूत उन्हें यहाँ पर सरदीस की बातों से गिर जाने के कारण लताड़ने के लिए आता है; लूथरन काल इस पर अध्यारोपित होता है।

17 भाईचारे की प्रीति.....यह मिशनरियों का और प्रचारकार्य का एक महान काल था। जगत ने ऐसा समय पहले कभी नहीं देखा था; यहाँ तक कि यह अब हमारे समय में भी ऐसे ही आगे बढ़ता है; कि यही है वह जब कभी संसार ने सभी जगह मिशनरियों का एक ऐसा समय देखा हो। अंत में ऐसा हुआ .....ओह, मैं यह कहूँगा, कि अन्तिम डेढ़ सौ वर्ष तो विश्व के इतिहास में वह असाधारण समय रहा था जब मिशनरी सुसमाचार लेकर संसार के सभी भागों में पहुँचे। यह ऐसा ही रहा है.....

जहाँ तक साहित्यक रूप में.....जहाँ तक साहित्य के रूप में फैलाने की बात है, सुसमाचार के संदेशों को पत्रों और ट्रक्टों, और पुस्तकों तथा इसी प्रकार के अन्य साहित्यों के रुप में.....सुसमाचार तो बहुत पहले ही....काफी पहले ही आकाश के नीचे हर एक जाति के पास पहुँच चुका है। अतः आप देखते हैं, कि यह बात उसे प्रमाणित करती है, कि यह वह बात नहीं थी जिसके विषय में यीशु कह रहा था। उसने कभी यह नहीं कहा था कि सारे संसार में जाओ और बाइबिल स्कूल बनाओ। उसने ना ही कदापि यह कहा था, कि सारे जगत में जाकर साहित्य बांटो। ये चीजें अच्छी हैं।

18 परन्तु उसकी कलीसिया के लिए आज्ञा तो यह थी, कि "सारे जगत में जाओ और सुसमाचार का प्रचार करो।" और सुसमाचार कुल मिलाकर वचन ही नहीं है, अपितु यह तो वचन को जीवन्त बनाना है। समझे? क्योंकि यीशु ने तुरन्त ही यह भी कहा था, "जो विश्वास करे उनके ये चिन्ह होंगे।"

आप मरकुस16 जानते हैं, कलीसिया के लिए उसकी अन्तिम .....उसकी अन्तिम आज्ञा यह थी, जो विश्वास करे उनके ये चिन्ह होंगे। उसका कलीसिया को दिया गया प्रथम कार्यभार मत्ती के 10 वें अध्याय में है जो कि यह है: "बीमारों को चंगा करो, मुरदों को जिलाओ, दुष्टात्माओं को बाहर निकालो; तुमने जैसे सेंतमेंत में पाया है वैसे ही तुम सेंतमेंत में दो।" और कलीसिया को दिया गया उसका अन्तिम संदेश यह था, "सारे जगत में जाओ, और हर एक जीवधारी(प्राणी) को सुसमाचार का प्रचार करो। जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा; जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जायेगा; जो विश्वास करे उसके ये चिन्ह होंगे।"

और क्या यह विचित्र बात नहीं है, कि बहतेरों ने तो उस भाग को ही वहाँ से काटकर बाहर निकाल दिया है? "और यह एक शब्दसंयोजक है जो आपके वाक्य को आपस में जोड़ता है। समझे? अब देखिए उसने कहा था....(जबकि बहुतेरे प्रचारक तो यही कहेंगे, जाकर सुसमाचार का प्रचार करो)..जो विश्वास करे, और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा; और जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा,"

"और जो विश्वास करेंगे..(करेंगे)....उनके ये..(ये)...चिन्ह होंगे, कि वे मेरे नाम से दुष्टात्माओं को निकालेंगे, वे नई नई भाषाएँ बोलेंगे। यदि वे सांपों को उठा लेंगे, या यदि वे नाशक वस्तु भी पी जायेंगे, तौभी उनकी कोई हानि नहीं होगी; यदि वे बीमारों पर हाथ रखेंगे तो वे चंगे हो जायेंगे।" जीवते परमेश्वर के चिन्ह लोगों के मध्य में प्रकट हो रहे हैं.....ओह, अब कहाँ तक प्रकट होने हैं? सारे जगत तक! क्या आप इसे समझ गये हैं? इन्हें सारे जगत तक प्रकट होना है।

19 अतः यही कारण है, कि जब मैं कहता हूँ, कि पिन्तेकास्तल संदेश....तो यह अब पिन्तेकोस्तल संस्था नहीं है, पिन्तेकोस्तल संदेश तो परमेश्वर की ओर से आनेवाला एक मात्र सच्चा सन्देश है। अब, यदि आप इसे वहाँ पर पढ़ रहे हैं, तो आप इस पर मरकुस 16 में दृष्टि डालें। यह बिलकुल ठीक है, कि यही है वह जहाँ यीशु ने अपनी कलीसिया को यह कार्यभार दिया था;कि सारे जगत में जाकर सुसमाचार का प्रचार करो; और इसके ये चिन्ह हैः नई नई भाषाओं का बोला जाना; बीमारों को चंगा किया जाना; आश्चर्यकर्म किया जाना.....ये चिन्ह कहाँ तक होंगे? सारे जगत तक! कितनों-कितनों के होंगे? सभी जीवधारियों के! ऐसा ही यहाँ पर सभी समय अंत तक, पृथ्वी के भस्म किये जाने तक होगा। यह बिलकुल ठीक बात है। क्या ये चिन्ह केवल इसी कलीसिया के ही होंगे? सारे जगत में जो विश्वास करते हैं उनके ये चिन्ह होंगे। सारे जगत में, समस्त जीवधारियों के लिए ये चिन्ह होंगे। ——सिर्फ इसी के लिए नहीं; उनके लिए जो विश्वास करते हैं। अतः ऐसी तो यह एक पिन्तेकुस्त वाली ही कलीसिया होती है। देखा, समझे?

20 अब, हम ठीक इसे इस काल में वहाँ पर लेते हैं जहाँ हम आज रात्रि फिलेदिलफियायी—फि-ले—फिलेदिलफियायी कलीसियायी काल पर है। इसी काल में ही सम्पूर्ण संसार में साहित्य के द्वारा प्रचार करने और मिशनरी कार्य करने का कार्य सम्पन्न हुआ।

यीशु ने कहा था, "जब इस सुसमाचार का प्रचार....(इस सुसमाचार का प्रचार हो जाता है).....मेरी गवाही के रुप में सारे जगत में हो जाता है, तो फिर अंत आ जाएगा।" ठीक है, फिर तो यदि वही इस विषय में कह रहा था.....वह साहित्य फैलाने के विषय में, मिशनरियों को पाठ्य सामग्री, अंकगणित लेकर बाहर भेजने, और ट्रक्टों को वितरित करने, और लोगों को हाथ मिलाने की स्थिति पर लाने और यह विश्वास करवाने की स्थिति पर लाने कि एक परमेश्वर है, के विषय में कह रहा था; और यदि यही सब वह था जिसके विषय में वह कह रहा था; तब तो वह अपने आगमन के समय को बहुत पहले ही पार कर चुका। समझे? अतः ये यही दिखाता है, कि सुसमाचार.....

पौलुस ने कहा था, "मैं तुम्हारे पास सुसमाचार केवल शब्द में ही लेकर नहीं आया, वरन पवित्र आत्मा की सामर्थ और प्रकटीकरण के साथ लेकर आया।" फिर तो यह है, कि जब यीशु ने कहा था, "सारे जगत में जाओ, और सुसमाचार का प्रचार करो", तो उसने यही कहा था, "जाकर सारे जगत में दिखाओ।" ओह, मुझे यह बात अच्छी लगती है। वचन लिया जाये; सुसमाचार की सामर्थ को साक्षात् प्रकट किया जाये,

कि यह क्या कहता है; और लोगों को यह दिखाया जाये, कि यह क्या कहता है। और इसके बाद इसे उन पर साक्षात् प्रकट किया जाये। ओह, यही तो तरीका है। यही इसे प्रमाणित करता है।

21 ओह, जब वह महान मोरस रीडहैड जो कि उस सूड़ान मिशन का जो कि संसार में सबसे बड़ी है, का अध्यक्ष है, मेरे कक्ष में खड़ा हुआ था, तो तब उसने कहा था, "भाई ब्रन्हम, एक बैपटिस्ट होने के नाते, आपको मालूम होना चाहिए, कि सच्चाई क्या है।" मैंने कहा, "बाइबिल ही सच्चाई है।"

और उसने कहा, "अच्छा, ...उसने कहा, "इन पिन्तेकोस्तलों को क्या मिला है?"

मैंने कहा, "पवित्र आत्मा!" समझे?

और इस पर वह बोला, "ओह, मैने तो उन्हें फर्नीचर को चीरते हुए और भरी हुई चीजों को लात मारते हुए देखा है।"

मैंने कहा, "जी हाँ, केवल एक मात्र बात यह है, कि तुम लोग अपने आपको पीछे ही रखे रहते हो और स्वयं अपने को उनसे अलग इकट्ठा करते हो। उनके पास बहुतायत में भाप है; वे पहिये को चलाते तो हैं और कुछ काम करते तो हैं, लेकिन वे उसे सीटी से सारा का सारा बाहर निकाल देते हैं।" समझे आप? मैंने कहा, "यदि उन्होंने उसे यहाँ पर संजोय रखा होता, तो उनके पास चिन्ह और आश्चर्यकर्म और चमत्कार होते तथा ऐसा ही सब कुछ होता। परन्तु वे नहीं जानते हैं, के वे इससे क्या करें; अतः इसे तो कहीं न कहीं जाना ही होता है; अतः इसने बस.....बस इसे धड़ाम से बाहर निकाल दिया; उस पर जोर लगाकर उसे बाहर निकाल दिया।" बजाये इसके कि मैं इसे फूक मारकर निकाल रहा होऊँ, मैं तो इसे सम्भालकर रबँगा, और मेरे पास कोई भाप ही ना हो, क्या आप ऐसा नहीं करना चाहेंगे ?

जैसे कि एक बुजुर्ग व्यक्ति कहा करता था, "बजाये इसके कि मैं एक छोटी सी जंगली आग से ऊरूँ ,....बजाये इसके कि मेरे पास बिलकुल भी आग न हो, मैं एक छोटी सी जंगली आग अपने पास रचूँगा।"

22 आज इसकी मुश्किल यह है, कि हम एक आग को चित्रित करके रंग करने का प्रयास करते हैं, और यह कहने का प्रयास करते हैं, "आप जानते हैं, पिन्तेकुस्त के उन पूर्व कालीन दिनों में उन्होंने ऐसा किया था।" अब देखिए, ठंड़ से ढिठुरते मनुष्य को जो ठिठुरन से मरे जा रहा है रंग की हुई आग का चित्र दिखाने से क्या भला होगा? उससे तो लेशमात्र भी उसकी सहायता नहीं होगी । जी नहीं! आपके पास होना होता है....उसके पास तो खुद आग ही होनी चाहिए।

और यदि वहाँ परमेश्वर की एक सामर्थ है जिसने पिन्तेकोस्तलों से प्रभु के लिए कार्य करवायें; और उन से उन कामों और चिन्हों को करवाया जो उन्होंने किये थे; और यदि आप बस तस्वीर न बनाकर अपितु लोगों पर उस तस्वीर को साक्षात वास्तविक रुप में प्रकट करेंगे, तो उन्हें ठीक वैसा ही अनुभव, ठीक वैसा ही उद्धार प्राप्त होगा; और ये अपनी गवाही पर ठीक वैसे ही मोहर करेंगे जैसे उन्होंने मोहर की थी। समझे? परन्तु आपको तो इसे उनके ऊपर प्रकट करना होता है। आपको इसे किसी दूसरी पीढ़ी पर टालना नहीं होता है, परन्तु उसे तो यहाँ पर लेकर आना होता है।

23 अब, हम यह मालूम करते हैं, कि भाईचारे की प्रीति का यह काल एक महान मिशनरी काल था। यीशु ने कहा था, सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को....और ये चिन्ह उनके होंगे।

अब, जैसा कि हम इतिहास के द्वारा और बाइबिल के द्वारा अध्ययन करते चले आ रहे हैं, मैं आप से कुछ पूछना चाहता हूँ : क्या प्रत्येक रात्रि को नहीं.....हमने बाइबिल में पढ़ा है, कि यीशु ने यूहन्ना को यहाँ पर क्या बताया था, कि क्या क्या होगा; और ठीक यहाँ पर हमने इतिहास लिया और यह प्रमाणित किया, कि यह बिलकुल ठीक ठीक वैसे घटित हुआ था। यही कारण है, कि मैं इतने अधिक समय और उसने उस कार उसके बाद फिर है, और फिर

तक इन....इन पुरुषों के विषय में यह खोजबीन करता रहा हूँ, कि देखें, कि कहाँ पर परमेश्वर का वह सेवक था जो इस सुसमाचार-संदेश को थामकर आगे लेकर बढ़ता चला गया था। परन्तु वह तो वहीं पर था, वह तो वहीं पर बिलकुल ठीक ठीक वैसा ही था जैसाकि बाइबिल कहती थीः उसने सुसमाचार-संदेश को बिलकुल ठीक ठीक वैसे ही कायम रखा था जैसाकि वह आरम्भ से ही था; उसने उसके साथ मूर्खपन नहीं किया।

और उसके बाद हमने यह देखा था, कि वह लगभग उखड़ सा गया था; और उसने उस काल को एक मरा हुआ काल, अंधेरा काल तथा ऐसा ही अन्य सब कुछ कहा। और उसके बाद फिर एक और छोटा सा उजियाला आता है....उसके बाद फिर थोड़ी सी सामर्थ आती है, और फिर अंत समय में यह अग्रसर होकर अनुभव में....पिन्तेकोस्तल वाले असली अनुभव में बढ़ता चला जाता है, और तब दुल्हन को ठीक अंत समय पर ऊपर उठा लिया जाता है; और वह चली जाती है, और उसके बाद उस पीड़ा—उस बड़ी पीड़ा का आना होता है जो समस्त संसार पर आने जा रही है।

24 अब देखिए, यह महान मिशनरी काल भाईचारे की प्रीति का काल, मिशनों का काल था.....आइये, मैं आपको उन कुछ महान पुरूषों के नाम बताऊँ जो मैंने—मैंने बस तब यहाँ पर लिख लिये थे, वे हैं: जॉन वैसली, जोर्जव्हाइटफिल्ड

व्हाइटफिल्ड, वह लगभग सन् 1739 ईसवीं में था; चार्ल्स जी. फिन्नी,विट मूड़ी, विलियम कैरी, वह महान मिशनरी है जो कि सन् 1773 में भारत गया था, डेविट लिविंग्स्टोन, यह वही है जो दक्षिणी अफ्रिका गया था। देखिए, ये सब वे हैं.....ये तो उन महान परुषों में से कुछ ही हैं।

बस....मेरे पास तो उन महान पुरुषों में से बहुतेरों के नाम यहाँ पर हैं जो उस भाईचारे की प्रीति में रहे थे; वे अश्वेत, श्वेत पुरूष थे, वे भूरे पुरूष, पीले पुरूष थे....सारी दीवारे तोड़ कर गिरा दी गई थीं, और....ये सारे पुरूष प्रचार कार्य के क्षेत्रों में बाहर निकल कर गये थे....ऐसी भाईचारे की प्रीति थी, कि सभी जगह सभी देशों में एक हाथ फैला हुआ था; और यह उन सभों के लिए खुला हुआ था जो जा सकते थे। यह खुले द्वार का एक और काल था; क्योंकि वे नहीं कर सकते थे....इससे पहले वे इसे नहीं कर सकते थे....पोपाधीन....और पोप अधीनस्थ रोम तथा इसी प्रकार के और दूसरों ने इसे सारा का सारा इतना अधिक बंद नहीं कर दिया था कि वे नहीं जा सकते थे।

परन्तु इस काल में द्वार खुल गये थे, क्योंकि उसी ने कहा था, कि वह एक खुले द्वार का काल था।

25 उस काल के दौरान उन्होंने बहुत से द्वार खोलेः सुसमाचार की ओर जानेवाले द्वार को, प्रचारकार्य के क्षेत्रों के द्वार को; मसीह की ओर फिर से फिर जाने वाले द्वार को खोला गया था; उस काल के दौरान सभी कुछ खोला गया था। और आप देख सकते हैं, कि उन्होंने क्या किया

था; उनके भाई बन्धुओं ने इससे एक बहुत बड़ा कार्य किया था।

और सरदीस के काल के सितारे के बाद से....और जॉन वैसली से लेकर.....उस समय से लेकर जब उसने उन्हें सरदीस काल से जगाया था, तो पिछले डेढ़ सौ वर्षों तक बड़े बड़े मिशनरी सारी पृथ्वी पर छा गये थे...(इससे पहले किसी भी समय में या किसी भी युग में ऐसा नहीं हुआ था।)....आप ज़रा इसके विषय में सोचिएँ! आकाश के नीचे के प्रत्येक देश ने वचन सुना है—यह काम तो कई कई वर्षों पहले ही पूरा हो चुका; (समझे?) पर सुसमाचार नहीं, वरन वचन, सिर्फ़ वचन ही। "शब्द तो मारता है, पर आत्मा जिलाता है -जीवन देता है।" see.

26 उस दिन जब मैं दक्षिणी अफ्रिका में प्रचारमंच पर खड़ा हुआ था, और दृष्टि डाल रहा था कि वहाँ बाहर हजारों हजार गुना मुसलमान बैठे हुए थे। और मैंने मुसलमानों के बीच प्रचारकार्य करने वाले एक मिशनरी से मुलाकात की थी। और इस मुसलमान मिशनरी ने कहा था, ओह, उस अमूल्य प्राण के लिए!

अब देखिए, वह पुरूष वहाँ पर कई वर्षों से था; और उसने केवल एक ही मुसलमान को मसीह की ओर फेरा था। चूंकि मुसलमानों का उदय मिदो-फारसियों से हुआ है, अतः वे अपने नियमों में बदलाव नहीं करते हैं और ना ही उनमें कोई संशोधन करते हैं; अतः जब वे एक बार को मुसलमान हो जाते हैं, तो वे सारे समय ही मुसलमान रहते हैं।

अतः वहाँ पर उनके पास केवल एक ही प्राण था जिसके विषय में वह भाई बातें कर रहा था- वह वहाँ पर प्रीटोरिया जो कि दक्षिणी अफ्रिका की राजधानी है, के मैदान में खड़ा हुआ था। वह वहाँ पर स्वतन्त्र प्रांत, मुक्त प्रांत , ऑरेन्ज प्रांत में और ट्रान्सवाल में कार्यरत था। और हम उस मार्ग से होकर वहाँ से कैपटाउन तथा ब्लोमफॉनटेन गये, और ग्राहमस्टॉउन, पश्चिम लंदन से होकर वापस आये और उसके बाद हम वापस जोहन्सबर्ग में लौटकर आ गये; जबकि हम कैपटॉउन से अपनी रवानगी कर चुके थे, और हम तट तक आये थे।

27 यह बिलकुल ठीक बात है,

कि वह अन्तिम नगर जहाँ हम गये थे वह डरबन था—यही है वह जहाँ सबसे अधिक स्थानीय जन जातियाँ एकत्र हुई थीं—वहाँ पर डेढ़ सौ से दो सौ हजार जन जातियाँ थीं जो वहाँ पर बैठी हुई थीं। वहाँ पर मुसलमान थे, जन जातियों के लोग थे जो हमारे पास थे...उनके लिए इधर उधर जाने में तो कई सप्ताह लग जाते....एक दौड़ का मैदान लिया गया, वह चर्चिल डाउन्स से काफी अधिक बड़ा है, वह संसार में दूसरे नम्बर पर बड़ा है; लंदन में सबसे बड़ा है, फिर दक्षिणी अफ्रिका का नम्बर आता है, और उसके बाद चर्चिल डॉउन्स का नम्बर आता है।

इसके बाद उन्हें बाड़े लगाने पड़े थे, क्योंकि उनमें जन जातिये लड़ाइयाँ होती रहती हैं; और पुलिस...(वहाँ पर दो सौ या तीन सौ सुरक्षाकर्मी तैनात थे।)—वहाँ पर पुलिस खड़ी हुई उन जन जातियों में से हर एक को उन बाड़ों के अंदर खदेड़ रही थी, ताकि वे एक दूसरे से लड़ाई झगड़ा न करें; और वह उनके भाले और ढ़ाले तथा इसी प्रकार के और दूसरे शस्त्र लेकर उन्हे निहत्था कर रहे थे। वे वहाँ पर उस मैदान में बैठे हुए उन बाड़ों में से एक दूसरे को घूर रहे थे, क्योंकि उनमें जातिये दंगे होते थे। उनके प्रधान ऐसे थे, कि वे उन्हें किसी चीज पर उठाये हुए थे, और उनकी तथा रानी की बड़े बड़े पंखे से हवा की जा रही थी।

रोडेशिया की रानी तो सत्ताइस मोटरगाड़ियाँ या रेल गाड़ी या रेलगाड़ी के डिब्बे में रोडेशिया के लोगों को भर कर लेकर आयी थी, कि वे सभा में उपस्थित हों। और एक विशेष रेल गाड़ी वहाँ पर आयी थी।

28 प्रभु बड़े बड़े कार्य कर रहा था, वह बड़े बड़े अद्भुत काम कर रहा था, और चिन्हों को दिखा रहा था। और हमने क्या मालूम किया था? मैं उस दिन डरबन शहर के मेयर सिडनी स्मिथ के साथ बाहर जा रहा था; मैंने कहा था," वह लड़का क्या है, जिसके गले में वह छोटी सी जंजीर पड़ी हुई है?" एक अश्वेत पुरूष....जैसाकि हम इसे यहाँ पर नीग्रो कहते हैं.....ये ही वे लोग थे जिनको मुझे प्रचार करना था। और उनमें से बहुतेरे तो ....बिलकुल भी कोई कपड़ा या अन्य कुछ भी नहीं पहने हुए थे; स्त्री और पुरुष कुछ भी नहीं पहने हुए थे। अतः वे....उसने अपनी बगल में एक मूर्ति ली हुई थी; उसके गले में एक पट्टा सा डला हुआ था।

मैंने पूछा, "वे क्या हैं, उनके गले में वे पट्टे क्यों डले हुए हैं?"

बताया गया, "वे मसीही हैं।"

मैंने कहा, "क्या मसीही हैं? क्या हाथ में मूर्ति लिये हुए?"

उसने कहा, "अब, भाई ब्रन्हम, मैं.....वह एक शंगाई है मैं उसकी भाषा बोल सकता हूँ। बोला, "हम वहाँ तक मोटरगाड़ी चलाकर जायेंगे, और आप उससे बातें करना, आप उसे जो चाहे कहकर बुलाना; आप उससे ऐसे बातें करना जैसे आप उससे कुछ प्रश्न पूछने जा रहे हैं; मैं उसे बता दूंगा; इसके बाद आपको बताऊँगा कि उसने क्या कहा था।"

29 अतः मैंने कहा, "थॉमस आप कैसे हैं?" और मैंने उसे थॉमस बुलाया; क्योंकि मैंने सोचा था, कि यह नाम बिलकुल उपयुक्त लग रहा है। और मैंने कहा...मैंने कहा, "थॉमस, तुम कैसे...कैसे हो?" और उसने मेरी ओर देखा। और मैंने पूछा, "क्या—क्या तुम एक मसीही हो?"

"जी हाँ!" वह—वह एक मसीही था।

और मैंने कहा.....ओह, वास्तव में, वह मुझे नहीं जानता था। उसने कभी नहीं....उनमें से किसी ने भी मुझे नहीं देखा था। अतः मैंने कहा, "तुम उस मूरत से क्या करने जा रहे हो?" उसने बताया,

"ओह, उसका....उसका पिता इसे उठाये रहता था। देखिए, वह एक थी.....वह एक देवता की मूरत थी।" समझे?

मैंने कहा, "क्या तुम्हारे पिता इसे उठाये फिरते थे।" मैंने कहा....."अच्छा, यह—यह तो कोई कारण नहीं हुआ, कि तुम भी इसे उठाये फिरो। तुम तो एक मसीही हो; तुम्हें तो इसे उठाये फिरना नहीं चाहिए।"

उसने कहा, "अच्छा, एक दिन एक शेर उसके पिता के पीछे पड़ गया था, और उन्होंने एक छोटी सी आग जलायी, और उन्होंने इसी मूरत के आगे एक छोटी सी उस प्रार्थना का जाप किया जो भूतसिद्धि करनेवाली ने उन्हें बतायी थी, और इस मूरत ने उस शेर को भगा दिया था।" वहाँ पर जानवर उनमें से बहुतेरों को मार डालते हैं। और वह.....

30 और मैंने कहा, "देखो, यह वह प्रार्थना नहीं थी जो भूतसिद्धि करनेवाली ने उन्हें बतायी थी जिससे वह भाग गया था;" मैंने कहा, "यह तो

आग थी जिसने शेर को भगा दिया था। शेर आग से डरता है।" और मैंने कहा, "थॉमस, एक मसीही होने के नाते आपको इसे उठाये नहीं फिरना चाहिए। तुम्हारा इससे कोई नाता नहीं होना चाहिए।"

और उसने कहा, "ओह,अच्छा, यदि अमोया (Amoyah)"....यह अदृश्य बल होता है.....जो हमारा परमेश्वर है जिसे हम नहीं देखते हैं।" "अमोया" का अर्थ, "एक बल" होता है जो आंधी जैसा होता है। अगर—अगर अमोया चूक जाता है, तो यह नहीं चूकेगा।" यही कारण था, कि वह उन दोनों को ही उठाये हुए था। उसने कहा था, "यदि यह काम नहीं करेगा, तो यह दूसरे वाला तो काम करेगा ही।" अब; वह सामर्थ मसीहियत की थी। जी हाँ! हूँ-हूँ! ओह मेरे परमेश्वर!

31 परन्तु उसके बाद उस दोपहर-बाद जब पवित्र आत्मा उस सभा में उस दौड के मैदान में नीचे उतरकर आया और हृदय के विचारों को प्रकट करने लगा...जबकि मैं वचन पढ़ चुका था. जहाँ मुझे वास्तव में पन्द्रह मिनट लगते थे वहीं उन्हें इसके लिए लगभग एक घन्टा लग जाता था, क्योंकि उनके पास पन्द्रह विभिन्न अनुवादक थे जिनके जरिये से इसे बताया जाता था।

अतः मैं—मैं इस प्रकार से बोलता था, "यीशु मसीह जो परमेश्वर का पुत्र है; और यह वाला कहता, "बा-बा- बा-बा"; और यह वाला कहता "ग्लू-ग्लू-ग्लू-ग्लू; और इसके बाद वह वाला कहता, "यूम-यूमयूम'; और इसी प्रकार से इसे बोला जाता था। और उन सब अनुवादकों का कहने का अर्थ होता था, "यीशु मसीह जो परमेश्वर का पुत्र है।" मुझे अपनी पिछली कही बात से ही शब्दों को मिलाकर जोड़ना होता था; मुझे नहीं मालूम होता था, कि अनुवादक कहाँ पर होता था, और मुझे तब तक रूके रहना पड़ता था जब तक कि वे इसे कह नहीं डालते थे।

32 और इसके बाद जब फिर से यह बात आयी, तो मैंने कहा, "अब देखिए, मिशनरी ने आपको बताया था, कि एक यीशु है जो आपको बचाने के लिए आया।" आप जानते हैं, कि आप उन लोगों को, उन विभिन्न जन-जातियों को एक दूसरे को ताकते हुए देखते हैं, और वे ऊपर और नीचे, सब तरफ इस प्रकार से ताक रहे थे।

मैंने कहा, "मिशनरी ने आपको बताया था। परन्तु क्या उस मिशनरी ने....इस पुस्तक को पढ़ते हुए, क्या आपने वहाँ पर दृष्टि डाली जहाँ वह एक महान चंगा करनेवाला था; और उसने कहा था, कि वह आगे आने वाले जमानों में लोगों के मध्य में तब तक वास करेगा जब तक कि वह वापस लौटकर नहीं आ जाता है? जो काम मैं करता हैं, उन्हें तुम भी करोगे? तुम जो ऐसे हो जिन्होंने मसीह को कभी अपना उद्धारकर्ता करके ग्रहण किया है, उस पट्टे को पहने हुए हो; क्या तुम यह देखना चाहोगे, कि यीशु आज यहाँ पर वापस आये; और लोगों के मध्य में से होकर चले फिरे और ठीक उन्हीं कामों को करे जो उसने तब किये थे जब वह यहाँ पृथ्वी पर था?"

ओह, वे सब पुकारकर बोल उठे, "यकीनन'! वे वैसा होते हुए देखना चाहते थे। समझे आप? वे वैसा चाहते थे।

मैंने कहा, "इसके बाद यह है, कि यदि वह ऐसा करेगा, वह हमारा ठीक उन्हीं काम को करने के लिए उपयोग करता है जो उसने तब किये थे जब वह यहाँ पृथ्वी पर था, तो क्या तुम उसके वचन का विश्वास करोगे?"

वे बोले, "ओह, निश्चय ही!"

आप देखते हैं, कि वे मुसलमान वहाँ पर बैठे हुए थे..... पहला व्यक्ति.....

33 मंच पर जो दूसरा व्यक्ति उपस्थित हुआ वह एक मुसलमान महिला थी। पवित्र आत्मा बातें कर रहा था; मैंने खुद उस महिला से कहा; मैंने कहा, "अब, आप जानती हैं, कि मैं आपको नहीं जानता हूँ; यहाँ तक कि मैं आपकी भाषा भी नहीं बोल सकता हूँ।"

और उसने इस बात को स्वीकारा। उसकी आँखें के बीच यहाँ पर एक भूरा सा निशान था, जिसका अर्थ यह था, कि वह एक नमाज़ी और एक मुसलमान थी।

अतः मैंने कहा, "ठीक है, अब देखिए, आप चंगाई पाने के लिए आई हैं; आपको चंगा करने के लिए—मैं आपको चंगा नहीं कर सकता हूँ। परन्तु मैंने कहा, "क्या आपने समझा.....कि मैंने इस दोपहर-बाद क्या कहा था....क्या संदेश ने कहा था?"

और वह—वह प्रत्युत्तर में उस मुसलमान अनुवादक से बोली, कि....वह एक भारतीय थी; वह यही थी। वह बोली, "जी हाँ, वह समझ गयी। उसने नया नियम पढ़ा हुआ है।" ओह; जी हाँ! हाँ —हाँ!

देखिए, वे भी ख़ुदा पर विश्वास करते हैं। वे भी अब्राहम के वंश हैं। समझे? परन्तु वह बोली.....तब वह परमेश्वर पर विश्वास करती थी, लेकिन वह यह विश्वास करती थी, कि मोहम्मद उसका नबी-पैगम्बर था। और हम विश्वास करते हैं, कि यीशु उसका पुत्र था। समझे? अतः वह बोली, "ओह, उसने-उसने परमेश्वर पर विश्वास किया है।"

34 और मैंने कहा, "इसके बाद यह बात है, कि यदि आप पुराना नियम जानती हैं, और यह जानती हैं, कि उन पिछले दिनों में, उन पिछले ज़मानों में परमेश्वर लोगों में क्या था, तो आप यह जानती होंगी, कि यीशु ही एक वह है जिसे हम मसीह कहते हैं ; वह परमेश्वर ही था जो एक भविष्यद्वक्ता था; जी हाँ, उन्होंने उसे जान से मार डाला था। तुम सोचते हो, कि उन्होंने ऐसा नहीं किया था, क्योंकि वह श्वेत घोड़े पर बैठा था और उस पर सवार होकर भाग गया था। यही है जिसकी तुम्हारे मुल्लाहों ने तुम्हें शिक्षा दी है, कि "उसको कभी भी जान से नहीं मारा गया था। अब.....और उसके कुछ समय के बाद वह और कहीं पर एक साधारण मौत से मरा था।"

मैंने कहा, "तुम उसका विश्वास करती हो। परन्तु यह वाला यीशु.....नये नियम के अनुसार वह मरा, और फिर से जी उठा और उसने अपना आत्मा अपनी कलीसिया के पास भेजा।"

अब, आप इसे समझ गये हैं। समझे? यही है वह जिसके विषय में मुसलमानों ने बिली ग्राहम को चुनौती दी थी(समझे?)....ठीक यही बात थी....ठीक यही सिद्धांत था जिस पर उसे चुनौती दी गयी थी।

मैंने कहा, "अब, यदि....मोहम्मद ने आप से इन सब बातों की कभी कोई प्रतिज्ञा नहीं की। परन्तु यीशु ने हमसे एक यह वायदा किया है, कि वे काम जो उसने किये थे वे हम भी करेंगे। अब, देखिए, आप स्मरण रखें, कि उसने संत यूहन्ना 5:19 में कहा था, कि मैं तब तक कुछ नहीं करता हूँ जब तक कि पिता मुझे दिखा नहीं देता।

मैंने कहा, "अब, यदि यीशु आ जाता है, और मुझे दिखा देता है, कि आपकी क्या तकलीफ है, या आप यहाँ पर किस लिए हैं; आपको बता देता है, कि आपका परिणाम क्या था, आपका अतीत क्या था; और आपका भविष्य क्या होगा, और यदि वह आपको बता सकता है, कि आपका भविष्य क्या है....आपका अतीत क्या था, तो निश्चित तौर पर आप विश्वास करेंगी, कि आपका भविष्य क्या होगा।"

वह बोली, "यह सच है।" देखिए, उसने ऐसा अनुवादक के माध्यम से कहा।

और मैंने कहा, "यह बिलकुल ठीक है, हो सकता है, कि वह इसे करे।"

35 और आप जानते हैं, कि वे सारे मुसलमान ऊपर खड़े होकर टकटकी लगा कर देख रहे थे। और जब पवित्र आत्मा ने कहा, "तुम्हारा पति नाटा सा, भारीभरकम पुरूष है, जिसकी काली मूंछे हैं....लगभग तीन दिन पहले तुम डॉक्टर के पास गयी थीं। तुम्हारे दो बच्चे हैं। उसने तुम्हारी स्त्री वाली जाँच की है; उसने कहा था, कि तुम्हारी कोख़ में एक गिलटी है।"

उसने अपनी निगाहें झुका लीं और अपना सिर झुका लिया, और बोली, यह सच है।"

और मैंने कहा, "अब, यदि तुमने नया नियम पढ़ा है, तो क्या यह बात वैसी ही है-कि यह यीशु ही है जिसने उस स्त्री को जो कुँए पर थी बतला दिया था?

वह बोली, "यह सच है।"

और मैंने कहा, "ठीक है, तुम मेरे पास क्यों आयी हो, जबकि मैं तो एक मसीही हूँ? तुम अपने मुसलमान पैगम्बर के पास क्यों नहीं गयीं?"

वह बोली, "मैं सोचती हूँ, कि आप मेरी सहायता कर सकते हैं।"

और मैंने कहा, "मैं आपकी सहायता नहीं कर सकता हूँ। परन्तु यदि आप इसे यीशु को जो इस समय यहाँ पर है, जो तुम्हारा जीवन जानता है और तुम्हारे विषय में सब कुछ जानता है, ग्रहण कर लोगी, तो वही तुम्हारी सहायता करेगा।" वह बोली, "मैं यीशु को अपनी उद्धारकर्ता करके ग्रहण करती हूँ।"

इसी ने ही इसे कर दिया था। इसी ने ही काम कर दिया था। उसी दोपहर ही दस हजार मुसलमान मसीह के पास आ जाते हैं। समझे? लगभग तीस वर्ष तक मिशनरी कार्य पर रहने और साहित्य के द्वारा उसने एक को ही फेरा था, जबकि उन पाँच मिनट में दस हजार लोग सुसमाचार के साक्षात् प्रकट होने के द्वारा फिर गये थे।

36 परमेश्वर ने हमसे कभी भी गिरजाघरों का निर्माण करने के लिए नहीं कहा; हमसे कभी भी विद्यालयों का निर्माण करने के लिए नहीं कहा। वे सब बिलकुल ठीक हैं। परमेश्वर जानता है, कि हमें अस्पतालों तथा इसी प्रकार के और दूसरे स्थानों की आवश्यकता है; यह उसका कार्यक्रम तो है, लेकिन कलीसिया के लिए उसकी आज्ञा सुसमाचार का प्रचार करना है।

परन्तु हमने ट्रैक निकाले; एस्बरी से जो कि यहाँ पर एक छोटी सी जगह है साहित्स निकाले.....परमेश्वर उन लोगों को आशीष दे। वह छोटा सा कैथोलिक कॉलेज जो यहाँ पर विलमोर कैन्टकी में है; मैं सोचता हूँ, कि वह इस समय संसार की सबसे बढ़िया; आत्मिक छोटी सी जगह है। वे बढ़िया लोग हैं।

37 और मैं बाहर निकलकर आ रहा था.....मैं भूल गया हूँ.....यह रोडेशिया था....पर मैं उस नगर का नाम नहीं जानता हैं। बिली, क्या तुम इसे याद कर सकते हो? सैल्सबरी; यह सही बात है,वह न्यू सैल्सबरी, रोडेशिया था। वह मेरा स्मृतिज्ञान है। न्यू सैल्सबरी, रोडेशिया.....

और हम रोडेशिया से बाहर निकल कर आ रहे थे और मैंने जहाज पर सवार होते वक्त एक लड़के और तीन लड़कियों को जो अमेरिकन पासपोर्टधारी थे देखा। और मैंने कहा.....मैं उनके पास तक चलकर गया और कहा, "हैलो! मैं देखता हूँ कि तुम्हारे पास अमेरिकन पासपोर्ट है।"

उसने कहा, "आप तो अंग्रेजी बोलते हैं।"

मैंने कहा, "जी हाँ! मैं —मैं एक अमेरिकन हूँ।"

उसने कहा, "अच्छा, यह तो बहुत अच्छी बात है।

मैंने कहा, "क्या तुम सफर कर रहे हो?"

उसने कहा, "जी नहीं, हम तो मिशनरी हैं।"

मैंने कहा "ओह, यह तो बड़ी ही अच्छी बात है। मुझे आप से मिलकर निश्चय ही बड़ी खुशी हुई है।

और मैंने कहा, "आप कहाँ से आये हैं? आप किस कलीसिया से हैं, या आप किसी संस्था से जुड़े हुए हैं, या आप मुक्त हैं?"

उसने कहा, "जी नहीं, हम तो मैथोडिस्ट हैं। हम विलमोर, कैन्टकी से आये हैं।"

मैंने कहा, "यह तो मेरे घर के लगभग पिछवाड़े ही है। मैंने कहा....उसने कहा, "ऐसा लगता है, कि आप भाई ब्रन्हम हैं जो यहाँ पर आये हुए हैं।"

मैंने कहा, "जी हाँ, श्रीमान। यह सच है।" ठीक वहीं पर ही उसने—उसने उसकी तबीयत दुरूस्त कर दी(समझे आप?) वह एक भी शब्द न बोल सका। और मैंने उस आचार-व्यवहार को भाँप लिया था जो उसने अपनाया था, मैंने उन लड़कियों पर दृष्टि डाली, और उन्होंने एक दूसरे को उस प्रकार से देखा। मैंने कहा, पुत्र, ज़रा एक मिनट रूको। वह और कुछ नहीं वरन एक लड़का ही था। और मैंने कहा....और वे लड़कियाँ थीं। और मैंने कहा, "मैं आप सब से एक मसीही के जैसे शिक्षा-सिद्धांत पर एक मिनट के लिए बातें करना चाहता हूँ, हम सब मसीही हैं, और हम यहाँ पर एक ही महान कारण की खातिर हैं। मैं तुम तीनों लड़कियों से और तुम युवक से यह पूछना चाहता हूँ, क्या तुम प्रभु यीशु मसीह के नाम में.....तुम ने कहा था, कि तुम यहाँ पर दो वर्षों से हो। क्या तुम किसी एक प्राण पर अपनी ऊंगली रख सकते होः किसी एक प्राण पर ऊंगली रख सकते हो जिसे तुमने प्रभु के लिए जीता हो?" वे ऐसा नहीं कर सके थे; वे एक भी प्राण नहीं जीत पाये थे।

मैंने कहा, "मैं तुम्हारी भावनाओं को बिलकुल भी चोट नहीं पहुँचाना चाहता हूँ। और मैंने कहा, जो तुम कर रहे हो उसके लिए मैं तुम्हारी सराहना करता हूँ, परन्तु तुम लड़कियों को तो अपने घर पर रहकर अपनी माँ की बर्तन आदि धोने के लिए सहायता करनी चाहिए। यह

बिलकुल ठीक बात है। तुम्हारा तो यहाँ पर कोई काम नहीं है। यह बिलकुल सच बात है।"

38 और किसी का भी प्रचार कार्य के क्षेत्रों में जाकर काम करने का कोई काम नहीं बनता है जब तक कि वह पवित्र आत्मा न पा ले और साक्षात् प्रकटीकरण करने वाली सामर्थ का प्रचार न करता हो; क्योंकि यही—यही केवल एक ऐसी चीज है जो उन लोगों को हरकत में लायेगी। और देखिए, आपको ये सब ख़िलाफतें तथा ऐसी ही और दूसरी बातें मिली हैं; ऐसा इसी लिए हुआ है, क्योंकि सच्चे सुसमाचार का उन पर प्रचार किया ही नहीं गया है। खैर, चूंकि यह उन्हें शाब्दिक रूप में ही दिया गया है, अतः देखिए, कि यह क्या है? यह तो लूथर काल के बचकर बाहर निकल आये हुओं की निरन्तरता ही है जहाँ इसने संसार को मुफ्त छापाखाना दिया या मुफ्त बाइबिलें दी गयीं, यह सही बात है।

39 अब, अब देखिए, यह काल; यह महान काल....अब आइये हम इसे आरम्भ करें। अब, मेरा मानना है, कि हम.... वह सातवां पद एक अभिवादन था। हम इसका अध्ययन कर रहे थे....

..और फिलेदिलफिया के.....को लिख; जो पवित्र और सत्य है; और जो दाऊद की कुंजी रखता है, जिसके खोले हुए को कोई बंद नहीं कर सकता और बंद किये हुए को कोई खोल नहीं सकता, वह यह कहता है:

यह एक अच्छा-खासा वक्तवय है; क्या यह नहीं है? मैं-मैं बस इस पर एक मिनट में वापस आने जा रहा हूँ; क्योंकि यह... यह यहाँ पर आगे के वचन के लेख पर लागू होता है।

मैं तेरे कामों को जानता हूँ (देख, मैंने तेरे साम्हने एक द्वार खोल रखा है, जिसे कोई बंद नहीं कर सकता है) कि तेरी सामर्थ थोड़ी सी है; और तू ने मेरे वचन का पालन किया है; और मेरे नाम का इंकार नहीं किया है।

अब, अब देखिएगा, उस महान प्रचारकार्य के अभियान के बाद जो भाईचारे की प्रीति में होकर सारी जातियों में फैल चुका था; अब वह समय आ रहा था कि जो उनके पास था उस पर अधिकार कर लिया जाये। साहित्य तथा इसके अतिरिक्त जो कुछ भी संसार के विभिन्न भागों में गया, उसके हम बिलकुल भी विरोध में नहीं हैं। अब, कलीसियायी संगठन वापस शिक्षा की ओर, वापस कामों की ओर फिर गया था । समझे?

जब एक बड़ा कलीसियायी संगठन स्थापित हो गया था, तो यीशु ने एक खुला द्वार स्थापित किया। जब वैसली वाला काल आ चुका था और मैथोडिस्ट कलीसिया पृथ्वी पर स्थापित हो चुकी थी, जब वह जड़े पकड़ चुकी थी और पनपने लगी थी, और एक उस बड़ी कलीसिया को बनाया जा रहा था जो कि यह आज है; जो कि महानतम प्रोटिस्टेन्ट कलीसियाओं में से एक है, तो उस समय पर जो एक मात्र कार्य तब हुआ- वह यह था, कि यीशु ने कलीसिया के लिए एक खुला द्वार स्थापित किया, इससे पहले कि वे लौदीकियायी कलीसिया के अंदर प्रवेश करते।

40 वह कारण जो मैं इसे इस प्रकार से कह रहा हूँ, यह है, ताकि आप उसे समझ सकें जो मेरा अध्यारोपण से तात्पर्य है। समझे?

यह मिशनरी काल से एक द्वार तक होता है। परन्तु आप देखते हैं, कि उसने....उसने उन्हें बताया था कि उनके पास दाऊद की कुंजी थी तथा ऐसा ही और कुछ था। परन्तु यहाँ उसने कहा था, कि उसने अब कलीसिया के साम्हने एक खुला द्वार रखा है.....प्रचार कार्य के उस काल के बाद और व्हाइटफील्ड; और..और उन सब दूसरों, और फिन्नी और शैन्की, और मूडी (मूडी जो कि आखिरी था) इसी प्रकार से आगे चलते हुए इस समय तक आयें... इसके बाद उसने कलीसिया के साम्हने एक खुला द्वार रखा था। ओह, अब, यह वह बात है जहाँ आपको दृष्टि लगाये रखनी है। यह फिलेदिलफियायी काल और लौदीकियायी काल के मध्य में होता है। यह एक अध्यारोपण है।

41 यीशु ही द्वार है। अब, क्या आप मेरे साथ यूहन्ना 10:17 निकालेंगे। अब आइये हम इसका समर्थन करें और इस बात में सुनिश्चित हो जायें, कि आप में से कितने हैं जो विश्वास करेंगे। और इसके बाद कोई कहेगा, "अच्छा, मैंने—मैंने तो कदापि नहीं.....उसने ही बस इसे कहा था। मैं इसे अर्थात् यूहन्ना के दसवें अध्याय का 17 वाँ पद पढ़ना चाहूँगा; यूहन्ना 10:17। यह बिलकुल ठीक है, कि हम इन वचनों को पढ़ते हैं। मुझे आप क्षमा करें, यह यूहन्ना 10:7 है, ना कि 17वाँ पद।

तब यीशु ने उनसे फिर कहा....मैं तुम से सच सच कहता हूँ, कि

भेड़ों (भेड़शाला) का द्वार मैं हूँ।

यह बात फिर से आशीष में आती है, हम मसीह के अंदर कैसे आते हैं? वह क्या है? भड़शाला! मैं अक्सर ही इसके विषय में हैरत किया करता था, कि यह क्या होता है? एक मनुष्य होने के नाते क्या वह द्वार हो सकता है?

अब देखिए, पूर्वी देशों में मुझे यह बात एक दिन तब मालूम हुई जब मैंने एक दिन चरवाहे पर ध्यान दिया- तो मुझे यह बात मालूम हुई; रात के समय में वह उन सारी भेड़ों को बाड़े के अंदर ले जाता है, वह उन सभों को एक द्वार के ज़रिये अंदर खदेड़ देता है। और जब वह उन सभों को अंदर कर देता है, तो उसके बाद वह उन सभों की गिनती करता है, ताकि देखे कि उनमें से प्रत्येक अंदर है। उसके बाद वह स्वयं द्वार पर लेट जाता है। उसको पार किये बगैर कोई भी भेड़ों के पास तक नहीं जा सकता है, या कोई भी भेड़ बाहर नहीं जा सकती है। ऐसे ही यीशु भेड़शाला का द्वार है। समझे?

42 और मैं ब्रिटिश वाली एक छोटी सी जीप में सवार होकर यात्रा कर रहा था, और मैंने अपने साथी जन से कहा....मैंने कहा, "वे हैं.....चरवाहे उस नगर से होकर आते हैं, और सीटी बजती है; और हर एक ने अपनी मोटरगाड़ियों पर जोर से ब्रेक मारा, और मैंने सोचा, "क्या मामला है?" और यह एक गडरिया था जो अपनी भेड़ों को लिये हुए शहर से होकर जा रहा था।

अब देखिए, पूरब में ऐसा नहीं होता है जिस प्रकार से यहाँ पर होता है। वे लोग अपने अपने सामानों को घर के सहारे बाजार-हाठों में बाहर...बाहर लगाकर रख देते हैं। और वहाँ पर सेव, नाशपातियाँ और तरह तरह के फल और अंगूर बड़े ही सुंदर ढंग से इस प्रकार से एक ठेले पर ढेर के रूप में लगे हुए हाते हैं। और उनमें से प्रत्येक दुकानदार वहाँ पर खड़ा हुआ होता है; और अपने फलों तथा वस्तुओं में से कुछ खरीदने के लिए आप को उकसाने का प्रयास कर रहा होता है।

43 खैर, यह वाला चरवाहा उस मुख्य सड़क से होकर सीधे सीधे जाने लगा। मैंने कहा, "भाई, यही है वह जहाँ पर लूटपाट होती है; मैं तो खड़ा होऊँगा और इसे दृष्टि डालकर देबूंगा।"

और उस भाई ने जो मेरे साथ था, मुझ से कहा, "भाई ब्रन्हम, आपको आश्चर्य होगा। आप देखते रहिए।"

सब कुछ थम गया था। वह चरवाहा आगे बढ़ता चला गया, वह कोई ध्यान नहीं दे रहा था, हर एक भेड़ उसके ठीक पीछे पीछे चले जा रही थी। यदि वह इस प्रकार से घूमता और मुड़ता, तो हर एक... भेड़ उसके पीछे पीछे घूमती, और उस से पिछली भेड़े उसके पीछे पीछे चलतीं, उस से पीछे वाली उसके जैसे ही करती, वह वैसे ही करती, वह वैसे ही आगे बढ़ती, वह वैसे ही मुड़ती।

ओह, इसी प्रकार से ही हमें उस महान चरवाहे का अनुकरण करना है। वह उस सड़क के बीचो-बीच से होकर जा रहा था, कि दूसरे छोर पर किसी जगह पर पहुँच जाये, और वे भेड़ें उसके पीछे पीछे एक कुत्ते के जैसे चली जा रही थीं। वे निगाहें ऊपर उठातीं, और उन वस्तुओं पर निगाह डालतीं, लेकिन वे उस चरवाहे का अनुकरण करती चली जाती थी। ओह, मुझे यह बात अच्छी लगती है! समझे?

मैंने कहा, "ओह, भाई, काश मैं इस भाषा को बोल सकता होता, तो मैंने ठीक इस समय ही प्रचार कर दिया होता।" ऐसा ही है! जी हाँ! वह....वह दांये या बांयं नहीं मुड़ा, वरन वह तो अपने चरवाहे के पीछे पीछे ही अटल बना रहा।

44 यही है वह जो सच्ची कलीसिया ने इस सारे सफर में इस महान चरवाहे-जो कि हमारी अगुवाई अनन्त जीवन, महान पवित्र आत्मा के अंदर करता है, पीछे पीछे चलने में अटल बनी रही है; वह इसकी ओर नहीं फिर रही है, क्योंकि यह वाली एक बड़ी फूलों के सेज़ वाली कलीसिया है, और इसके पास अमुकअमुक डॉक्टर और इसी प्रकार के अमुक-अमुक लोग हैं"; परन्तु वह तो उस महान चरवाहे के पीछे पीछे अटल बनी रहती है। जहाँ कहीं भी वह जाता है भेड़ उसका अनुकरण करती है। मेरी भेड़ मेरा शब्द जानती हैं और वे किसी अनजाने के पीछे नहीं चलेंगी।" यह सच है। वह....वह चरवाहा उन मिमियाने को तथा उन अन्य सभी कुछ को जानता है जो वे भेड़े करती हैं।

इसके बाद जब हम शहर से बाहर निकलें, तो यह बड़ी ही अचंम्भित करनेवाली बात थी। मैंने...मैंने देखा, वहाँ बाहर एक मैदान था, और कुछ पुरूष चारों ओर लेटे हुए थे; वहाँ बाहर उनके पास गदहे, और गायें और भेड़े और बकरियाँ तथा अन्य सभी कुछ था। और मैंने कहा, "अच्छा, वे लोग जो बाहर हैं वे क्या हैं?"

उसने कहा, "चरवाहे!"

और मैंने कहा, "क्या एक चरचाहा गदहे चरा रहा है?"

और उसने कहा, "जी हाँ, श्रीमान!"

ठीक है, मैंने कहा, मैंने —मैंने तो सोचा था, कि कि चरवाहे का अभिप्राय तो भेड़ से ही होता है।"

उसने कहा, "जी नहीं, एक चरवाहा तो एक गड़रिया, घास चराने वाला होता है। और आप के देश में उन्हें काउ-बॉय तथा इसी प्रकार का कुछ कहा जाता है।"

मैंने कहा, "ओह, मैं समझा, एक चरवाहा ही घास चराने वाला होता है।"

"जी हाँ !"

"वह गल्ले की देखभाल करता है।"

"यह सच है।" उसने कहा, "विचित्र बात तो रात में होती है, जहाँ आप....यह एक बड़ी ही अचम्भित करने वाली बात होती है....और चूँकि आप एक सेवकगण हैं, अतः मुझे आपको कुछ बताना चाहिए।" उसने कहा, "जब रात्रि का समय आता है.....यह सच है, कि वह उनमें से प्रत्येक की चरवाही करता है; वह उनकी चारों ओर अगुवाई करता है, और उनकी सहायता करता है; और यह देखता है, कि उन्हें सारे दिन भर भली वस्तुएं मिलें।

परन्तु जब रात का समय आता है, तो खच्चर और गदहें, और ऊँट, और जो कुछ भी उसके पास होता है, उसे मैंदान के अंदर छोड़ दिया जाता है। परन्तु वह उन भेड़ों को घेरता है, और उन्हें बाड़े में ले जाता है।"

45 मैंने कहा, "ओह, प्रभु, मुझे एक भेड़ बना दीजिए; जो कुछ भी आप करें।" समझे? क्योंकि जब रात का समय आता है, तो मैं भेड़शाला के अंदर जाना चाहता हूँ। द्वार से होकर अंदर आऊँ, द्वार से होकर ही बाहर जाऊँ।" यहाँ पर यूहन्ना 17:7 देखिएं, जहाँ उसने कहा था, मैं हूँ.....या यह बल्कि 10:7 है, जहाँ उसने कहा थाः -

भेड़शाला भेड़ों का द्वार में ही हूँ।

जितने मुझसे पहले आये, वे सब चोर और डाकू हैं; परन्तु भेड़ों ने उनकी न सुनी।

द्वार मैं हूँ यदि कोई मेरे द्वारा भीतर प्रवेश करेगा, तो उद्धार पायेगा और भीतर बाहर आया जाया करेगा और चारा पाएगा।

अब वह कहता है, "अब, मैंने इस कलीसिया के आगे...के आगे रखा है; मैंने फिलेदिलफियायी काल और लौदीकियायी काल के मध्य में एक खुला द्वार रखा है।" ओह, अब क्या आप इसे समझ गये हैं? और क्या आप ने अपनी समझ का टोप बिलकुल अच्छे से कसकर पहन लिया है? अब कान लगाइये! यह एक अच्छी बात है। मैं आपको बताता हूँ, यह तो चट्टान में पाये जाने वाला मधु है; हम तो स्वर्ण कणिकाओं को बाहर निकलकर चमका रहे हैं।

46 "मैं भेड़शाला का द्वार हूँ।" वह द्वार क्या है जो अब रखा गया था ?

आइये हम अपनी स्मृति को पीछे को दौड़ायें। मैथोडिस्ट के महान मिशनरी काल से ही यह पवित्रीकरण के संदेश समेत देश भर में चारों ओर फैल गया, लूथर धर्मी ठहरने वाले संदेश के द्वारा आगे बढ़ा; और वैसली पवित्रीकरण के संदेश के साथ आया। और मैथोडिस्ट काल के अंत पर जब यह जड़ें पकड़ने लगा और यह एक बड़ा संगठन बनने लगा, और जब भी कोई कलीसिया.....

अब सुनिएँ! यह एक कठोर बात है! परन्तु मैं यह चाहता हूँ, कि इतिहास में से ढूंढ ढांड़ करते हुए कोई कहीं पर से मुझे यह दिखाये, कि कोई भी वह कलीसिया जिसका परमेश्वर ने उदय किया और वह पिन्तुकुस्त वाले ही पथ से बिना किसी संगठन के ज़रिये ही आगे बढ़ी और ज्यों ही वह संस्थागत हुई त्यों ही वह मर गयी और फिर कभी न उठी। ओह, उनके सदस्यों की संख्या में तो वृद्धि होती चली गयी, पर उनके पास कभी कोई बेदारी नहीं थी। लूथर की बेदारी फिर कदापि न उठी, और न ही मैथोडिस्ट वाली बेदारी फिर कभी जागृत हुई, और ना ही पिन्तेकोस्तल वाली बेदारी फिर कभी जागृत होगी। जी नहीं, श्रीमान!

उन्होंने उसे संस्थागत कर लिया था; यही है वह जिसके लिए कलीसियायी कालों में परमेश्वर ने कहा था, कि वह इस चीज से.....नीकुलाइयों की शिक्षा से घृणा करता है।

47 अब, आप इसे स्मरण रखें, कि हम किसी के विरोध में नहीं बोल रहे हैं। भले लोग तो छितरे हुए हैं। परमेश्वर की भेड़े तो वहाँ बाहर सभी जगह हैं। यह सच है। यह सही बात है। चाहे वे मैथोडिस्ट हों, चाहे वे बैपटिस्ट हों, चाहे वे जो कोई भी हों, वे परमेश्वर के लोग हैं....यदि उन्हों ने परमेश्वर के आत्मा से नये सिरे से जन्म पाया है,

तो वे परमेश्वर के लोग हैं; परन्तु संस्थाओं ने उन पर शिकंजा कसा हुआ है। वे चिट्ठी लिये हुए मैथोडिस्ट से बैपटिस्ट, बैपटिस्ट से कैम्पेलाइट और वहाँ से इसी प्रकार की और दूसरी संस्थाओं में तब तक जाते हैं जब तक कि वे अपनी ही चिट्ठियों को जिन्हें वे एक जगह से दूसरी जगह पर ले जाते हैं बाहर निकालकर फेंक नहीं डालते हैं।

48 यह बिलकुल ठीक बात है।

अब देखिए, परमेश्वर किस प्रकार से उस काल के अंत में कहता है, "मैं भेड़ों का.....(भेड़शाला का)...द्वार हूँ।" अब, यह क्या द्वार था जिसे यीशु ने इन दो कालों के मध्य में खोला था? सन् 1906 ईसवीं के आसपास जब मैथोडिस्ट काल....और ....और ...और डविट मूड़ी तथा वे लोग दृश्य पर से ओझल होने लगे, तो लोगों के द्वारा पवित्र आत्मा का ग्रहण किये जाने का समय आरम्भ होता है; लोग अन्यान्य भाषाओं में बोल रहे थे और कलीसिया में वरदान वापस आ रहे थे। यह लगभग सन् 1906 ईसवीं की बात है जब वहाँ पर ऐसा हुआ था।

यह बिलकुल ठीक बात है, इसके बाद क्या घटित हुआ था? जब वे बढ़ने लगे, तो आप जानते हैं, कि सबसे पहला कार्य यह हुआ, कि उसके बाद उन्होंने पुरानी जरनल कॉन्सिल को जो आगे बढ़ रही थी संस्थागत कर डाला, अब वही अस्मबलीज़ ऑफ गॉड कहलाती है.. (समझे?) यह वह कलीसिया थी जिससे होकर वह अध्यारोपित हुई। और उसके बाद क्या हुआ? उसने एक खुला द्वार.....एक खुला द्वार स्थापित किया।

49 अब आइये हम बस इसे पढ़े , और मैं इसे ठीक वैसे ही शब्द दर शब्द लँगा जैसाकि वह इसे लेकर आता है। देखिए, "देखो"..आइये हम दृष्टि डालें। .....जिसे कोई बंद नहीं कर सकता।

—-मैंने तेरे साम्हने एक द्वार खोल रखा है.....

दूसरी ओर वह यह कहता है। मैं तेरे कामों को जानता हूँ देख, मैंने तेरे साम्हने एक द्वार खोल रखा

है, जिसे कोई बंद नहीं कर सकता।

"एक खुला द्वार!" यह क्या था? यह यीशु मसीह के सर्वोच्च परमेश्वर होने का प्रकाशन था, कि वह त्रिएकता का कोई दूसरा व्यक्ति नहीं है, वरन वह तो स्वयं परमेश्वर था जो देहधारी हुआ और उसने हमारे मध्य में डेरा किया। और यही प्रकाशन ही.. अब, यदि आप एक मिनट के लिए ध्यान देंगे, तो आइये हम थोड़ा सा और आगे पढ़ें।

..... जिसे कोई बंद नहीं कर सकता....तेरी सामर्थ थोड़ी सी है.....और तू ने मेरे नाम का इंकार नहीं किया है।

जहाँ यह पूर्वकाल में जब उसके नाम को खो दिया गया, तब से लेकर यह वह पहला समय था जब इस युग में इस समय उसके नाम के विषय में बोला गया है; और लूथर एक नाम के साथ बाहर निकल कर आया था कि वह जीवता तो है, पर वह था मरा हुआ ....(क्या यह सही है?).....वह पिता, पुत्र, और पवित्र आत्मा के नाम के साथ आता है।

और यहाँ पर दो कालों के मध्य में-खुला द्वार आता है-यहाँ पर यीशु का नाम फिर से बाहर निकल कर आता है। अब देखिए,यह उसका प्रकाशन है, कि वह क्या था, वह परमेश्वर था—यह उसके परमेश्वर होने का प्रकाशन है।

50 अब देखिए, यही है वह जो उसने सबसे पहले कलीसियायी काल में उज़ागर किया था। अब देखिए, जब यूहन्ना ने उसे सोने के सात चिरागदानों के बीच में खड़ा हुआ देखा, तो वह अपने हाथ बाहर निकाले हुए खड़ा था। यहाँ पर पहला, दूसरा, तीसरा, चौथा, पाँचवां, छठवां, सातवां चिरागदान है जहाँ वह अपने हाथों को क्रॉस के रूप में बाहर पसारे हुए खड़ा हुआ है। उसने कहा था, "मैं ही अल्फा और ओमिगा हूँ, दूसरे शब्दों में, "मैं ही आरम्भ में सर्वोच्च हूँ, मैं ही अंत में सर्वोच्च होऊँगा।"

उजियाला पूरब में उदय होता है, और पश्चिम में अस्त होता है। यह धूमिल सा, अंधेरे वाला समय रहा है; परन्तु सांझ के समय उजियाला होगा। ठीक जिस सुसमासचार की सामर्थ यहाँ एक हाथ पर पूरब में उदय हुई थी ठीक उसी सुसमाचार की सामर्थ अब यहाँ पर इस दूसरे हाथ पर पश्चिम में उदय होती है, "मैं ही अल्फा और ओमिगा हूँ; मैं ही आरम्भ हूँ और मैं ही अंत हूँ।" उसके हाथ में.....क्या आप इस बात को समझ गये हैं?

51 अब देखिए, उसने प्रकाशितवाक्य के पहले अध्याय में क्या किया था? उसने अपने सर्वोच्च परमेश्वरत्व वाले रूप को पहली कलीसिया पर.....इफिसुस की कलीसिया पर प्रकाशित किया था।

क्या यह सही है? परन्तु अब आप ध्यान दीजिए! इन कलीसियाओं में से हर एक में जो यहाँ से होकर आती चली जाती हैं उसने स्वयं अपने परमेश्वरत्व वाले रूप को अपने महिमामय रूप में प्रकट किया; परन्तु यहाँ इस अन्तिम वाली में वह अन्तिम बन जाता है—(जैड़ बन जाता है।)वह फिर से अपने मूल प्रारम्भ की ओर लौटता है जहाँ वह कहता है, "मैं ही प्रथम और अन्तिम हूँ।" यह प्रथम काल में कहा गया और अब यह अन्तिम काल है जहाँ पर उसने कहा, "मैं ही प्रथम और अन्तिम हूँ।" और.....

परन्तु आप कहते हैं, "वह कैसे हुआ? किस व्यक्ति ने उस बात को उजागर किया?" यह तो एक प्रकाशन ही था। आप जो यहाँ पर हैं आप में से बहुतेरों ने इसे पाया है, क्योंकि उसकी....अब, मैं कोई बात कहने जा रहा हूँ। दृष्टि डालिएं! उसकी सम्पूर्ण कलीसिया का निर्माण स्वयं उसके दिव्य प्रकाशनों पर ही हुआ है। क्या यह सही बात है? यदि आप इस बात का विश्वास नहीं करते हैं, तो आइये हम मत्ती 16:18 निकालें, और आप बस एक मिनट में यह देख लेंगे कि सम्पूर्ण प्रकाशन का निर्माण स्वयं उस पर ही हुआ है—उसकी सम्पूर्ण कलीसिया का निर्माण स्वयं उसके दिव्य प्रकाशनों पर ही हुआ है।

अब आइये हम यहाँ पर..... शुरूवात करें.....मैं कहूँगा, कि आइये हम लगभग 14वें पद से ही आरम्भ करें।

और उन्होंने कहा, कितने तो तुझे यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला कहते हैं:...

प्रश्न यह था.... यीशु ने पर कहा था....यीशु कैसरिसा फिलिप्पी के देश से आकर अपने चेलों से पूछने लगा, कि लोग मनुष्य के पुत्र को क्या कहते हैं? यह 13वां पद है; और यह अब 16:13 है:

और उन्होंने कहा,....

52 अब यह वह पहली जगह है जहाँ यीशु ने कलीसिया के बारे में कभी बोला....और यही है जिस प्रकाशन के विषय में उसने अंत में प्रकाशितवाक्य में बोला था।

....और उन्होंने कहा, कितने तो यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला कहते हैं.....और कितने एलिय्याह, ...और...और..या भविष्यद्वक्ताओं में से कोई एक कहते हैं।

उसने उन से (सब से; उस सम्पूर्ण झंड़ से) कहा, ...परन्तु तुम मुझे क्या कहते हो?

और शिमौन पतरस ने उत्तर देकर कहा, कि तू जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है।—-(ओह मेरे ख़ुदा!)..

और यीशु ने उसको उत्तर दिया, कि हे शिमौन योना (बर-जोना)के पुत्र, तू धन्य है, क्योंकि मांस और लोहू ने नहीं, परन्तु मेरे पिता ने जो स्वर्ग में है, यह बात तुझ पर प्रकट की है।

ओह मेरे परमेश्वर! दूसरे शब्दों में उसने कहा, "तुझे यह बात कभी किसी सैमनेरी में नहीं मिली। शिमौन योना के पुत्र, तेरे पास इसे पाने के लिए कोई और तरीका नहीं है—यह तो एक आत्मिक प्रकाशन है जो स्वर्ग से तुझ पर प्रकट किया गया है, कि मैं वह हूँ।"

यीशु ने कहा था, "यदि तुम यह विश्वास नहीं करते, कि मैं वह हूँ, तो तुम अपने पापों में मरोगे। मैं वही हूँ।"

यह बिलकुल ठीक बात है। .....और मैं तुझ से कहता हूँ, कि.....तू पतरस है, और मैं इस पत्थर पर अपनी कलीसिया बनाऊँगा; और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे।

यह क्या है? आत्मिक, आत्मिक, आत्मिक सत्य; प्रभु का वचन!

53 अब, हमें यह मालूम होता है, कि यह महान प्रकाशन जो परमेश्वर ने यहाँ पर इस अन्तिम दिनों में अपनी कलीसिया को दिया—कि परमेश्वर इन दोनों कालों के मध्य में एक खुला द्वार भेजता है, और वह स्वयं अपने को इन दो कालों के मध्य में एक खुले द्वार के रूप में प्रकट करता है। ऐसा न तो लौदीकियायी काल में हुआ, और ना ही ऐसा इस दूसरे काल में अर्थात् फिलेदिलफियायी काल में हुआ; परन्तु यह तो बीच में ही हुआ, यह तो एक अध्यारोपण ही था, क्योंकि मैं इसे थोड़ी देर में ही आगे बढ़ते हुए साबित करूंगा, और आप इसे समझ जायेंगे। समझे आप? हम इसे इतना अधिक भरपूर बना देंगे, कि आप इस बात में सुनिश्चित हो जायें, कि आप इसे समझने में नहीं चूकेंगे; यदि आप बस इसे समझ लेना चाहते हैं। समझे? यह बिलकुल ठीक बात है।

अब, उसका अपना प्रकाशन यह है, कि उसने अपनी कलीसिया का निर्माण इसी पर किया है। अब कितने ऐसे लोग हैं, जो यह जानते हैं, कि यह सच है ? उसने अपनी कलीसिया का निर्माण स्वयं अपने ही प्रकाशन पर किया।

54 यह बिलकुल ठीक बात है।

अब, देखिए, उसने क्या कहा था? "इसे कोई मनुष्य बंद नहीं कर सकता है।"

मैं तेरे कामों को जानता हूँ; देख, मैंने तेरे आगे एक खुला द्वार रखा है....

यह खुला द्वार क्या है? यीशु मसीह के सर्वोच्च परमेश्वर होने का प्रकाशन! उसने यहाँ पीछे.....पूर्व समय में इस काल में अपनी प्रथम कलीसिया से क्या कहा था? उसने कहा था, "मैं वही हूँ जो था, जो है और जो आने वाला है। मैं ही प्रथम और अन्तिम हूँ। मैं ही सर्वशक्तिमान हूँ।" उसने यह बात तीन बार तीन अलग अलग जगह कही-यहाँ इस पहली कलीसिया पर उसने स्वयं अपने को परमेश्वर के रूप में प्रकट किया। और इससे पहले कि वह अन्तिम कलीसियायी काल में जाता, उसने कहा, "मैंने तेरे आगे एक खुला द्वार रखा है।"

यदि आप इस प्रकाशन को देखना चाहते हैं, तो यह यहाँ पर है जहाँ पर उसने अपनी कलीसिया का निर्माण किया था। और केवल एक ही तरीका है जिसके द्वारा वह अपनी कलीसिया को ले सकता है कि वह उसे उस प्रकाशन की ओर फेरे कि वह क्या है। यह सच है।

55 देखिएगा! जब अब्राहम ने एक वाचा बांधी थी—या उस दिन जब परमेश्वर ने अब्राहम के संग एक वाचा ठहरायी थी, तो उसने कहा था, "यह देखते हुए कि मैं बूढ़ा हो गया हूँ, ये बातें कैसे होंगी; और मेरा एक मात्र वारिस यह मेरा दमिश्की दास एलीज़ेर है?"बोला, "मैं एक बूढ़ा हूँ और तू ने मुझ से एक बालक की प्रतिज्ञा की है। तू इसे कैसे करेगा? यह कैसे किया जायेगा?"

और स्मरण रखिए, वह सो गया; उस पर एक ऐसी भारी नींद छा गयी जैसाकि हर एक मनुष्य पर छा जाती है:मौत। और उसके बाद उसने ध्यान दिया, कि उसके आगे से धुंआ भरा जलता हुआ पलीता आगे चला जाता था। हर एक पापी इस योग्य है, कि नरक में जाये। उसने एक पशु मारा था; एक -एक कलोर, एक बकरी, एक पिंडुक, और एक कबूतर के बच्चे को भी मारा था। उसने पिंडुक और कबूतर के कदापि टुकड़े नहीं किये थे। और इसके बाद यह छोटा सा श्वेत उजियाला वहाँ से आगे गया और उन पशुओं के कटे हुए टुकड़ों में से होकर आगे पीछे गया; वह अब्राहम के संग अपनी वाचा को दृढ़ कर रहा था।

56 अब देखिए, जापान में कैसे होता है; यदि यहाँ पर कोई जापानी इंसान होता, तो आप जान जाते, कि वे जापान में किस प्रकार से वाचा दृढ़ करते हैं? वे एक दूसरे के ऊपर नमक फेंकते हैं। वे चुटकी भर नमक लेकर नीचे बैठ जाते हैं, और बातें करते हैं, "क्या तुम अमुक-अमुक काम करोगे?"

जी हाँ, मैं अमुक-अमुक काम करूंगा।"

इसके बाद वे वाचा ठहराते हैं; वे थोड़ा सा नमक लेते हैं और एक दूसरे पर डालते हैं, क्योंकि नमक संरक्षित रखने वाला एक पदार्थ है। समझे? यह बिलकुल ठीक बात है। वे एक दूसरे के ऊपर नमक फेंकते हैं, यह एक वाचा होती है।

अमेरिका में हम इस प्रकार से वाचा ठहराते हैं, हम कहते हैं, "अच्छा, क्या आप इस निश्चित काम को करोगे?" "मैं इस निश्चित काम को करूंगा।"

और पहली बात आप जानते हैं, हम एक दूसरे से हाथ मिलाते हैं, और कहते हैं, "इसपर हाथ मिलाओ।" यह एक वाचा होती है।

57 परन्तु पूर्वी देशों में वे इस प्रकार से वाचा ठहराते थे, कि वे किसी बात को लिख लिया करते थे। और वे इकरारनामा लिख लिया करते थे; और अब्राहम के समय में तो वे एक पशु को वध करते थे। वे पशु को चीर कर टुकड़े कर देते थे, और उसके बीच में खड़े होते थे...इस प्रकार इकरारनामा लिखते थे, और उसे इस प्रकार से फाड़ देते थे। और उनमें से एक जन उसका एक टुकड़ा ले जाता था तथा दूसरा वाला दूसरा टुकड़ा ले जाया करता था। और इसके बाद वे एक शपथ खाते थे, कि यदि वे इस इकरार को निभाने में असफल होते हैं, तो उनके शरीर इस मरे हुए पशु के जैसे हो जायें।

और अब, केवल एक ही तरीका है जो इस इकरार को कभी निभाया जा सकता है... आप इसकी नकल कदापि नहीं कर सकते थे। इसे तो आपस में एक साथ जुड़ कर ठीक वही बात बनाना होता था।

58 अब देखिए, परमेश्वर अब्राहम को यह दिखा रहा था, कि वह क्या करने जा रहा था? यह ये था, कि वह अब्राहम के वंश को इसहाक के ज़रिये से होते हुए यीशु को लेने जा रहा था; और उसने उसे कलवरी पर लिया, और वहाँ पर उसने उसे चीरा। उसने उसे चीर कर उसमें से.....उसकी देह को चीर कर आत्मा को अलग किया, उसने देह को जिलाया, और उसे परम प्रधान के दांयी ओर विराजमान किया; और पवित्र आत्मा को कलीसिया के पास वापस भेजा। वह परमेश्वर की वाचा था, उसे चीरा गया, हमें आत्मा मिला; उसके पास देह है। और जब वह वापस आता है, तो वह आत्मा जो हमारे अंदर है उसके साथ एक दुल्हन के रूप में जुड़ जाता है। आमीन।

उससे कोई भी नामधारी कलीसिया बिलकल भी नहीं जुड़ती है। जी नहीं! यह तो विशुद्ध रूप से व्यभिचाररहित, पवित्र आत्मा से जन्म पाना है। यही सारी बात है। यही एक वाचा है।

59 अब, अब देखिए, हमें यह मालूम होता है, कि उसने कहा था, "मैंने तेरे साम्हने एक खुला द्वार रखा है।" और मैं इसकी परवाह नहीं करता हूँ, कि कितनी मानवनिर्मित संस्थाऐं, या नामधारी कलीसियाऐं उठ खड़ी होती है, अद्योलोक के फाटक भी उसे बंद नहीं कर सकते हैं। इसे शिकस्त देने का तो केवल एक ही तरीका है; कि —कि उसमें शामिल हो जाया जाये। यही सारी बात है। आप इसमें शामिल नहीं हो सकते हैं, अतः आपको तो इसके अंदर जन्म लेना होता है। यह सही बात है। अतः कोई भी सर्वोच्च परमेश्वर वाले संदेश को और यीशु मसीह के नाम के बपतिस्मे को कदापि नहीं रोक सका। अद्योलोक के फाटक उस पर कभी भी प्रबल नहीं होंगे।

आप कहते हैं, "आप कैसे जानते हैं कि यह सही है?"

यह वचन से बिलकुल ठीक ठीक मेल खाता है और अन्य कोई दूसरा इसके विषय में कुछ नहीं कह सकता है। यह बिलकुल ठीक बात है। यही वचन है। कोई भी ऐसी जगह नहीं है जहाँ कभी किसी का पिता, पुत्र, और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा हुआ हो।

60 इस महान संत पौलुस ने जो इफिसुस की कलीसिया का दूत था, उसने उस हर एक व्यक्ति को जिसका बपतिस्मा नहीं हुआ था फिर से बपतिस्मा लेने की आज्ञा दी थी—इससे कोई मतलब नहीं है, कि आप का बपतिस्मा किस प्रकार से हुआ था; यदि आपने यीशु मसीह के नाम से कभी भी बपतिस्मा नहीं लिया है, तो उसने आपको यह आज्ञा दी थी, कि आप आकर यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा लें।

उसने कहा था, "यदि स्वर्ग से भी कोई दूत आकर इसके अतिरिक्त कुछ और ही सिखाये, तो वह स्रापित हो।"

अतः आप देख सकते हैं, कि अन्तिम दिनों में कैसा दूत आता है; और जब वह बाहर आता है, तो उसके पास किस प्रकार का संदेश होता है। हम इसे शायद उसी की ओर लेकर आगे बढ़ते चलें। परन्तु मैं आपको बता रहा हूँ, कि जब वह आता है, तो वह यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मे का प्रचार करेगा। यदि आप इस बात का विश्वास नहीं करते हैं, तो आप कल रात को वापस फिर से आना और मैं यह बात आप को पवित्रशास्त्र के द्वारा दिखाऊँगा। वह निश्चित रूप से ऐसा ही करेगा।

और हृदयों का ख़तना, और दिव्य आश्चर्यकर्म, और सामर्थों का कार्य किया जाना बिलकुल ठीक वैसा ही होगा जैसा यह उनके पास पिन्तेकुस्त के दिन पर था; पिन्तेकुस्त वाली मूल आशीष उन शेष बचे हुए थोड़े से लोगों के पास फिर से आयेगी, ताकि उन्हें ऊपर उठा कर ले कर जाये। वह वाचा बिलकुल ठीक उसी प्रकार से ही होगी जैसा कि इसे सबसे पहली बार चीर कर अलग किया गया था।

61 ओह, मैं उससे प्रेम करता हूँ, मैं बहुत अधिक आनन्दित हूँ, मैं बहुत अधिक आनन्दित हूँ; मैं...मैं इसका काफी ज़ोर से इज़हार नहीं कर सकता हूँ। मैं बहुत अधिक आनन्दित हूँ, कि मैं कह सकता हूँ, कि मैं उनमें से एक हूँ। मैं बहुत ही आनन्दित हूँ। मैं चाहता हूँ, कि मेरे सारे भाई-बन्धु उसी प्रकार के होते!

मैं बस यही चाहता हूँ, कि इस महान घटना को देखने के लिए यहाँ संसार में मेरे भाई और बहन और मेरे अमूल्य मित्र होते! मैं....मैं.....मैं आज रात्रि इस बात की इच्छा रख रहा होऊँगा, परमेश्वर यह जानता है। मेरे पास मेरा एक छोटा लड़का ज़ोज़ेफ और छोटी लड़की सारा और रिबैका हैं जिनका मुझे पालन पोषण करना है, मेरे पास एक अति प्यारी पत्नी है जिससे मैं जुदा होने से नफरत करता हूँ, परन्तु यदि मुझे यह पता चला जाता है, कि उस पार मेरा भाई....वे लोग हैं जिन्हें मैं इस जगत में जानता हूँ, जो उसको ग्रहण कर सकते हैं, और इसका विश्वास कर सकते हैं, और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो सकते हैं, तो मैं ठीक इसी समय चले जाने के लिए तैयार हो जाऊँगा। यह बिलकुल ठीक बात है। समझे? ओह, काश मैं बस कर सकता होता.....

और आप कर नहीं सकते हैं..... यदि आप नम्र होकर बातें करते हैं, तो लोग सोचते हैं, कि आप उन पर किसी बात को थोपने की चेष्टा कर रहे हैं। और..और करने के लिए तो केवल एक ही काम है, कि वचन के साथ अडिग बनकर रहा जाये, और वहाँ पर उसे दृढ़ता से स्थिर कर दिया जाये। यह बिलकुल सही बात है, कि उसके साथ अडिग बनकर रहा जाये। ओह, मैं उससे कैसा प्रेम करता हूँ।

62 उसका स्वयं अपना एक प्रकाशन है—उसका सर्वोच्च परमेश्वर होने का एक प्रकाशन है। उसने क्या किया था?कैसे भी हो, मैं बस इसे छोड़ नहीं सकता हूँ। उसने इसे उस कलीसिया पर प्रकट किया जो इफिसुस काल में थी। क्या यह सही बात है? और ऐसा तब हुआ था जब उजियाला-मसीही उजियाला चमकने के लिए पहले पहल प्रकाश में आया था। क्या यह सही बात है? पवित्र आत्मा वाले काल का आरम्भ यहाँ पर इफिसुस से शुरू हुआ था। और नबी ने कहा था, कि "एक ऐसा दिन आएगा, जब ना तो दिन होगा और ना ही रात, वरन सांझ के समय उजियाला फिर से वापस आएगा।" क्या आप इसे देखते हैं? समझे?

परन्तु देखिए, निराशा के इस दिन में वहाँ से होकर आते हुए.....यहाँ इन सब नीरस संस्थाओं तथा ऐसे ही सब से गुजरते हुए परन्तु यहाँ इन अंत के दिनों में उसने एक खुला द्वार स्थापित किया है। यीशु ने कहा था, "मैं ही वह द्वार हैं।"

63 क्या कभी आपने उसे यह कहते हुए सुना, कि "मैं फाटक हूँ; मैं मार्ग, सत्य और ज्योति हूँ"? समझे? क्या आप ने उसे कभी यह कहते हुए सुना, "सकरा है। फाटक और सकेता है मार्ग"?

क्या आपने ध्यान दिया कि सकेता का अक्षरविन्यास कैसा है? स-के-ता (S-t-r-a-1-t) अर्थात् जल ! एक सकेता का अर्थ जल होता है, जिसका अक्षरविन्यास कुछ इस प्रकार से है: S-t-r-a-i-g-h-t समझे? सकेता! जल ही मार्ग है। और वह जल ही फाटक है, और सकेता हैइ वह मार्ग।

वह जल क्या है? फाटक, द्वार! देखिए, खोला जाना....."जल से होकर ही प्रभु यीशु मसीह के नाम में मार्ग है। सकरा है फाटक और सकेता है मार्ग जो —यीशु—जल ही मार्ग है...प्रभु यीशु के नाम में ही मार्ग है...जिससे अंदर प्रवेश किया जाता है।"

"तुम में से हर एक मन फिराये, और अपने अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले, जबकि तुम कलवरी की ओर निहारते होंगे, तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे। क्योंकि यह प्रतिज्ञा तुम और तुम्हारी संतानों के लिए की गयी है।

उनमें से कुछ कहते हैं कि, "यह तो केवल प्रेरितों के लिए ही थी।"

"...क्योंकि यह प्रतिज्ञा तुम और तुम्हारी संतानों और दूर दूर के उन लोगों के लिए भी है जिन्हें प्रभु हमारा परमेश्वर अपने पास बुलायेगा।" यही है....यही सारी बात है। "जितनों को प्रभु हमारा परमेश्वर अपने पास बुलायेगा।" यदि आप उसी नुस्खे के मुताबिक आते हैं, जैसा यह पढ़ा गया है, तो यह प्रतिज्ञा आप में से हर एक के लिए है। आप यह न कहें, "ठीक है, मैं तो इस मार्ग से इधर-उधर से घुस जाऊँगा ।"

64 आप जानते हैं, कि एक बार एक ऐसा इंसान था जो वहाँ पर इधर-उधर से आ गया था, और किसी दूसरे ही मार्ग से अंदर घुस गया था। क्या आप यह जानते हैं? क्या कभी आपने इस दृष्टांत को सुना है? एक मनुष्य था जो इधर-उधर से वहाँ पर घुस गया था और किसी और ही मार्ग से अंदर आ गया था।

अब देखिए, पूर्वी प्रांतों में ऐसा होता है, जब वे...वे विवाह के भोज पर होते हैं....हम इसे उस सुबह तब लेंगे जब हम विवाह के भोज का अध्ययन करेंगे, कि वह मनुष्य किस प्रकार से अंदर घुस आया था। हम इसे सुबह के समय लेने की कोशिश करेंगे। मैं इसे इसी समय ही बतलाने जा रहा था, परन्तु इसे छोड़ देता हूँ। सुबह देखेंगे, कि वह मनुष्य विवाह के भोज से.....विवाह के भोज पर वहाँ पर किस प्रकार से अंदर घुस आता है. यह बिलकुल ठीक बात है, कि

"सकरा है फाटक और सकेता है मार्ग।" जल ही वह फाटक है, जो प्रभु परमेश्वर की ओर जाने वाला प्रवेश-मार्ग है।

65 "मैंने एक खुला द्वार स्थापित किया है। मेरे पास कुंजियाँ हैं। मैं ही एक ऐसा हूँ जो उसे खोल सकता है; मैं ही एक ऐसा हूँ जो उसे उज़ागर कर सकता है। मेरे पास ही कुंजियाँ हैं।" क्या यह सही है? "कोई मेरे पास नहीं आ सकता है जब तक कि पिता ही उसे मेरे पास खींच न लाये;और जितनों को पिता ने मुझे दिया है वे सब मेरे पास आऐंगे।" किसी भी मनुष्य का उद्धार और किसी के द्वारा नहीं, वरन यीशु मसीह के द्वारा ही हो सकता है; किसी कलीसिया के द्वारा नहीं, किसी संस्था के द्वारा नहीं, किसी बिशप के द्वारा नहीं, किसी पोप के द्वारा नहीं, वरन केवल यीशु मसीह के द्वारा ही उद्धार हो सकता है।

उसी के पास कुंजियाँ हैं, वही केवल एक ऐसा है जो कर सकता है... उसके पास किस की कुंजियाँ हैं? दाऊद की, वह भावी सहस्राब्दि(मैलेनियम) जो आ रहा है, वह उसमें दाऊद के सिंहासन पर विराजमान होगा। "मेरे पास दाऊद की कुंजियाँ हैं; मैंने ही इस द्वार को खोला है, और कोई भी इसे बंद नहीं कर सकता है। कोई और नहीं, वरन मैं ही इसे खोल सकता हूँ। और कोई भी मेरे इस खोले हुए को बंद नहीं कर सकता है।"

66 ऐसा कैसे हो सकता है? कोई मनुष्य कैसे यह जान सकता है, कि वह मसीह है, जब तक कि वह स्वयं अपने आप को उस पर प्रकट न करे? समझे? वह स्वयं अपने आप को प्रकट करता है। उसी के पास कुंजी हैं। वही उसे खोल सकता है, या उसे वैसा ही छोड़ सकता है। समझे? "मेरे पास ही द्वार की कुंजी हैं।

मैं ही द्वार हूँ। मैं ही मार्ग हूँ। मैं ही सत्य हूँ। मैं ही ज्योति हूँ। (ओह!) मैं ही अल्फा हूँ। मैं ही ओमिगा हूँ। मैं ही प्रथम और अन्तिम हूँ। मैं ही पिता हूँ। मैं ही पुत्र हूँ। मैं ही पवित्र आत्मा हूँ। मैं हूँ। ना कि मैं था, या मैं होऊँगा। मैं हूँ जो मैं हँसो हँ.....मैं वह सम्पूर्ण बात हूँ। मैं हूँ ना कि मैं था, या मैं होऊँगा। मैं हैं जिसका अर्थ होता है, जीवित उपस्थिति अनन्तता के लिए। समझे? मैं हूँ। मैं ही हमेश था, मैं ही हमेशा रहूँगा, जैसा मैं अब हूँ वैसा ही मैं हमेशा था और वैसा ही मैं हमेशा रहूँगा।" समझे? वह—वह तो बस मैं ही हूँ।

67 उसके पास दाऊद के राज्य की कुंजियाँ हैं, कोई भी मनुष्य उसे बंद नहीं कर सकता है। 7वाँ पद इस बात को साबित करता हैं,.. (बिलकुल ठीक है).. कि उसके पास दाऊद की कुंजियाँ हैं, कोई मनुष्य उसे बंद नहीं कर सकता है।

आइये हम जल्दी से यह देखें कि अगली बात क्या है।

...तेरी सामर्थ थोड़ी सी है.....

ओह, वह उस छोटे झंड़ से जो यहाँ पर है यह कहता है, "अब तेरी सामर्थ थोड़ी सी है।" इसका क्या अभिप्राय है? यह एक ऐसे ही मनुष्य के जैसा है जो मर रहा हो, वह अपने आप को झंझोंड़ रहा हो, अपने को थोड़ा सा जागृत कर रहा हो, जीवन की ओर बढ़ सा रहा हो। "तू उन पुरानी मरी हुई लाशों में से तथा इसी प्रकार की अन्य सभी कुछ में से बाहर निकल कर आया है; तू थोड़ा सा जीवन की ओर बढ़ा है, तू अपने आप को थोड़ा सा झंझोड़ रहा है, एक प्रकार से अपने आप को जागृत कर रहा है। "तेरी पास थोड़ी सी ही सामर्थ है,परन्तु अब मैंने तेरे साम्हने एक खुला द्वार रखा है।"

ज्यों ही वे लूथरनवाद और पोप-वाद से तथा उन सब और दूसरों मतों, और मैथोडिस्टवाद से; तथा ऐसी ही सारी बातों में से बाहर निकल कर आये, तो उसने कहा था, "मैंने तेरे साम्हने एक द्वार खोल रखा है; अब तेरे पास बस थोड़ी सी ही सामर्थ है, तू इसके विषय में क्या करने जा रहा है? मैंने तेरे साम्हने एक द्वार खोल रखा है, ताकि या तो तू उसमें से होकर अंदर चल सके, या बाहर निकल सके, तू जो चाहे वह कर। तेरे साम्हने एक द्वार रखा है। तेरी सामर्थ थोड़ी सी है, तुझ में बस जीवन आने सा लगा है"

68 ठीक ऐसा ही आरम्भिक कलीसिया के साथ हुआ था। ध्यान दीजिए, कि लौदीकियायी कलीसिया काल के अंत पर वे फिर से कामों की ओर लौट जाते हैं। अब क्या आप यहाँ पर ध्यान देंगे, ताकि आपको यह दिखाऊँ कि यह कलीसिया इन दो के बीच पायी जाती है, यदि आप लौदीकियायी काल पर या लौदीकियायी कलीसियायी काल पर ध्यान दें, तो वह कहता है, "मैं तेरे कामों को जानता हूँ।" वह ऐसा लौदीकियायी काल के ठीक अंत पर कहता है। यह क्या था? "तेरे काम, और वह स्थान जहाँ शैतान का सिंहासन है।" शैतान का सिंहासन क्या था? देखिए, वे फिर से वापस एक नामधारी कलीसिया के अंदर चले गये थे।

तुम असम्बली ऑफ गॉड़, और पिन्तेकोस्तल वननैस, और चर्च ऑफ गॉड़ के लोगों, ओह, भाइयों, क्या आपको नहीं दिखाई देता, कि आपने क्या किया है? तुम वापस ठीक उसी चीज के अंदर ही चले गये जिससे परमेश्वर ने घृणा की थी—जिसने भाईचारे की प्रीति को तोड़ा है। असम्बलिस् ऑफ गॉड़ पर दृष्टि डालिए, संसार में जो सबसे बढ़िया लोग हैं उनमें से कुछ असम्बली ऑफ गॉड़ में पाये जाते हैं। आप (यूनाइटड पिन्तेकोस्तल कलीसिया) संयुक्त पिन्तेकोस्तल कलीसिया पर नज़र डालें, वहाँ पर ऐसे बढ़िया लोग हैं जिनसे आप ने जीवन में कभी मुलाकत की हो। आप चर्च ऑफ गॉड़ पर नज़र डालें। और उन संस्थाओं के कारण वे एक दूसरे से लड़ते झगड़ते हैं, और एक दूसरे की पोल खोलते हैं, और एक दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप लगाते हैं, और एक दूसरे को "शिकरे का गोश्त" और "चूहे का बिल" कहते हैं। क्यों, यह एक अशोभनीय बात है। 170. एक चीज है जिससे परमेश्वर घृणा करता है, वह हैः भाइयों के बीच बैर का बीज बोया जाना। और यह सही बात है। और ये संस्थाएं ही हैं जिन्होंने ऐसा किया है। वह भाइयों के बीच बैर का बीज बोती है। हमें तो बीच में खड़ा होना चाहिए और कहना चाहिए, "हम भाई हैं।"

हम बटे हुए नहीं हैं,
हम सब एक ही देह में है।
हमारी एक ही आशा, एक ही शिक्षा,
(बाइबिल की शिक्षा)
एक ही प्रेम है।
मुझे यह पुराना गीत, "मसीही सिपाही आगे कदम मार" ,पसंद है। जी हाँ, श्रीमान!

69 लौदीकियायी के अंत पर वे वापस कामों की ओर लौट जाते हैं, या पिन्तेकोस्तल कलीसियाऐं नामधारी कलीसियाओं की ओर फिर जाती हैं।

आइये हम 15 वाँ पद लें। मुझे यहाँ पर प्रकाशितवाक्य के तीसरे अध्याय का 15वाँ पद मिल गया है। और देखते हैं, कि क्या यह सही नहीं है। प्रकाशितवाक्य 3, और-और—या हम देखें कि क्या मैंने इसे ठीक लिखा हुआ है। प्रकाशितवाक्य.... ओह, नहीं, नहीं, मैं —मैं गलत कह रहा था, यह पंद्रहवाँ पद है। यह इसी अध्याय का ही पंद्रहवाँ पद है, जो ठीक इसी बात को यहाँ पर दिखाता है। जी हाँ!

मैं तेरे कामों को जानता हूँ, कि तू न तो ठंड़ा है और न गर्मः.....

"मैं तेरे कामों को जानता हूँ।" ये यही दिखाता है, कि वे फिर से अपनी पहली वाली चीज की ओर ही लौट गये थे, वे अपनी सामर्थ के साथ वापस पिन्तेकोस्तल नामधारी कलीसियाओं की ओर ही लौट गये थे । इस अध्याय का पंद्रहवाँ पद ऐसा ही बताता है। यह बिलकुल ठीक बात है।

70 दो कालों के मध्य में—नीकुलाइयों वाली शिक्षा के दो नामधारी कलीसियायी कालों के मध्य में उनकी सामर्थ थोड़ी सी रह गयी थी। अब देखिए, उस काल में जब यहाँ पर लूथरन बन गयी थी, तो वे वापस नीकुलाइयों की ओर ही फिर गये थे, और उनके पास बड़े बड़े आर्कबिशप तथा इसी प्रकार के और दूसरे लोग हो गये थे; और इसके बाद वैसली आता है, और उन्होंने केंन्टबरी का बिशप तथा इन सब विभिन्न महान .....को, उन कलीसियाओं में तथा ऐसों में ही बना लिया था। इसके बाद यहाँ पिन्तेकोस्तल में; वे वापस फिर से ठीक उसी चीज की ही ओर लौट गये थे, और उनके पास ये सब बड़ी बड़ी कलीसियाऐं और नीकुलाइयों की शिक्षा हो गयी थीं।

परन्तु इन दो कालों के मध्य में उसने एक द्वार खोला, और कलीसिया को इतनी थोड़ी सी सामर्थ दी, कि वह पुन जागृत हो, ताकि वह अपना सिर हिलाकर दृष्टि डालकर सुदूर बाहर देखे, कि वह कहाँ पर थी...ताकि....वह प्रकाशन प्राप्त करें। वह मुड़ा और उन किसी भी गहरे झटकों को देखा; आप जानते हैं.....और आप जानते हैं, कि पहली बात यह होती है। वह अपना सिर हिलाने लगा और चारों ओर दृष्टि डालने लगा; और उसने अपना सिर हिलाया।

71 खैर, गत रात्रि मैं उसके बारे में एक स्वप्न देख रहा था। चार्ली, मैंने सोचा था, कि मैंने एक गिलहरी को गोली मार कर डाल से नीचे गिरा दिया है। और मैंने वहाँ पर एक बूढ़ी स्त्री देखी। ओह, वह मुझ से बड़ी ही क्रोधित थी, वह आकर मुझे झपट लेने को थी। और इस गिलहरी के गले में एक छोटा सा श्वेत तार पड़ा। हुआ था। और उस छोटे से जीव ने वहीं पर पड़े हुए अपने सिर को हिलाकर दो या तीन बार मुझे देखा; और वह वापस सीधी ही जंगलों में उतनी तेजी से दौड़कर चली गयी जितनी तेजी से वह जा सकती थी।

आप जानते हैं, कि उस बूढ़ी स्त्री का अर्थ शायद कलीसिया है। क्या शायद ऐसा नहीं है? उसने मुझ पर झपटने की कोशिश की थी; मैं कैसे न कैसे उससे दूर भाग गया था। और ....परन्तु; ओह, बस बहुत थोड़ा सा ही उजियाला था कि जान जाऊँ .....मैं जानता हूँ, कि मैं सड़क पर चला गया था; और वह मुझे वहाँ पर काट डालने जा रही थी और मैंने अपनी फोर्ड कार पीछे को तेजी से घुमायी; उन्होंने इसके पीछे को एक पगडूड़ी बनायी हुई थी; मैंने पूरी मोटर गाड़ी वापस घुमायी और दूसरे रास्ते पर निकल पड़ा; और उसे इससे दूर रखा कि वह मुझ पर झपट न पड़े। मैं बस उस से इस तरह से बच निकला....

72 "अब तेरे पास थोड़ी सी सामर्थ रह गयी है; अतः तू सचमुच में इस समार्थ का उपयोग अपने मुखमंड़ल को दो नामधारी कलीसियाओं के मध्य में फेरने के लिए करना चाहता है। क्या आपने इस पंक्ति पर ध्यान दिया है, कि तू ने मेरे वचन का पालन किया है?अब आप यहाँ पर इससे अगले पद पर ध्यान दें। ....तेरी सामर्थ थोड़ी सी है और तू ने मेरे वचन का पालन किया है....

"मेरे वचन का पालन किया है; और यही है वह जिससे उन्हें अपनी सामर्थ मिलती थी। इसी प्रकार से ही उन्हें प्रकाशन प्राप्त होता था। वह जिसने तब बाइबिल को थाम लिया था जब लूथर ने इसे छापा था.....और यही वैसली वाले काल से तथा और दूसरे कालों से होकर आगे आती है; और उन्होंने इसे थाम लिया था और वचन का पालन किया था; और यीशु मसीह के इस प्रकाशन को देखा, कि परमेश्वर हमारे मध्य में देहधारी हुआ; और जल का बपतिस्मा यीशु के नाम में ही है; अतः वे ठीक उसके अंदर चले गये। आप ऐसी ही स्थिति में हैं। उन्हें....तब उन्हें इसका नाम मिला। समझे?

क्यों, यह बात तो समाचारपत्र को पढ़ने से भी अधिक सुस्पष्ट है। समझे? बस.....और आप इसका इंकार नहीं कर सकते हैं; क्योंकि इसकी तस्वीर यहाँ बाइबिल में मिलती है; और यह ठीक यहाँ पर है; और हमारे पास है... यही इतिहास है। यही है वह जहाँ पिन्तेकोस्तल

कलीसिया

आरम्भ हुई, उसे उसका नाम मिला; लगभग सन्1908, 10, 12 में यह कहीं पर उतरने लगा था।

73 अब, यह बिलकुल ठीक बात है, "...और मेरे नाम का इंकार नहीं किया है।"

मेरे नाम का इंकार नहीं किया है।

अब, मुझे यह बात अच्छी लगती है।

अब देखिए, उसके ....उसके पास दाऊद की कुंजियाँ हैं; वह अपने वचन को पूरा कर सकता है, और..और राज्य के अंदर आपका प्रवेश करा सकता है। उसका नाम उज़ागर किया जा चुका है। वे उस कलीसिया से बाहर निकल आये हुए हैं जहाँ उनके पास एक नाम था, कि वे मरे हुए हैं; और अब वे एक ऐसी कलीसिया के अंदर आ गये हैं जिसके पास नाम है; एक ऐसा नाम है जिसके पास जीवन है। समझे।

पिता, पुत्र,पवित्र आत्मा वाले से, पिता, पुत्र, और पवित्र आत्मा के नाम वाले मरे हुए नाम से बाहर निकल आये हैं....वह तो कोई समझ की बात भी नहीं ठहरती है। देखिए,यह बात एक प्रकाशन के लिए दी गई थी। उसकी सम्पूर्ण पुस्तक प्रकाशन पर ही लिखी हुई है। वह ऐसा ही है; वह स्वयं अपने आप को प्रकट करता है।

74 अब देखिए, उसने मत्ती 28:19 में कहा था, "जाओ और लोगों को पिता, पुत्र, और पवित्र आत्मा के नाम में बपतिस्मा दो।" अब, आप उन नामों में से किस एक नाम का उपयोग करने जा रहे हैं? अब, त्रिएकता को मानने वाले लोगों में से बहुतेर इस प्रकार से बपतिस्मा देते हैं, "पिता के नाम में, पुत्र के नाम में, पवित्र आत्मा के नाम में। यह तो पवित्र वचन के अनुसार भी नहीं हैं। आप किसी से भी पूछकर देखें, कि क्या ऐसा नहीं है.....यह नाम में है, जो कि एक "एकवचन" है, यह नामों में नहीं है:यह तो नाम है—यह तो पिता, पुत्र, और पवित्र आत्मा के नाम में है। समझे? यह बिलकुल ठीक बात है।

पिता कोई नाम नहीं है, पुत्र कोई नाम नहीं है, पवित्र आत्मा कोई नाम नहीं है। अतः यह क्या है? कोई मरी हुई बात। यह कोई नाम नहीं है। परन्तु उन मरी हुई उपाधियों के द्वारा.....

75 यह प्रकट होता है, कि यह तो मसीह के जीवन के द्वारा ही होता है।

और पतरस के पास अवश्य ही रहा होगा... वह वहाँ पर अपने हाथ में स्वर्ग के राज्य की कुंजियाँ लिये हुए खड़ा था; और वह राज्य पवित्र आत्मा है, उसकी बगल में राज्य की कुंजियाँ लटकी हुई थीं। दूसरे शब्दों में यह है, कि यह प्रकाशन है, क्योंकि यीशु ने ऐसा ही उसे बताया था। ओह, भाई, क्या आप उसे नहीं देखते हैं?

पतरस एक ऐसा था जो सत्य के प्रकाशन से आशीषित हुआ था। और ठीक वहीं पर वह खड़ा हुआ था और उसने यीशु को यह कहते हुए सुना था, "इसलिए तुम जाओ, और सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ, और उन्हें पिता, पुत्र, और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो।"

पतरस पीछे मुड़ा और बोला, "प्रभु, निश्चय ही, मेरे पास यहाँ पर कुंजियाँ हैं। मेरे पास इसका प्रकाशन है, कि इसका क्या अर्थ है, क्योंकि मैं जानता हूँ, पिता कोई नाम नहीं है, पुत्र कोई नाम नहीं है, और पवित्र आत्मा कोई नाम नहीं है, परन्तु मैं जानता हूँ, कि वह नाम क्या है। इसलिए मैं तुम्हें प्रभु यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा देता हूँ।" आमीन। यह सच बात है।

76 अब, यह बिलकुल ठीक वैसा ही है जैसाकि आप एक प्रेमगाथा पढ़ रहे हो। और आप....यह मत्ती की अन्मित पुस्तक है-मत्ती की पुस्तक का अन्तिम भाग है। यदि आप कोई प्रेमगाथा उठाकर पढ़ते हैं, आप में से कुछ महिलाएं ऐसा करती हैं.....मैं जानता हूँ, कि आप ऐसा नहीं करती हैं, यकीनन, आप ऐसा नहीं करेंगी, नहीं, नहीं। समझे? परन्तु यदि आपने ऐसा तब किया था जब आप एक पापी थे, समझे...

आप ने कहीं नीचे एक प्रेमगाथा ली.....आप जानती हैं, कि जब आप एक लड़की थी,आप ने इस गाथा को पढ़ा जिसमें कहा गया था, उसके बाद जॉन और मैरी हमेशा हमेशा के लिए आनन्दपूर्वक रहने लगे।" हूँ! ये जॉन और मैरी कौन थे? अब, आप के लिए इसे जानने का कि जॉन और मैरी कौन थे केवल एक ही तरीका है, कि आप शुरू से ही पुस्तक को पलटे और उसे पढ़े। क्या यह ठीक है?

ठीक है, मत्ती की जो अन्तिम पुस्तक है उसके अन्तिम पद में यीशु ने कहा था "इसलिए तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो; और उन्हें सब बातें जो मैंने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ।" अब, देखिए, यदि...यदि पिता कोई नाम नहीं है, पुत्र कोई नाम नहीं है, और पवित्र आत्मा कोई नाम नहीं है, तो बेहतर यही होगा, कि हम पुस्तक के आरम्भ की ओर लौटे, और आप इसे ढूंढ़ निकालने के लिए मत्ती का पहला अध्याय ही निकालें।

77 मैं इस छोटे से उदाहरण को उन लोगों की खातिर देना चाहूँगा, जो यहाँ पर ऐसे हों जिन्होंने इसे कभी न देखा हो। इस पर दृष्टि लगाइये, यह पिता है, यह पुत्र है, और यह पवित्र आत्मा है। अब, आप ध्यानपूर्वक देखें। ये पिता, पुत्र, पवित्र आत्मा हैं। यही है वह जो यीशु ने मत्ती 28:19 में कहा था। क्या यह ठीक बात है? पिता, पुत्र, पवित्र आत्मा। अब देखिए, यह कौन है? पिता! क्लास, सुनिऐंगा। पिता, पुत्र, पवित्र आत्मा। अब, यह कौन है? पवित्र आत्मा। यह कौन है? (सभा कहती है, पिता।-सम्पा.) यह कौन है? (सभा कहती है, पुत्र-सम्पा.) पुत्र! यह बिलकुल ठीक है।

अब, यह किसका पिता था? यीशु मसीह का! क्या यह सही है? अब, मत्ती का पहला अध्याय और 28वाँ पद देखिएं; आइये हम इसे पढ़ते हैं। अब, हम एक प्रेमगाथा ही लेंगे, और देखेंगे, कि इसमें क्या क्या बातें पढ़ने को मिलती हैं। हम देखेंगे, कि यह व्यक्ति कौन—कौन था जिसने कहा था, जाकर उन्हें पिता, पुत्र, और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो।" यह बिलकुल ठीक बात है। अब, आइये मत्ती का पहला अध्याय वंशावली से आरम्भ करें:

अब्राहम की संतान, दाऊद की संतान, यीशु मसीह की वंशवली की पुस्तक ।

अब्राहम से इसहाक उत्पन्न हुआ;...और इसहाक से याकूब उत्पन्न हुआ;...

और यह इसी प्रकार से आगे बढ़ती जाती है जब तक कि 18वाँ पद नहीं आ जाता है। अब आप देखते हैं, कि जब आप 17वें पद से

आगे बढ़ते हैं, तो यह ऐसा है:

और अब्राहम से दाऊद तक सब चौदह पीढ़ी हुई और दाऊद से बाबुल को बन्दी होकर पहुँचाए जाने तक चौदह पीढ़ी और बन्दी होकर बाबुल पहुँचाए जाने के समय से लेकर मसीह तक चौदह पीढ़ी हुईं।

अब यीशु मसीह का जन्म इस प्रकार से हुआ, कि जब.... उस की माता मरियम की मंगनी यूसुफ के साथ हो गई..... क्या आप मेरे पीछे पीछे पढ़ रहे हैं? ध्यानपूर्वक सुनिऐगा!

....जब उस की माता मरियम की मंगनी यूसुफ के साथ हो गई, तो उनके इकड़े होने से पहले वह पिता परमेश्वर की ओर से गर्भवती पायी गयी।

क्या यह इसी प्रकार ही पढ़ा जाता है? वह किस की ओर से गर्भवती पायी गयी? (सभा कहती है, "पवित्र आत्मा की ओर से।'-सम्पा.)खैर, मैंने सोचा था, कि किसी ने कहा था, कि यह उसका पिता था। अब, यदि पवित्र आत्मा एक व्यक्ति है, और पिता कोई और व्यक्ति है, तब तो उसके दो पिता हुए। इससे आपको क्या मिलता है? एक नाज़ायज़ बालक।

आप कहते हैं, "ओह, वे बस चूक गये और उन्होंने वहाँ पर छापने में गलती कर डाली।" ठीक है।

सो उसके पति यूसुफ ने जो धर्मी था और उसे बदनाम करना नहीं चाहता था, उसे चुपके से त्याग देने की मनसा की।

परन्तु जब वह इन बातों की सोच ही में था तो प्रभु का स्वर्गदूत उसे स्वप्न में दिखाई देकर कहने लगा; हे यूसुफ दाऊद की सन्तान, तू अपनी पत्नी मरियम को अपने यहाँ ले आने से मत डर; क्योंकि जो उसके गर्भ में है, वह —की ओर से है। (मंड़ली कहती है, "पवित्र आत्मा

की ओर से है।" -सम्पा.)

78 "कोई भी बात दो या तीन गवाहों के द्वारा सच्ची ठहरायी जाये।" क्या? पवित्र आत्मा ही उस का पिता था। ठीक है, उस ने तो कहा था, कि परमेश्वर उसका पिता था। अब, यदि वे दो अलग अलग व्यक्ति थे, तो कौन उसका पिता था? जी हाँ! देखिए, आप स्वयं अपने को कहाँ पर लेकर आ जाते हैं। आप स्वयं अपने को बीच हवा में बीचोबीच लटका रहे होते हैं। समझे।

अब, आप को यह कहना पड़ता है, कि स्वयं पवित्र आत्मा ही परमेश्वर है। यह तो पवित्र आत्मा ही है जो परमेश्वर है। (अब, आपको तीन के बजाये दो मिल गये हैं।) बिलकुल ठीक है, बिलकुल ठीक है, 21 वाँ पद लें: "....वह .....की ओर से गर्भवती पायी गयी.... "

किसने रखवाया.... वह किस की ओर से गर्भवती पायी गयी? पवित्र आत्मा की ओर से। यह बिलकुल ठीक बात है।

और वह एक पुत्र जनेगी और तू उसका नाम .....(नाम)....यीशु रखना; क्योंकि वह अपने लोगों का उन के पापों से उद्धार करेगा।

...यह सब कुछ....इसलिए हुआ कि जो वचन प्रभु ने भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा कहा था; वह पूरा हो;

कि देखो, एक कुंवारी गर्भवती होगी और एक पुत्र जनेगी और उसका नाम इम्मानुएल रखा जायेगा जिसका अर्थ यह है परमेश्वर हमारे साथ।

79 उस का नाम क्या था? अब, देखिए, ये जॉन और मैरी कौन हैं जो हमेशा हमेशा के लिए खुशी खुशी रहने लगे? पिता, पुत्र, पवित्र आत्मा का नाम क्या है? जब यीशु पृथ्वी पर जन्मा था, तो वह प्रभु मसीह था। आठ दिन के बाद उसके खतने पर उसकी माता ने उसका एक नाम रखा था और उसके पिता ने उसका नाम यीशु रखा था। तब तो वही यीशु मसीह था, वही प्रभु यीशु मसीह था। वह प्रभु था। जब वह जन्मा था, तो वह प्रभु मसीह था। और जब उस का नाम यीशु रखा गया था, तो इससे वह प्रभु यीशु मसीह बन गया था।

बिलकुल ठीक यही बात पतरस पर प्रकट की गयी थी, जब उसने कहा था, कि जाकर पिता, पुत्र, पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो, तो पतरस जानता था, कि यह जॉन और मैरी कौन है। अतः यह प्रकट किया जा सकता था, क्योंकि यीशु को मालूम था, कि पतरस के पास प्रकाशनों का वरदान है। वह इस बात को जानता था, क्योंकि यह पतरस पर पहले ही स्वर्ग से आत्मा के द्वारा प्रकट किया जा चुका था। और जब परमेश्वर देख लेता है, कि एक मनुष्य स्वर्ग से आने वाले प्रकाशनों को ग्रहण कर सकता है, तो वह उस मनुष्य पर भरोसा कर सकता है, उस के साथ कुछ कर सकता है; जब उस पर यह प्रकट हो जाता है, क्योंकि उसने कहा था, "कोई मनुष्य नहीं, वरन मेरा पिता ही इसे प्रकट कर सकता है।

परमेश्वर ही केवल एक मात्र ऐसा है जो इसे प्रकट कर सकता है, और वह जानता था कि पतरस आत्मा के सम्पर्क में आया था। अतः वह..... पतरस प्रकाशन जानता था, अतः जब वह वहाँ ऊपर गया तो उसने कहा, "मन फिराओ, और अपने अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा लो।"

80 अब, इसके कुछ दिन पहले ही यीशु ने पतरस को बताया था..(ठीक उस समय जब उस ने उसे बताया था, कि वह प्रकाशन किसका था, तो उसने कहा था, कि "मैं इस पत्थर पर अपनी कलीसिया बनाऊँगा, और अद्योलोक के फाटक उस पर प्रबल नहीं होंगे"); तो उसने कहा था, ...और मैं तुझ से कहता हूँ, कि तू पतरस है, और मैं तुझे कुंजियाँ दूंगा..(ओह!)....स्वर्ग राज्य की कुंजियाँ दूंगा। मैं तुझे कुंजियाँ दूंगा। जो कुछ तू पृथ्वी पर बांधेगा, मैं उसे स्वर्ग में बांधूंगा। जो कुछ तू इस पृथ्वी पर खोलेगा, मैं उसे स्वर्ग में खोलूंगा।"

इसके बाद पिन्तुकुस्त के दिन पर, कलीसिया के शुभारम्भ पर—उससे दस दिन बाद जब यीशु ने कहा था, "जाकर पिता, पुत्र, पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो"; तो पतरस आत्मिक प्रकाशन के द्वारा यह जानता था, कि "पिता, पुत्र, पवित्र आत्मा" के नाम जैसी कोई चीज नहीं है। यह सही बात है, कि कैथोलिक काल के आने तक किसी ने भी इसे सोचा नहीं था। और हर एक वह व्यक्ति जिसका। पिता, पुत्र, और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा हुआ है, उसका कैथोलिक विश्वास के अंदर ही बपतिस्मा हुआ है। यह सच है, कि उसका बपतिस्मा मसीही बपतिस्मे के अंदर नहीं हुआ है, ऐसा कदापि नहीं किया गया था.....

81 अब देखिए, पिन्तेकुस्त के दिन वे सब पवित्र आत्मा से भर गये थे, और वे अन्यान्य भाषाएँ बोल रहे थे, और..और ऐसा व्यवहार कर रहे थे, कि मानो वे नशे में हों। और वे नशे में थे; वे नई मदिरा के नशे में थे, वे उस नई मदिरा के नशे में थे जो आसमान से स्वर्ग के झरोखे से आती है। और जब वे सब जयजयकार कर रहे थे, और हो-हल्ला कर रहे थे और ऐसा व्यवहार कर रहे थे, कि मानो मदिरा के नशे में हों, तथा इसी प्रकार का ही और कुछ कर रहे थे, तो पतरस उनके मध्य में ऊपर उठा और उनसे बोला, कि "ये नशे में नहीं हैं, मगर ये तो— ये

तो.....यह वह बात है जो... जो भविष्यद्वक्ता के द्वारा कही गयी थी, कि ऐसा होगा, कि मैं अपना आत्मा उंडेलूंगा।"

और अब देखिए, उन्होंने—उन्होंने कहा, "हे पुरूषों और भाइयों, हम क्या कर सकते हैं? पुरूषों और भाइयों, हम क्या कर सकते हैं? यह एक प्रश्न था। हम इसे कैसे प्राप्त करने जा रहे हैं? किस के पास कुंजियाँ हैं?" "शिमौन, यहाँ पर आ। तेरे पास कुंजियाँ हैं; उन्हें अपनी बगल से बाहर निकाल। तू क्या कहने जा रहा है?"

अब, स्मरण रखिए, यीशु मसीह ने कहा था, "यदि तू इसे पृथ्वी पर बांधेगा, तो मैं इसे स्वर्ग में बांधूंगा। यदि तू इसे पृथ्वी पर खोलेगा, तो मैं इसे स्वर्ग में खोलूंगा।" अगर वह परमेश्वर है, तो उसे अपना वचन पूरा करना होता है।

82 अब, तुम कैथोलिक पुरोहितों, मुझे तुम अपनी पापों की क्षमा दिखाओ। एक बार एक कैथोलिक पुरोहित ने मुझे बताया था, उसने कहा था, "क्या यीशु ने यह नहीं कहा था, जिसके तुम पाप क्षमा करोगे, वे उनके लिए क्षमा किये जायेंगे ?"

मैंने कहा, "उसने ऐसा कहा था।"

वह बोला, "क्या उसने नहीं कहा था, जिसके तुम पाप क्षमा न करो, वे उनके लिए क्षमा नहीं किये जायेंगे ?"

"जी हाँ!"

"ऐसा है, जिन्हें तुम क्षमा करो उन्हें क्षमा किया जायेगा ; जिन्हें तुम क्षमा न करो उन्हें क्षमा न किया जायेगा।"

मैंने कहा, "यह बिलकुल ठीक है जो इसने कहा था।"

उस ने कहा, "तो फिर क्या यीशु ने अपनी कलीसिया को-जो कि हम उसकी कलीसिया है, पृथ्वी पर पाप क्षमा करने का अधिकार नहीं दिया है?"

मैंने कहा, "निश्चय ही, उसने ऐसा ही किया है, यदि आप उन्हें उस प्रकार ही क्षमा करते हैं, जैसे उन्होंने किये थे, तो मैं आपके साथ साथ चलूंगा।" जी हाँ! मैंने कहा, "उन्होंने उन्हें कैसे क्षमा किया था? क्या उन्होंने उन्हें यह बताया था, कि जाकर नवीना करो, या ऐसा ही कुछ करो, या उस प्रकार से करो जैसा कि तुम करते हो?" जी नहीं, श्रीमान।

83 पतरस ने तो कहा था, "मन फिराओ।" आमीन! यही कुंजी थी, "मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले, तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे।" कुंजी ने पृथ्वी पर "क्लिक करके खोला, और स्वर्ग में "क्लिक करके खुला। यह ऐसा ही है।

यही कारण था, कि जब पौलुस ने उन कुछ लोगों से मुलाकात की जो पहले से ही ठीक उस मनुष्य के द्वारा बपतिस्मा लिये हुए थे जिसने यीशु को बपतिस्मा दिया था, तो उसने कहा था, "क्या जब से तुम ने विश्वास किया तुम ने पवित्र आत्मा पाया?"

उन्होंने कहा, "हम नहीं जानते हैं, कि पवित्र आत्मा भी होगा?"

उस ने कहा, "कैसे लिया.....आप अपने ग्रीक शब्द को लें, वहाँ कहा गया है, कैसे तुम्हारा बपतिस्मा हुआ था?"

उन्होंने कहा, "यूहन्ना का।"

बोला, "वह तो और बिलकुल भी काम नहीं करेगा। स्वर्ग बंद हो चुका है। तुम्हें तो आकर यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा लेना होगा।"

अतः जब उन्होंने यह सुना; तो उन्होंने फिर से यीशु मसीह के नाम का बपतिस्मा लिया। और जब उन्होंने बपतिस्मा लिया, तो पौलुस ने उन पर अपने हाथ रखे, और पवित्र आत्मा उन पर उतरा, इसके बाद वे अन्यान्य भाषाएँ बोलने लगे और भविष्यवाणियाँ करने लगे।

ओह, भाई, यही तो वापस आरम्भ की ओर लौटना था। यह बिलकुल ठीक बात है। यही तो वह खुला द्वार था जो ठीक यहाँ पर स्थापित किया गया था। भूगौलिक रूप से यह बात बिलकुल ठीक है कि सांझ के उजियाले हैं, और बाइबिल में हर एक वचन का लेख उसकी ओर ही अगुवाई करता है।

84 हम यहाँ पर घन्टों खड़े रह सकते हैं, और हमारे पास पन्द्रह मिनट का समय और है, और लगभग पैंतीस विभिन्न टिप्पणियाँ हैं जो हमें यहाँ पर करनी हैं। और अतःयदि हम आज रात्रि उन्हें नहीं ले सकते हैं, तो हम कल सुबह उन्हें लेंगे। यह बिलकुल ठीक बात है।

अब, यह बिलकुल ठीक है।

....जिसके खोले हुए को कोई बंद नहीं कर सकता है; तेरी सामर्थ थोड़ी सी रह गयी है; और तू ने मेरे वचन का पालन किया है..... (यह बिलकुल ठीक है?).....और मेरे नाम का इंकार नहीं किया है।

हम इसे ले चुके हैं: "मेरे नाम का इंकार नहीं किया है।"

नाम प्रकट किया जा चुका है; उस पुरानी मरी हुई सरदीस नामधारी कलीसिया से दूर हो चुके हैं, और जीवित कलीसिया के अंदर आ चुके हैं। अब, आइये हम नौवाँ पद लें। अब, हम इस पर दृष्टि डालने जा रहे हैं; अब, हम किसी उस बात का अध्ययन करने जा रहे हैं जो बहुत ही भंयकर है।

देख, मैं शैतान के उन सभावालों को तेरे वश में कर दूंगा जो यहूदी बन बैठे हैं, (जो कहते हैं, कि वे यहूदी हैं) पर हैं नहीं; वरन झूठ बोलते हैं—देख, मैं ऐसा करूंगा, कि वे आकर तेरे चरणों पर दण्डवत् करेंगे, और यह जान लेंगे, कि मैंने तुझ से प्रेम रखा है।

वहाँ पर एक अच्छी-खासी पूरी रात थी। दृष्टि डालिएगा! वे अब क्या हैं? वह जिन से बोलता है उन्होंने इस सारे समय के बाद यहाँ पर उस का नाम पाया था-वे उस खुले द्वार यीशु मसीह में आये, उन्होंने जीवन का वचन पाया, वे पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हुए, और अब उसी ने कहा, "तेरे मध्य में ऐसे हैं जो शैतान की सभा के हैं।"

85 अब, मेरे भाई, यदि आप पिरगुमन पर, प्रकाशितवाक्य 2:13 पर एक मिनट के लिए वापस आना चाहते हैं, तो आइये मैं आपको यहाँ

पर दिखाता हूँ, कि वह सचमुच में क्या हैः नामधारी कलीसिया।।

मैं तेरे कामों को जानता हूँ, और मैं यह जानता हूँ, कि तू वहाँ रहता है जहाँ शैतान का सिंहासन है।

आप ऐसी ही स्थिति में हैं। वह लौदीकियायी—या मेरा तात्पर्य है, कि वह नीकुलाइयों वाला कलीसियायी काल वह था जहाँ वे संस्थागत हो गये थे.....और यह देखने के लिए और आपको यह दिखाने के लिए , कि वे एक कलीसिया थे, एक सभा थे एक कलीसिया, एक नामधारी कलीसिया थे, शैतान की सभा थे, यह देखिएं। समझे? तब तो नामधारी कलीसिया के काम शैतान के ही कार्य हैं । अब देखिएँ मसीही ऐसे नहीं हैं, स्मरण रखिए, वे तो मसीही हैं। परन्तु नामधारी कलीसिया अपने आप में ऐसी हैं.....यह बिलकुल ठीक बात है।

अब, क्या आपने ध्यान दिया था, कि उसने कहा था, "तेरे मध्य में ऐसे हैं जो कहते हैं, कि वे यहूदी हैं, पर, तू ने उन्हें झूठा पाया।"

86 अब, स्मरण रखिए, वह महान दूत.....अब, वह किस से बोल रहा था? इस अन्तिम कलीसिया से; यह खुला द्वार दो कलीसियाओं के मध्य में था।

अब देखिए, प्रथम कलीसियायी काल को किसके द्वारा शिक्षा दी गयी थी? पौलुस के द्वारा। अब, आइये हम रोमियों 2:29 पर चलें और देखें, कि एक यहूदी क्या होता है, ताकि आप इस बात में सुनिश्चित हो जायें, कि यह—यह इस पर मेरा अपना विचार नहीं है। रोमियों का दूसरा अध्याय और रोमियों का 29वाँ पद। यह बिलकुल ठीक है, हम यहाँ पर हैं। पर यहूदी वही है जो मन से है: और खतना वही है, जो हृदय का और आत्मा में है; न कि लेख काः ऐसे की प्रशंसा नहीं...से.. ऐसे की प्रशंसा मनुष्यों की ओर से नहीं, परन्तु परमेश्वर की ओर से होती है।

क्या है एक...एक यहूदी क्या है? आत्मा से, पवित्र आत्मा से भरा हुआ मसीही। मैं जानता हैं, कि तुम यहाँ पर पवित्रीकरण के उस काल के बाद हो जहाँ वे कहते थे, कि उनके पास पवित्र आत्मा है, परन्तु....उसने इस बात को कहा; मैंने यह कदापि नहीं कहा। उन्होंने कहा था, कि उनके पास पवित्र आत्मा है जबकि उनके पीछे चिन्ह नहीं आ रहे थे; परन्तु उसने कहा था, कि वे झूठे हैं। ये चिन्ह उनके होंगे जो विश्वास करते हैं।" उसे झुठलाया नहीं जा सकता है। ओह, भाई; ऐसी बातें तो आपको इधर-उधर, चारों तरफ अंधा किये चली जाती हैं। समझे? ओह, मेरे परमेश्वर! मैं करूँगा.....

देख, मैं ऐसा करूँगा, मैं शैतान के उन सभावालों को तेरे वश में कर दूंगा जो यहूदी बन बैठे हैं.....(जबकि कहा गया है, कि वे आत्मा से भरे हुए मसीही होते हैं; कहता है, सभा को, संस्था को, मैं उनको जो यह कहते हैं, कि उन्होंने पवित्र आत्मा पाया है और संस्था—संस्थागत हुए पड़े हैं, तेरे वश में कर दूंगा। उनके पास तो अभी प्रकाशन तक भी नहीं है। समझे? यह बिलकुल ठीक बात है।)....मैं ऐसा करूंगा.....जो कहते हैं, कि वे यहूदी.....(या मसीही हैं).....पर हैं नहीं, वरन झूठ बोलते हैं, देख, मैं ऐसा करूंगा, कि वे आकर तेरे चरणों में दण्डवत करेंगे, और यह जान लेंगे, कि मैं ने तुझ से प्रेम रखा है।

87 ठीक यहीं पर ही मुझे अपने सुबह के संदेश में इसे लेना होगा। ठीक वहाँ पर जो हैं वे वो कुंवारियाँ हैं जो सोयी हुई थीं। क्या आप इसे देख सकते हैं? ऐसा कब हुआ था? अंत समय पर। ओह, वे कब बाहर निकलकर गयी थीं.....यह यहाँ पर है.....समझे? वे विश्वास करने के द्वारा धर्मी ठहरीं, उनका पवित्रीकरण हुआः वे लूथर के संदेश के द्वारा धर्मी ठहरीं, यहाँ पर उनका पवित्रीकरण हुआ; परन्तु वे खुले द्वार से चूक गयी थीं। क्या आप इसे देख सकते हैं? वे लूथर के द्वारा विश्वास करने के कारण धर्मी ठहरीं, वैसली के काल द्वारा उनका पवित्रीकरण हुआ .....

उनमें से ऐसे बहुतेरे नाजरीन, पिलग्रीम ऑफ होलीनस, वैसली वाले, मैथोडिस्ट, तथा इसी प्रकार के और दूसरे बहुमूल्य लोग हैं, वे सभी अच्छा जीवन,साफ-सुथरा, पवित्रीकृत जीवन व्यतीत करते हैं,और सोचते हैं, कि उन्होंने पवित्र आत्मा पाया हुआ है, और जब वे अपने किसी निकटवती जन को अन्यान्य भाषाओं में बोलते हुए सुनते हैं, या ऐसा ही कुछ करते हुए सुनते हैं, तो वे उसका उपहास उड़ाते हैं, उस पर हंसते हैं; और कहते हैं, "यह तो शैतान की ओर से है।" भाई, जब आपने ऐसा किया तभी आपने अपने विनाश पर छाप कर दी। आपने तो पवित्र आत्मा की ही निन्दा कर डाली, जिसे क्षमा नहीं किया जा सकता है।

अच्छा, आप कहते हैं, हम तो पहली कलीसिया के सदस्य हैं।" मैं इस बात की परवाह नहीं करता हूँ, कि आप कितनी कलीसियाओं से सम्बन्धित हैं, इसका तो परमेश्वर के वचन से जिसमें न तो कुछ जोड़ा या निकाला जा सकता है, कोई सम्बन्ध नहीं है। यह सच है। वे शैतान की सभाएँ.....

88 मैं आशा करता हूँ, कि मैं आपको आघात नहीं पहुँचाता हूँ। मैं...मैं तो बस इस प्रकार की बात करने से घृणा करता हूँ, परन्तु मेरे भीतर कुछ ऐसा है जो मुझे ऐसा करने के लिए उकसा रहा है। मैं नहीं जानता हूँ, कि मैं ऐसा क्यों करता हूँ। परन्तु मैं.....आप जानते हैं, कि मुझे ऐसा करना पसंद नहीं है। बस मैं बहुत ही बुरा महसूस करता हूँ जब मैं इसे कहता हूँ, परन्तु फिर भी मुझे इसे कहना होता है।

जब मैं इसे कहता हूँ, तो मैं बहुत बुरा सा महसूस करता हूँ; परन्तु फिर भी मुझे इसे कहना होता है। मेरे अंदर कोई ऐसी चीज है जो मुझ से ऐसा कहलवा रही है। मैं स्त्रियों पर कटाक्ष करने से हमेशा ही घृणा करता हूँ। मैं-मैं ऐसा अनुभव करता हूँ, मानो.....एक स्त्री रो सकती है, और मुझे बहुत ही भंयकर सा महसूस होता है। मैं-मैं बस स्त्रियों डाटने-फटकारने से घृणा करता हूँ, परन्तु मेरे भीतर कोई ऐसी चीज है जो मुझ से ऐसा करवाती है। समझे? एक अनैतिक स्त्री...(ओह, ओ, पुरूषों,)... उसे तो मैं सहन नहीं कर सकता हूँ। क्योंकि मेरे भीतर कुछ ऐसा है—पवित्र आत्मा है जो मुझसे ऐसा करवाता है।

और मैं यहाँ पर वचन पर दृष्टि डालता हूँ, और सोचता हूँ, "हे प्रभु, यदि मैं यहाँ पर गलत हैं, तो आप मुझे इसे दिखायें। आप मुझे उस प्रकार से ही करते रहने न दीजिएगा। लोग नहीं करेंगे.....मैं नहीं करूंगा.....मैं लोगों से प्रेम करता हूँ। आप जानते हैं, कि मैं उन से प्रेम करता हूँ। यह होने दीजिए, कि मैं किसी को भी आघात न पहुँचाऊँ।। परमेश्वर, आप जानते है, मैं वैसा नहीं करूंगा।"

परन्तु पवित्र आत्मा उठ खड़ा होता है, और कहता है, "उस वचन पर ही अटल बने रहो। वहाँ पर खड़े रहो। वहाँ पर उस वचन पर ही अड़िग बने रहो।"

और मैं कहता हूँ, "जी हाँ, प्रभु । यदि ये यही.....आप ही मेरे परम मित्र हैं। आप ही केवल एक ऐसे हैं .....आप ही मेरे एक ऐसे सच्चे मित्र हैं—आप ही एक ऐसे हैं जो मेरी तब सहायता करने जा रहे हैं, जब यह जीवन धूमिल हो रहा होता है, प्रभु, अतः मैं फिर तो आपके साथ साथ ही बना रहूँगा।"

यहाँ पर मैं आता हूँ। मेरा अभिप्राय अघात पहुँचाना नहीं होता है, जब मैं उन संस्थाओं तथा उन चीजों की भर्त्सना कर रहा होता हूँ, तो

मेहरबानी करके आप मुझे गलत न समझें। बहुत पहले ही मैं इसके विषय में जान गया था, मैंने अपने सारे जीवन भर ही उस की भर्त्सना की है, मैं ने कभी भी इस पर विश्वास नहीं किया था। यही कारण है, कि मैं इसके साथ साथ टिका न रहूँगा। जी हाँ! यह बिलकुल ठीक बात है। मुझे उससे दूर रखने के लिए परमेश्वर का धन्यवाद हो।

89 देख, मैं शैतान के उन सभावालों को तेरे वश में कर दूंगा जो....(पवित्र आत्मा से भरे हुए).....बन बैठे हैं, पर हैं नहीं,.....वरन झूठ बोलते हैं देख, मैं ऐसा करूंगा, कि वे आकर तेरे चरणों में दण्डवत करेंगे....

क्या आपको वह स्मरण नहीं है जब वह कुंवारी जो सोयी हुई थीं जाग उठती है? अब, स्मरण कीजिए, कि वह क्या कहलायी थी? वहाँ पर वे दस थी जो दुल्हे से भेंट करने के लिए गयी थीं। क्या यह सही है? पाँच समझदार थीं, जिनके चिरागदानों में तेल था। आप में से कितने ऐसे हैं जो यह जानते हैं, कि बाइबिल में तेल किसको दर्शाता है? आत्मा को।

अब, कोई भी यह नहीं कह सकती थी, "तू तो पवित्र की हुई नहीं है, और मैं नहीं हूँ."....उन सभी का पवित्रीकरण हुआ था, उन में से प्रत्येक पवित्र की हुई थी, वे सभी पवित्र की हुई थीं, परन्तु उन में से पाँच इतनी पर्याप्त समझदार थीं, कि उनके पास प्रकाशन की समझ थी, कि द्वार को जान सकें, कि आत्मा से परिपूर्ण हो जायें। समझे? उनके चिरागदानों में तेल था, और दूसरी वालियों के पास कोई तेल नही था। और जब वे जागीं, तो क्यों, वे यहाँ पर उनके पास आकर कहती हैं, "ओह, ओह, तुम हमें अपने तेल में से, अपने पवित्र आत्मा में से कुछ दे दों; हमें भी थोड़ा सा दे दो।" जी हाँ,

वे बोलीं, "बहन, माफ करना, हमारे पास ही खुद अपने लिए ही पर्याप्त है। मैं सुनिश्चित हूँ, कि हमारे पास बिलकुल भी फालतू नहीं है।"

90 अतः..... और जबकि....

वे कहती है, "जाकर प्रार्थना करो।" और जबकि वे(मूर्ख कुंवारियाँ) कुछ बटोरने के लिए गयीं हुईं थीं, दुल्हा आ गया, और वे(समझदार कुंवारियाँ) तो विवाह के भोज में चली गयीं, और वे वहाँ बाहर बिना उसके ही छोड़ दी गयीं थीं, जहाँ वे पीड़ा के समय में से होकर गुजरेंगी.....

आप बस थोड़े से और पदों पर निगाह जमायें रखे रहें, और आप यह देख लेंगे, कि वे पीड़ा की समयावधि में चली जाती हैं। समझे? अब देखिए, वे जो सोयी हुईं थीं.....हम उसका सुबह अध्यापन करेंगे। जी हाँ, मेरा मानना है, कि यह बेहतर होगा, अगर हम इसके लिए इन्तज़ार करें, क्योंकि अब हम यहाँ पर बस समापन करने के समय की ओर अग्रसर हो रहे हैं। यह बिलकुल ठीक बात है।

91 अब, आइये हम देखें: "देख, मैं...." और उन्होंने पाया, कि वे झूठे हैं, कि उनके पास पवित्र आत्मा नहीं था।

कृपया, अब जबकि हम सब एक साथ हैं, यहाँ पर एक और छोटी सी बात है। जैसाकि मैंने गत रात्रि कहा था, यहूदा इस्करोयति विनाश का पुत्र था। बाइबिल कहती है, कि वह विनाश का पुत्र ही जन्माा था। इसके बाद जब वह.....और यीशु परमेश्वर के पुत्र के रूप में जन्मा था। तब परमेश्वर मसीह के अंदर वास करता था। क्या यह सही बात है? शैतान यहूदा के अंदर वास करता था।

यदि वह परमेश्वर का पुत्र था, परमेश्वर के पुत्र के रूप में जन्मा था, तो वह अवतरित परमेश्वर का पुत्र था; फिर तो शैतान विनाश के पुत्र के रूप में जन्मा था; वह विनाश का पुत्र अवतरित शैतान था— शैतान उसमें अवतरित था।

92 अब, यदि आप ध्यान दें, तो आप देखते हैं, कि वह यीशु के संग जा मिला था, और उनमें से एक बन बैठा था। समझे?

अब, वह कारण जो उसने ऐसा किया था,यह था, कि वह उस छल को लिए हुए इस दिन की कलीसिया के अंदर आ जाये। अब, देखिए, यीशु ने कहा था, "वे शैतान की सभाएं हैं।" ओह, मेरे परमेश्वर! क्या इसने स्तब्ध किया? "वे शैतान की सभाएं हैं।" वह यहूदा एक मसीही होने का स्वांग रच रहा था।

यहूदा की मुख्य चीज क्या थी? धन-दौलत। वह सबसे बड़ा खिंचाव जो आज इन बड़ी बड़ी चीजों का है, वह धन-दौलत ही तो है। अस्बलिस् ऑफ गॉड पर निगाह डालिएँ, वे यहाँ पर साठ लाख डॉलर की इमारत बना रहे हैं, और इस बात की शिक्षा दे रहे हैं, कि परमेश्वर का आगमन होने जा रहा है।ओह, बम्ब तो हमारे परखच्चे उड़ाने के लिए हैंगरों में लटके पड़े हैं, और हम साठ लाख डॉलर की इमारत बनाने में लगे हुए हैं। ओह, मेरे परमेश्वर! खैर, वह धनी है और उसे किसी चीज की घटी नही है....प्रभु ने चाहा, तो अब हम इसे कल रात्रि को लें।

93 अब, यहाँ पर ध्यान दीजिए। ओह, देखिए, कि ये कलीसियाऐं कैसी बड़ी बड़ी हैं, ये संस्थाएं कैसी बड़ी बड़ी हैं। वे अपने धन का एक साथ एकीकरण करते। हैं और.....ओह, परमेश्वर दया करे। वे तो बस अरबपति बन गये हैं, यहाँ तक कि उनके पास फाइन्स कम्पनियाँ हैं, उनके मध्य में कर्जा देने वाले संगठन तथा इसी प्रकार का सब कुछ है, कलीसियाऐ ब्याज पर धन और चीजें कर्जे में दे रही हैं।

भाई, यह तो मुझे प्रेरितों वाले कार्य-कलाप नहीं लगते हैं। पतरस ने तो कहा था, "सोना और चाँदी तो मेरे पास नहीं है, परन्तु जो मेरे पास है वह.....मुझे तो वही दे दो और मेरी सारी धन-दौलत मुझ से ले लो। यह सही बात है। "सोना और चाँदी तो मेरे पास नहीं हैं, परन्तु जो मेरे पास है वह मैं तुझे देता हूँ: यीशु मसीह के नाम में.....उसके पास यही था; उसके पास इसका प्रकाशन था। "मैं तुझे वह देता हूँ: यीशु मसीह के नाम में खड़ा हो और चल।"

94 यह बिलकुल ठीक बात है।

अब, हमें यहाँ पर यह ज्ञात होता है, कि वे शैतान की सभा थे। अब देखिए, वे ऐसे कैसे हो सकते थे? अब, जब यहूदा आता है....अब देखिए, लगभग ठीक उस समय जब यीशु दृश्य पर आता है, यहूदा भी दृश्य पर आता है। क्या आप ने इस पर ध्यान दिया था? और जिस समय यीशु दृश्य पर से चला जाता है, लगभग ठीक उसी समय ही यहूदा भी दृश्य पर से चला जाता है।

जिस समय पवित्र आत्मा दृश्य पर वापस आता है, लगभग ठीक उसी समय यहूदा, मसीहविरोधी की आत्मा दृश्य पर वापस आती है, ताकि आज्ञा न मानने वाले बालकों के अंदर, उन के अंदर काम करे जो बाइबिल पर मन नहीं लगते हैं, मगर नामधारी संस्था पर मन लगाते हैं। समझे? और उन्होंने ही एक सभा बनायी।

और यीशु ने यहाँ पर कहा, कि "वह शैतान की सभा है।"

वह कहाँ पर है? वह वहाँ से होते हुए यहाँ इस काल तक विद्यमान है। वह यहाँ पर किस प्रकार से वापस आती है? एक संस्था के द्वारा।

बिलकुल ठीक यही काम है जो उसने यहाँ पर किया था। "शैतान की सभा", क्या आप इसे समझ गये हैं? उसने कहा था, "वे शैतान की सभा के हैं, जो कहते हैं, कि वे आत्मा से भरे हुए हैं।" अब, देखिए, वे ऐसा किस प्रकार से कह सकते थे?

जब यहूदा यहाँ पृथ्वी पर था, तो उसने यीशु से भेंट की थी, उसने इस बात का अंगीकार किया था कि वह यीशु पर विश्वास करता है, और वह खज़ांची बन बैठा था, वह सारा धन इकट्ठा कर रहा था। क्या यह सही बात है? आप सब यह जानते हैं।

अब, यदि उसने यीशु मसीह पर विश्वास किया था, तो उसने धर्मी ठहरना (झूठे तौर पर) ग्रहण किया था। क्या यह सही बात है? रोमियों 5:1 में कहा गया है, "सो हम विश्वास से धर्मी ठहरे.....यह सच है। यह बिलकुल सच है।

95 अब, इसके बाद एक और बात है जो संत यूहन्ना 17:17 में है, यीशु ने उन्हें सत्य के द्वारा पवित्र किया था, उसने कहा था, "तेरा वचन सत्य है, और वह वचन था। और उसने उन्हें अशुद्ध आत्माओं पर अधिकार दिया था, कि वे उन्हें बाहर निकालें, और चंगाई सभाएं करें, और दुष्टात्माओं को बाहर निकालें, और...और सब प्रकार के आश्चर्यकर्म करें। और जब वे वापस लौटे, तो यहूदा उनके संग था.....अब, नाज़रीनों, वैसलियन मैथोडिस्टों, ज़रा देखिएगा.....जब वे वापस लौट कर आये तो वे आनन्द कर रहे थे, और वे बहुत ही अधिक आनन्दित थे और परमेश्वर का जयजयकार कर रहे थे, और स्तुतिगान कर रहे थे, क्योंकि दुष्टात्माएँ उनके अधिकार में थीं।

और यीशु ने उनसे कहा था, "तुम इस बात से आनन्दित मत हो, कि दुष्टात्माएँ तुम्हारे वश में हैं, मगर इस बात से आनन्दित हो, कि तुम्हारे नाम जीवन की पुस्तक में लिखे हुए हैं।" और स्मरण रखिए, कि यहूदा उनमें से एक था। देखिए, वह कलीसिया को उस स्थिति तक भरमा सकता था। आप जानते हैं, कि वह उनके संग संग काम करता चला गया था, परन्तु जब पिन्तेकुस्त तक पहुँचने की बात आयी, तो उसने अपने रंग दिखा दिये थे। और बिलकुल ठीक यही है वह जो उसने अल्पावस्था में, मैथोडिस्ट कलीसिया में किया, और ठीक ऐसा ही उसने लूथरन कलीसिया में किया, और ठीक ऐसा ही उसने नाजरीन कलीसिया में किया, और ठीक ऐसा ही उसने चर्चस् ऑफ गॉड़ में तथा उन में किया, वह पवित्रीकरण तक चलकर आया, जब पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाकर अन्यान्य भाषाएँ बोलने, और चिन्ह और आश्चर्यकर्म करने के बात आयीं, तो उन्होंने इसकी भर्त्सना की।

96 वे आपके लिए दिव्य चंगाई के मार्ग पर चल देंगे। यकीनन, यहूदा ने भी ऐसा ही किया था। समझे? परन्तु जब....भाई, आज बहुतेरे ऐसे हैं जो दिव्य चंगाई के पथ पर ही निकले हुए हैं, वे दो घंटे के लिए खड़े होते हैं और कहते हैं, "यदि तुम उन्हें हर रात्रि साठ साठ डॉलर नहीं दोंगे, तो तुम्हारी फसल जलकर राख हो जायेंगी; और वे इसी प्रकार की सारी बातें करते हैं, यह तो शैतान ही है। निश्चय ही यह वही है। मैं अपने सम्पूर्ण ह्रदय से दिव्य चंगाई पर विश्वास करता हूँ। परन्तु वह वाली चीज शैतान की है, वह पूरी तरह से शैतान की ही है। इससे कोई मतलब नहीं है, कि आप कितना अधिक कर सकते हैं, या आप और भी कितना ज्यादा कर सकते हैं, यहूदा ने भी दुष्टात्माओं को बाहर निकाला था।

यीशु ने कहा था, "उस दिन बहुतेरे मेरे पास आकर कहेंगे, 'हे प्रभु, हे प्रभु, क्या मैंने तेरे नाम से दुष्टात्माओं को नहीं निकाला, क्या मैंने तेरे नाम से बड़े बड़े आश्चर्य कर्म नहीं किये?" ।

उसने कहा, "चाहे तुमने किये हों, मैं इसके विषय में कुछ नहीं जानता। हे कुकर्म करनेवालों, मुझसे दूर हो जाओ। मैं ने तुम्हें नहीं जाना।" निश्चय ही! 251. ओह, भाई, "सकेत है फाटक और सकरा है मार्ग, और थोड़े ही हैं जो उसे पायेंगे।" हम इन थोड़े के विषय में ही बोल रहे हैं, क्योंकि हम अन्तिम काल में हैं जहाँ बहुत थोड़े से ही होने हैं। मेरे भाइयों, मेहरबानी करके इसे ग्रहण कर लो।

97 यह मत सोचो, कि यह मैं हूँ यहाँ जो खड़ा हुआ है। बल्कि मैं तो....यदि यह मैं होता, तो मैं —मैं—-मेरे लिए तो यही बात होती, कि मैं तो अपने आप से समझौता कर लेता, और कहता, "आइये हम अस्मबली ऑफ गॉड़ को अपना लें, या किसी अभियान को अपना लें, हम बस उनके साथ शामिल हो जायें, और उनके साथ साथ चलें।" परन्तु भाई, हाय, मुझ पर यदि मैं ऐसा करता हूँ। हाय मुझ पर! मैं तो उससे बेहतर बात ही जानता हूँ। परमेश्वर मुझे उस जैसा काम करने के लिए नरक में भेज देगा। जी हाँ,श्रीमान!

यदि मैं —मुझे तो अपनी गवाही पर अपनी ज़िन्दगी से मोहर करनी होगी, मुझे तो इस पर मोहर करनी है, बस यही सारी की। सारी बात है। क्योंकि मेरे अंदर तो कोई चीज है, इसलिए मैं तो संसार में वैसा कुछ भी नहीं कर सकता हूँ। मैं जानता हूँ, कि यह सच्चाई है, और मुझे तो उसके साथ ही खड़ा रहना है जो सच्चाई है, और बाइबिल ही उसका समर्थन करती है। संस्था तो मेरे विरूद्ध है। 254. परन्तु बाइबिल कहती है, कि यह ठीक है; "हर एक मनुष्य की बात झूठी

और उसका वचन सच्चा ठहरे।" वही सत्य है, ऐसा ही है; हम बस उस पर ही अडिग बने रहें।

98 ऐसा करूंगा.....शैतान की सभा.....(यह बिलकुल ठीक बात है)

....और वे जान जायेंगे.....वे आक तेरे चरणों में.....और जान लेंगे.....मैं ने तुझ से प्रेम रखा है।

क्योंकि तू ने मेरे धीरज के वचन को थामा है, इसलिए मैं भी तुझे परीक्षा के उस समय बचा रखूगा.....

अब यह दिखाने के लिए, कि यह मैथोडिस्ट काल नहीं है मैं जिसके विषय में बोल रहा हूँ, हांलाकि यह अध्यारेपित होता है; बताता हूँ। क्या आप सुनने के लिए तैयार हैं? क्या सब लोग तैयार हैं? अब ध्यानपूर्वक सुनिएँ!

क्योंकि तू ने मेरे धीरज के वचन को थामा है, इसलिए मैं भी तुझे...(शेष बचे हुओं को).....परीक्षा के उस समय बचा रखेंगा, जो .....

कलीसिया एक ऐसी स्थिति पर आने जा रही है, जहाँ आप इस संस्था के अंदर आने जा रहे हैं, या—या ऐसा होगा.....भाई, आपको—आपको उसे ग्रहण करना होगा। यही सारी की सारी बात है। या तो आपको संस्थागत होना पड़ेगा, या आपको पशु की छाप लेनी होगी, या लेना होगा.....या तो आप इसे संस्थागत करने जा रहे होंगे, या आपको नामधारी कलीसिया(जो वास्तव में भावी पशु की छाप ही है) के अंदर जा मिलना होगा, क्योंकि यह एक बहिष्कार होगा। समझे?

.....जो आता है.....जो पृथ्वी पर रहनेवालों के परखने के लिये सारे संसार पर आनेवाला है।

देख, मैं शीघ्र ही आने वाला हूँ, जो तेरे पास है उसे थामे रह, कि कोई तेरा मुकुट न छीन ले।

99 अब देखिए, यह महान परीक्षा, यह परीक्षा का समय जो सारी पृथ्वी पर रहनेवालों को परखने के लिए आने वाला है, वह पीड़ा के अन्दर

बढ़ता चलता है—(हम बस थोड़ी देर में ही इसे देखने जा रहे हैं)—वह आगे चलकर पीड़ा के अंदर ही चला जाता है, और पीड़ा वैसली के दिनों में नहीं आयीं थीं। अतः हम किस युग में हैं? वह क्या था जिसके आगे यह द्वार स्थापित किया गया था? यह तो वैसली के समय और इसके बीच स्थापित किया गया था जिस की ओर ठीक इस समय कलीसिया अग्रसर होती चली जा रही है, और वह तो पहले से ही उसकी

ओर, अर्थात् लौदीकियायी काल की ओर अग्रसर हो चुकी है। परन्तु ठीक यहाँ पर यह छोटा सा स्थान है जो पिछले पैंतीस, चालीस सालों से लोगों के सम्मुख एक खुला द्वार रहा है, कि लोग अन्दर आयें, और परमेश्वर तो शेष बचे हुओं को लेकर उन पर छाप करेगा। और वे जो गुनगुने हो चलेंगे उन्हें तो वह अपने मुँह से बाहर उगल देगा। कामों को छोटा किया जायेगा, कलीसिया ऊपर चली जाती है,

और यहाँ पर मसीहविरोधी विनाश करने के लिए अन्दर बढ़ रहा होता है। यह बात बिलकुल सिद्ध है, यह बाइबिल से चारों ओर से बिलकुल ठीक ठीक मेल खाती है।

100 यह बिलकुल ठीक बात है। और यहाँ पर उन कुंवारियों का दृष्टिगोचर होना होता है जो सोयी हुई हैं। और यहाँ पर यह प्रमाणित होता है, कि कलीसियायी कालों का पिछला हिस्सा पिन्तेकुस्त के प्रथम भाग की ओर अग्रसर होता है, क्योंकि वे उस बड़ी पीड़ा के अंदर जाते हैं जो आयेगी—जो वैसली वाले काल में नहीं

आयी थी। 259. यह बिलकुल ठीक बात है, 11वाँ पद कहता है, "एक जीवन का मुकुट।" 11वाँ पद ऐसा ही कहता है।

....देख, मैं शीघ्र ही आने वाला हूँ.....(यह क्या है? अब यह शीघ्र ही बिलकुल ठीक इसके बाद ही है। समझे?).....देख, मैं.....जो

तेरे पास है, उसे थामे रह, कि कोई तेरा मुकुट न छीन ले।। 260. एक मुकुट क्या होता है? एक मुकुट क्या होता है? यह एक...यह एक....यह एक....यह एक.....एक मुकुट का अर्थ होता है, कि आपके पास एक अधिकार राज्य(अधिकार-क्षेत्र) है। यदि आप ने एक मुकुट पहना हुआ है, तो आप एक राजा है। समझे? जब हम अनन्त जीवन का मुकुट पहने हुए होते हैं, तो हम परमेश्वर के पुत्र होते हैं, और हमारा अधिकार-क्षेत्र पृथ्वी है। हमें परमेश्वर के लिए याजक और राजा बनाया गया है। क्या यह सही है? आप ऐसी ही स्थिति में हैं।

101 और नये यरूशलेम में , किस प्रकार से पृथ्वी के राजा वहाँ उस नगर में अपने अपने तेज का सामान लेकर आते हैं। ओह, यह शानदार बात है! आइये.....यदि आप उसे समझना चाहते हैं.....देखिए, वे मुकुट सितारों के जैसे जगमगाते हैं। और यदि आप इसे लिख लेना चाहते हैं, यह दानिय्येल 12:3 है जो इसके विषय में एक महान, एक बड़ा विवरण देता है। हो सकता है, कि शायद हमारे पास इसे देखने के लिए कुछ मिनटों का समय हो। आइये हम दानिय्येल निकालें, और देखें कि वह दानिय्येल के 12वें अध्याय में यहाँ पर क्या कहता है। बिलकुल ठीक है। आइये हम 12वें अध्याय को पहले पद से ही आरम्भ करें।

और उस समय मीकाएल...(समझे? क्या आप जानते हैं, कि वह कौन है?).....मीकाएल नाम बड़ा प्रधान, जो तेरे जाति-भाइयों का पक्ष करने को खड़ा रहता है, वह उठेगा। तब ऐसे संकट का समय होगा,....(यह क्या है? ठीक इसके बादः संकट के बाद)....जैसा किसी जाति के उत्पन्न होने के समय से लेकर अब तक कभी न हुआ होगा; परन्तु उस समय तेरे लोगों में से जितनों के नाम परमेश्वर की पुस्तक में लिखे हुए हैं, वे बच निकलेंगे।

और जो भूमि के नीचे सोए रहेंगे उनमें से बहुत से लोग जाग उठेंगे, कितने तो सदा के जीवन....(मुकुट)...के लिए, और कितने अपनी नामधाराई और सदा अत्यन्त घिनौने ठहरने के लिए। तब सिखानेवालों की चमक आकाशमंड़ल की सी होगी, और जो

बहुतों को धर्मी बनाते हैं, वे सर्वदा तारों की नाई प्रकाशमान रहेंगे। 262. ओह भाई, यही आपका मुकुट है, जो कि अनन्त जीवन का महिमामय मुकुट हैः अनन्त जीवन का एक मुकुट!

102 अब इससे पहले कि हम,.....आइये हम जल्दी से 12वाँ पद देख लें, ...और इसके बाद मैं सोचता हूँ, तत्पश्चात् हम उसका अध्ययन करने जा रहे

वह जो जय पाये मैं उसे अपने परमेश्वर के मन्दिर में एक खम्भा बनाऊँगा..... 264. अब, हम इसका बड़ी ही शीघ्रतापूर्वक अध्ययापन करने जा रहे हैं, क्योंकि मैंने पहले ही पाँच मिनट की देरी कर दी है। परन्तु आप सुबह के समय थोड़ा सा अधिक देर तक सो सकते हैं, क्या आप ऐसा नहीं कर सकते हैं? मामा, आप उन्हे सोते रहने दें। आप तो ठीक से जग जाना, लेकिन पिताओं के लिए जगाना थोड़ा.... सा कठिन होता है। परन्तु आप उन्हें थोड़ी देर तक सोता रहने दें। आप बड़े ही आराम से बाहर आ जाना और उनके लिए कॉफी बनाना, या वे जो चाहे करते हों; वे एक अच्छे विनोदी मूड़ में होंगे।

103 वह जो जय पाये में उसे अपने परमेश्वर के मन्दिर में एक खंभा बनाऊँगा...

ओह, आइये यहाँ पर हम बस इसे यहाँ बस एक मिनट के लिए शब्द दर शब्द लें। क्या आप मेरे साथ उतनी देर तक रूके रहेंगे, क्या आप मुझे थोड़ी देर और झेलेंगे? मैं जानता हूँ, कि गर्मी है, और आप जानते हैं, कि यहाँ ऊपर भी गर्मी ही है। परन्तु आइये हम देखें।

मैं उसे बनाऊँगा.....वह जो जय पाये, मैं उसे अपने परमेश्वर के

मन्दिर में एक खंभा बनाऊँगा..... 265. खंभा.....एक खंभा, या नेव! भवन में, या परमेश्वर के भवन में एक नेव बनाया जाना! यह "मेरे परमेश्वर का मन्दिर" या "मेरे परमेश्वर का भवन" है। यह एक खंभा, एक नेव है। ये वे हैं जिन्होंने उस वचन को ग्रहण किया जो उन्होंने आठवें पद में सुना था, और वे नेव की ओर ही फिर गये थे।

104 अब आइये हम इफिसियों 2:19 निकाल लें, हम इफिसुस की कलीसिया में पहुँच जायें। आप जानते हैं, कि आप को इफिसुस की ओर लौटना होता है, वह शुरूवात थी। क्या यह सही है? यह बिलकुल ठीक बात है, आइये हम इफिसुस की ओर वहाँ पर चलें जहाँ पर पौलुस था, जहाँ पर वह कलीसिया थी जिसकी उसने स्थापना की थी। और आइये हम देखें कि हम कहाँ पर हैं। यह बिलकुल ठीक है, इफिसुस की कलीसिया। आइये अब हम वापस चलें और देखें कि यह वहाँ पूर्व समय में यह क्या नेव थी, और यह देखें कि पौलुस ने वहाँ पर उस प्रथम कलीसियायी काल में नेव के विषय में क्या कहा था। अब, वह इफिसुस की कलीसिया के लोगों से बातें कर रहा है।

इसलिए अब तुम विदेशी और मुसाफिर नहीं रहे, परन्तु पवित्र लोगों के संगी और परमेश्वर के घराने के हो गए।

और प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं की नेव पर.....(ओह, लूथरनों, बैपटिस्टों.....अब, ज़रा रूकिएँ, मैंने घपला कर दिया है, क्या मैंने

नहीं किया?).....और प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं की नेव पर जिस के

कोने का पत्थर मसीह यीशु आप ही है, बनाए गए हो।

105 और हर एक व्यक्ति जो उस द्वार अर्थात् यीशु के अंदर आया, उसके लिए कहा गया है, "और वह जो जय पाये मैं उसे एक खम्भा बनाऊँगा।" दूसरे शब्दों में यह है, कि उसे नेव का भाग बनाया जायेगा। वह कहता है, "मैं उसे क्या दूंगा? मैं उस के अंदर प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं की उस शिक्षा को रदूंगा जो आरम्भ से ही थी, और मैं उसे प्रकाशन हूँगा।" भविष्यद्वक्ताओं ने उसके विषय में क्या कहा था? वह अद्वैत युक्ति करनेवाला, शान्ति का राजकुमार, पराक्रमी परमेश्वर, अनन्त पिता है। यही है वह जो प्रेरितों और नबियों ने बताया था। और वह जो शैतान की इन सब सभाओं पर जयवंत होता है, और स्वयं अपने को इन सब से मुक्त रखता है, और फाटक की ओर निगाहें लगाये रहता है, मैं उसे एक खंभा बनाऊँगा, और मैं उसे अपने परमेश्वर के भवन में अपने वचन में नेव के अंदर रचूँगा।" ओह, मेरे परमेश्वर! मैं उन्हें ठीक वहाँ पर नेव में उस खंभे में रखूगा जहाँ वे वचन के ठीक अंदर बने रहे थे। आमीन! भाई, मुझे यह बात अच्छी लगती है! यह एक अच्छी बात है! हो सकता है, कि मैं विचित्र सा आचरण करता होऊँ। परन्तु मैं.....मैं अच्छा सा अनुभव करता हूँ। यह बिलकुल ठीक बात है।

106 उसे बनाऊँगा.....वह जो जय पाये, मैं उसे अपने परमेश्वर के मन्दिर में एक खंभा बनाऊँगा; और वह फिर कभी बाहर न निकलेगा.....

वह क्या है? यदि वह एक खंभा है, तो वह फिर कभी बाहर न निकाला जाएगा। वह तो दुल्हन है। यह सच है। जैसाकि इफिसुस का काल था, जैसाकि पौलुस ने उन्हें प्रेरितों के काम में शिक्षा दी थी.....अब, ज़रा एक मिनट रूकिएँ! यदि आप एक खंभा बनने जा रहे हैं, ...इससे पहले कि हम दुल्हन पर पहुँचें, मेरे पास यहाँ पर वचन का एक

और लेख लिखा हुआ है जिसे मैं चाहता हूँ, कि आप समझ लें।

यदि आप एक खंभा बनने जा रहे हैं, तो आप वापस इफिसुस की ओर लौट रहे होंगे-आप उस काल की ओर वापस लौट रहे होंगे जिस काल में पौलुस था। और पौलुस इफिसुस का जो कि कलीसिया की शुरूवात थी—जो कि नेव थी, सुसमाचारदूत था; उसने उन्हें शिक्षा दी थी, "यदि उनका यीशु मसीह के नाम के अतिरिक्त किसी और रीति से बपतिस्मा हुआ है, तो उन्हें फिर से बपतिस्मा लेना होगा।" यह सच है, यह प्रेरितों के काम 9....या 5:19 है, वरन यह 19:5 है। गलतियों 1:8 में उसने कहा था, कि यदि कोई दूत भी इसको छोड़कर कुछ और सिखाये, तो वह स्रापित

ठहरे...

107 वे भी दुल्हन थे जो कि मन्दिर में थे। अब, आइये हम प्रकाशितवाक्य का सातवाँ अध्याय निकालकर देखें, कि क्या वे दुल्हन थे। यह प्रकाशितवाक्य के सातवें अध्याय में है।

अब, हो सकता है, कि मैं.....मैं .....हम यहाँ पर इस्राएल के शेष बचे हओं के विषय में, एक लाख चवालीस हजार के विषय में तथा इसी प्रकार की और दूसरी बातों के विषय में बोल रहे हैं। मगर आइये हम इसे तनिक थोड़ा सा छोड़कर आगे निकलें और यहाँ पर 12वें पद के आसपास आ जायें। ये बताता है, कि यह वहाँ पर एक पिन्तेकोस्तल सभा थी। ये वे लोग थे जो.....ओह! समझे? ठीक है, हम यहाँ पर नौवें पद से ही आरम्भ करें, क्योंकि पहला वाला तो इस्राएल से सम्बन्धित है, और वहाँ पर उन में से ये एक लाख चवालीस हजार थे जिन पर। मोहर की गयी थी।

इसका हम कल अध्ययन करने जा रहे हैं। और देखो, इसके बाद एक ऐसी बड़ी भीड़, जिसे कोई गिन नहीं सकता.....

108 अब देखिए, आप स्मरण रखिएगा, कि 4 से 8 पद तक में तो इस्राएली हैं, जो कि वे खोजे थे जो मन्दिर की चौकसी कर रहे थे। समझे? यदि प्रभु ने चाहा, तो हम इसका कल सुबह अध्यापन करने जा रहे हैं।

अब, आप देखते हैं, कि वे बारह गोत्र थे, यहूदा का गोत्र था, और उसके गोत्र के बारह हजार पर मोहर हुई; रूबेन का गोत्र था, उसके गोत्र के बारह हजार पर मोहर हुई, गाद के गोत्र के बारह हजार पर मोहर हुई, और लेवी और जबूलून और बिन्यामिन के गोत्र के बारह बारह हजार पर मोहर हुई। और इस्राएल के कितने गोत्र हैं? (सभा उत्तर देती है, "बारहसम्पा.) ठीक है, बारह गुना बारह क्या होता है? एक लाख चवालीस हजार। और वे सब इस्राएल की सन्तान थे, यूहन्ना उन्हें जानता था; वह उनमें से प्रत्येक को जानता था, वह एक यहूदी था।

109 और देखो,

इसके बाद एक ऐसी बड़ी भीड़... यहाँ पर अन्यजाति आती हैं.... हर एक जाति,.... और कुल,.....और लोग,...और भाषा में से एक ऐसी बड़ी भीड़ जिसे कोई गिन नहीं सकता था....श्वेत वस्त्र पहने, और अपने हाथों में खजूर की डालियाँ लिये हुए सिंहासन के साम्हने और मेमने.....के साम्हने खड़ी है।

ये वे बेचारे जीव हैं जिन्होंने उन पूर्वकालों में जानें दीं, और शेरों ने उन्हें खा डाला, और उन्होंने पवित्र आत्मा वाले इस सुसमाचार के लिए जो खून से रक्तरंजित है अन्य सभी कुछ सहा। हज़ारों हज़ारों गुना छोटे छोटे बच्चों के सिरों को सड़क पर पटक कर फाड़ दिया गया था तथा इसी प्रकार का अन्य सभी कुछ किया गया था; वहाँ पर वे श्वेत वस्त्र पहने हुए और अपने हाथ में जैतून की डालियाँ लिये हुए होते हैं। समझे? ओह, मेरे परमेश्वर!

और वह बड़े शब्द से पुकार कर कहती हैं, कि उद्धार के लिए हमारे परमेश्वर का जो सिंहासन पर बैठा है, और मेमने का जय-जयकार हो। उद्धार के लिए हमारे परमेश्वर का जो सिंहासन पर बैठा है, और मेमने का .....

और सारे स्वर्गदूत, जो सिंहासन और प्राचीनों और चारों प्राणियों के चारों और खड़े हैं, फिर वे सिंहासन के साम्हने मुंह के बल गिर पड़े;

और परमेश्वर को दंड़वत करके .....

सुनिएगा, क्या आप नहीं सोचते हैं, कि यह पिन्तेकुस्त वाली एक सभा है:

....कहा—कहा, आमीन! हमारे परमेश्वर की स्तुति,.....और महिमा,...और ज्ञान....और धन्यवाद....और आदर....और सामर्थ.....और शक्ति युगानुयुग बनी रहे। आमीन!

वाह! ऐसा लगता है, कि मानो उनकी पंड़ाल वाली सभा हो रही हो, क्या ऐसा नहीं लगता?

110 इस पर प्राचीनों में से एक ने मुझ से कहा, मुझ से पूछा, ...या मुझ से कहा, ये श्वेत वस्त्र पहने हुए कौन हैं? और कहाँ से आये हैं?.....अब, तू तो एक यहूदी है; तू तो सारे बारह गोत्रों को जानता है।

अब, ये कौन हैं? ये कहाँ से आये हैं? ये श्वेत वस्त्र पहने हुए हैं, ये कहाँ से आये हैं? ये बिन्यामीन के गोत्र के तथा और दूसरे वालों के नहीं हैं, ये कौन हैं जो यहाँ पर हैं? और यूहन्ना...

मैं ने उस से कहा, स्वामी, तू ही जानता है: .....मैं यह समझ गया हूँ। मैं-मैं.... और उसने मुझ से कहा, ये वे हैं, जो उस बड़े क्लेश में से निकल कर आए हैं; और इन्होंने अपने अपने वस्त्र मेमने के लोहू में धो कर श्वेत किये हैं।

इसी कारण वे परमेश्वर के सिंहासन के साम्हने हैं.....(वे यहाँ पर भवन के अंदर हैं).....और उसके मन्दिर में दिन रात उस की सेवा करते हैं; और जो सिंहासन पर बैठा है, वह उन के ऊपर अपना तम्बू तानेगा।

यहाँ ऐसा दिखाई पड़ता है, कि मानो वे कुछ भूखे गये हो, क्या ऐसा नहीं लगता है? ....और वे फिर भूखे.....(महिमा होवे!).....और प्यासे न होंगे:

और न उनपर धूप, न कोई तपन पड़ेगी। क्योंकि मेमना जो सिंहासन के बीच में है, उनकी रखवाली करेगा;

और उन्हें जीवन रूपी जल के सोतों के पास ले जाया करेगा, और परमेश्वर उनकी आँखें से सब आँसू पोंछ डालेगा।...(यही है वह;

यहीं पर ही दुल्हन है। ओह, यह कैसा सुन्दर है! दुल्हन.....)

111 आइये हम देखें कि वह अब यहाँ पर क्या कहता है, ताकि अब हम इस बात में सुनिचित हो जायें कि हम इससे चूकेंगे नहीं। 12 वाँ पद : जो जय पाये, मैं उसे अपने परमेश्वर के मन्दिर में एक खंभा बनाऊँगा, और वह फिर कभी बाहर न निकलेगा.....(दुल्हन वहाँ पर दुल्हे के साथ खड़ी हुई है। ओह!).... ओह, ओह, क्या हमारे पास उसे लेने के लिए समय होगा। मेरे पास यह वहाँ पुस्तक के लिए है।

प्रकाशितवाक्य में यह कहा गया है, "पृथ्वी के सारे राजा अपने अपने विभव और तेज का सामान उसके अन्दर लेकर आते हैं। यह ठीक उसी प्रकार से है जैसे यह प्रतीक में लेवी के लिए थाः वे शेष सारे उन्हें अपना अपना दसवांश भेंट चढ़ाते थे। समझे आप? वे एक नये चाँद से लेकर दूसरे नये चाँद तक, एक सब्त से दूसरे सब्त तक आराधना-उपासना करने के लिए जाया करते थे। वह क्या ही दिन होगा! यह बिलकुल ठीक बात है। "और मैं.....आइये हम देखें....."और वह फिर कभी बाहर न निकलेगा।" यह बिलकुल ठीक बात है।

112 ....और मैं उसे अपने परमेश्वर के मन्दिर में एक खंभा बनाऊँगा....

और मैं अपने परमेश्वर का नाम उस पर लिखूगा.....

अब देखिए, परमेश्वर का नाम क्या है? यीशु! यदि आप इस पर दृष्टि डालना चाहते हैं, ...(हमें थोड़ी सी देर हो रही है).....यह यीशु ही है। इफिसियों 3:15 में कहा गया है, कि स्वर्ग और पृथ्वी पर सारे घरानों का नाम यीशु के नाम पर ही रखा गया है। क्या आप देखते हैं? यह बिलकुल ठीक बात है। बिलकुल ठीक बात है। अब, यह बिलकुल ठीक बात है।

...और मैं अपने परमेश्वर का नाम, और अपने परमेश्वर के नगर , अर्थात् नये यरूशलेम का नाम, जो मेरे परमेश्वर के पास से स्वर्ग पर से उतरनेवाला है और अपना नाम उस पर लिखूगा...(ओह,यदि आप इसे पहले ही पकड़ लेते हैं, तो आप देख सकते हैं, कि ये सारे के सारे एक ही नाम हैं। देखा? समझे?)...मैं अपने परमेश्वर के नगर का नाम उस

"पर लिखेंगा..." वह इससे आगे बढ़ता है, और कहता है, "वह नगर, जो नया यरूशलेम है....(समझे?)....नया यरूशलेम। मैं नया यरूशलेम उस पररबँगा।"

अब देखिए, दुल्हन या कलीसिया ही नया यरूशलेम है। कितने यह जानते हैं? खुद कलीसिया ही नया यरूशलेम है? क्या आप इसका विश्वास करते हैं? ।

113 आइये हम बस इसे प्रमाणित करें। प्रकाशितवाक्य 21, मैं सोचता हूँ, यही है वह जो हम चाहते हैं। यह बिलकुल ठीक है, आइये हम यहाँ पीछे देखें जिससे हम इसे दिखा सकें। बाइबिल कहती है, "सारी बातों को प्रमाणित कर।" समझे।

अब, प्रकाशितवाक्य 21 देखिएँ। ओह, इसे बिलकुल ठीक ठीक सुनिएँ .....यदि आप यह देखना चाहते हैं, कि उसका नया नगर-(परमेश्वर का नाम)...क्या है तो आप इस पर कान लगायें।

फिर मैंने नये आकाश और नयी पृथ्वी को देखा, क्योंकि पहिला आकाश और पहिली पृथ्वी जाती रही थी, और समुद्र भी न रहा।

और फिर मैंने—यूहन्ना ने पवित्र नगर यरूशलेम को स्वर्ग पर से उतरते देखा, और वह उस दुल्हिन के समान थी, जो अपने पति के लिए सिंगार किए हो।।

नयी-नयी कलीसिया अन्यजाति वाली कलीसिया है, जो कि दुल्हन है। दुल्हन अन्यजाति की है, और अन्यजाति ने उस का नाम पाया है। उसने अपने नाम के निमित्त अन्यजातियों में से एक लोग को लिया है। क्या आप इसका विश्वास करते हैं? यदि आप विश्वास नहीं करते हैं, तो आप प्रेरितों के काम 15:14 निकालें

और ढूंढें। यदि आप इसे एक सेंकड़ के लिए पलट कर निकालना चाहते हैं, यह प्रेरितों के काम 15:14 है, और हम....इसके बाद आप ....प्रेरितों के काम का 15 वाँ अध्याय और चौदहवाँ पद निकालें, मैं सोचता हूँ, हम इसे ज्ञात कर लेंगे।

इसके बाद हम बस समापन करने को तैयार हैं। प्रेरितों के काम का 15 वाँ अध्याय और 14वाँ पद...

जब वे चुप हुए, तो याकूब कहने लगा, कि हे भाइयों, मेरी सुनोः

शिमौन ने बताया, कि परमेश्वर ने पहिले पहिल अन्यजातियों पर कैसी कृपादृष्टि की, कि उन में से अपने नाम के लिए एक लोग बना ले।

यह बिलकुल ठीक बात है, वह वहाँ पर है। ओह!

114 अब, मैं सोचता हूँ, कि हम इस बात के बहुत अधिक निकट हैं, कि यह उस के अन्तिम ही हों, और अब मैं यह कहते हैं, समाप्त करने जा रहा हूँ....आइये हम इसे देखें। ....और मैं उस पर अपने परमेश्वर का नाम, अपने परमेश्वर के नगर का नाम लिखूगा....(यह सारे के सारे एक ही हैं, यह यीशु, यीशु, यीशु ही है, दुल्हन का विवाह यीशु से होता है, जिससे वह श्रीमती यीशु बन जाती है, तथा ऐसी ही और दूसरी बाते हैं। समझे?)

आज रात्रि इस भवन में बड़ी अच्छी महिलाएं हैं, बड़ी अच्छी महिलाएं हैं, लेकिन उनमें से एक मेरी है, उस ने मेरा नाम पाया हुआ है। मैं आशा करता हूँ, कि आप उसे जान गये हैं। उस ने मेरा नाम धारण किया हुआ है; वैसे ही उसकी दुल्हन होगी। यह बिलकुल ठीक बात है।

.

115 और मैं अपने परमेश्वर का नाम, और अपने परमेश्वर के नगर, अर्थात् नये यरूशलेम का नाम, जो मेरे परमेश्वर के पास से....स्वर्ग पर से उतरनेवाला है, और अपना नया नाम उस पर लिखूगा।

मेरे लिए बेहतर है, कि मैं इसे छोड़ दें, क्या मैंने इसे छोड़ नहीं दिया है? बिलकुल ठीक है, आप इस उस पर ध्यान दीजिए, वहाँ पर यह "वह" एक वचन (singular) है। अब, क्या आप बस एक मिनट के लिए प्रकाशितवाक्य 2:17 में वापस जायेंगे, हम बस इसे एक क्षण में फिर से देख लेंगे।

जिस के कान हों, वह सुन ले, कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है; जो जय पाये, उस को मैं गुप्त मन्ना में से दूंगा, और उसे एक श्वेत पत्थर भी देंगा; और उस पत्थर पर एक नाम लिखा होगा, जिसे उसके पानेवाले के सिवाये और कोई न जानेगा।

116 क्या आप उस से प्रेम करते हैं? क्या वह अद्‌भुत नहीं है?

मैं उस से प्रेम करता हूँ, मैं उस से प्रेम करता हूँ,

क्योंकि उसने मुझ से पहले प्रेम किया

और खरीद लिया मेरा उद्धार ।

कलवरी क्रूस पर!

आप जानते हैं, कि मुझे सभा के बाद तब आत्मा में गीत गाना अच्छा लगता है जहाँ आप होते हैं.....वह कटाई तथा सब कुछ कर रहा होता है। क्या आप को अच्छा नहीं लगता है? ओह, तब मुझे आत्मा में आ जाना कितना अधिक भाता है! वचन(समझे?) वचन तो अब बोया जा चुका होता है, अब एक मात्र चीज जिसकी आवश्यकता होती है, वह नमी होती है....(समझे?).....कुछ जयजयकार करने की आवश्यकता होती है, इसके बाद यह बढ़ना आरम्भ कर देता है। समझे आप? ओह, क्या आप उस से प्रेम नहीं करते हैं? आइये हम अपने हाथों को ऊपर उठायें और उसे गायें।

मैं उस से प्रेम करता हूँ, मैं उस से प्रेम करता हूँ।

क्योंकि उस ने मुझ से पहले प्रेम किया

और खरीद लिया मेरा उद्धार

कलवरी क्रूस पर

117 ओह, आइये हम बस अपने सिरों को झुकायें और कहें, "पिता, हम आप से प्रेम करते हैं। हम आप से प्रेम करते हैं। ओह, हम आप से कितना प्रेम करते हैं। प्रभु, हम बस आप का बहुत अधिक धन्यवाद करते हैं। ओह, हमारे निर्धन मानवीय हृदय इस बात को अभिव्यक्त नहीं कर सकते हैं, कि हम अपने भीतर किस प्रकार का अनुभव करते हैं, क्योंकि किस प्रकार से आप ने हमें अपने ही निज लोहू से शुद्ध किया है।

प्रभु, हम तो परदेशी थे। हमने —हमने तो सांसारिक वस्तुओं से प्रेम किया था, और हम तो संसार के झमेलों में ही पूरी तरह से उलझे हुए थे, और आप अपने अनुग्रह में होकर नीचे उतर कर आये और आप का हाथ पाप की उस कीचड़ पर पहुँचा जहाँ पर हम थे, और हमें बाहर निकाला, हमें चुना, हमें धोया, हमें शुद्ध किया, हमारे अंदर एक नया आत्मा भरा, और हमारे अंदर स्वर्ग की वस्तुओं के लिए प्रेम भरा। प्रभु, हम आप से कैसा प्रेम करते हैं।

इस युग में जिसमें ऐसा धोखा है, कि प्रभु, इस संसार में हमारे लिए कुछ भी बाकी नहीं रहा है। संसार के लिए कुछ भी बाकी नहीं रहा है; यह तो—यह तो अंत समय है। हम बाइबिल से देखते हैं, कि हर एक काल समाप्त हो चुका है। हम अंत समय में हैं, जो कि बड़ी तेजी से समाप्त होता चला जा रहा है इस में बहुत अधिक देरी नहीं होगी, कि यीशु आ रहा होगा। हे परमेश्वर, हमारे हृदयों को प्रज्वलित कर डालिए,आप हमें खामोश खड़ा न रहने दीजिए।

मैं सोचता हूँ, कि यदि महान संत पौलुस आज रात्रि यहाँ पर होता, और इन बातों को वैसे ही देखता जैसा कि हम देखते हैं, तो वह क्या कर रहा होता? किस प्रकार से उस ने.....उस मनुष्य को—उन्होंने तो उसे दिन का उजियाला निकलने से पहले ही बंदीगृह में डाल दिया होता। वह यहाँ पर लोगों को बता रहा होता, कि वे प्रभु के आगमन के लिए तैयार हो जाये।

118 प्रभु, इस घड़ी में बहुतेरे रोगी हैं, क्योंकि यहाँ पर रूमाल तथा निवेदन रखे हुए हैं। पिता, मैं प्रार्थना करता हूँ, कि आप उन में से प्रत्येक को चंगा करेंगे। हम जानते हैं, कि यह आपकी सेवकाई का भाग है, कि आप उन चिन्हों के द्वारा जो विश्वासियों के होते हैं, सत्य को अचूक प्रमाणित करते हैं।

लोग पौलुस की देह से रूमाल तथा अंगरखें छुआ कर बीमारों के पास भेजते थे, और अशुद्ध आत्माएँ उनमें से बाहर निकल जाती थीं, और वे चंगे हो जाते थे, क्योंकि लोगों ने जीवते परमेश्वर पर विश्वास किया था। पिता, आज रात्रि भी ऐसा होने दीजिए; परमेश्वर, मैं इन्हें वैसे ही आपको यीशु मसीह के द्वारा सौपता हूँ।

और अब, प्रभु, मैं प्रार्थना करता हूँ, कि आप हमारे प्राणों को अपने हाथों में ले लेंगे, हमें धोयें,हम पर इस्त्री करें, क्योंकि यह कहा गया है, कि आपका आगमन उस कलीसिया के लिए हो रहा है, जो बेदाग और बेझुर्रा है। होने पाये, पवित्र आत्मा की गर्म तप्त इस्त्री हम में से सारी झुर्रियाँ दबा कर बाहर निकाल दे, और हम अपने आप को मनुष्य के पुत्र के आगमन के लिए सौप रहे हैं।

अब, पिता, हम प्रार्थना करते हैं, कि आप की आशीषे हमारे ऊपर आकर ठहरें। पिता, हमारे संग आराधना कीजिए! हम आपकी आराधना करते हैं। हम आज रात्रि खड़े होते हैं और अपने अपने हृदयों को आप को सौपते हैं। हम..

MESSAGE online hub
www.messagehub.info
विलियम मेरियन ब्रन्हम के द्वारा प्रचारे गए सन्देश
"...शब्द देने के दिनों में..." प्रकाशित. १०:७